॥ श्रीः ॥

शिवराजभूषणकाव्य.

मराठी साम्राज्यके संस्थापक

श्रीशिवाजी महाराज छत्रपति यशःसंवलित

उनीके आश्रित

कविराज भूषण विरचित

रा रा काशीनाथ पांडुरंग परब द्वारा संपादित

विद्वद्वर्य श्रीयुत रेही

श्रीगोपाल भट्टात्मज त्रिविक्रम लालाजी

परिशोधित

और उनकी कुछ कवितासें परिवर्धित

व्रजभाषानिबद्ध अलंकारग्रन्थ

उसे,

यदुवंशीयपुस्तकालयाधीश

गोवर्धनदास लक्ष्मीदास

प्राचीनग्रंथप्रकाशकने

बडे परिश्रमसे दुरुस्तकर कविके चरित्रसहित

मुंबई.-निर्णयसागर छापखानेमें छपवाय प्रसिद्ध किया

आवृत्ति २ री

किंमत १ रुपया

भारतमार्तंड पं० श्रीगट्टूलालजी घनश्यामजी





जन्म संवत् १९०१
पौष कृष्ण १२
शहर कोटा

निर्याण संवत् १९५४
मार्गशीर्ष शुक्ल ९
भावनगर

भू. निवास ५२ वर्ष १० महीने १२ रोज

॥ श्रीः ॥

अर्पणपत्रिका.



कविकुलचक्रचूडामणि पचनदी पंडितवर्य

श्रीगट्टूलालजी घनश्यामजी

आप

भारतमार्तंड, श्रीमद्वेदांतभट्टाचार्य, आशुकवि, शता-
वधानी, घटिकाशत, महर्षि, सम्प्रदायदुर्ग, श्रौतस्मार्त-
आर्यधर्मोद्धरणधुरीण, सार्वभौमप्रसिद्धपंडितरत्न,
विनयवारिधि, इत्यादि अनेक उपपदालंकृत अशा-
श्वत वपूकों त्याग श्रीकृष्णपरमात्माके चरणकम-
लमें प्राप्त होनेसें, हतभाग्य भारतवर्ष जो विर-
हशोकसमुद्रमें निमग्न हुआ है, उसके स्मरणार्थ
महाकविराजभूषणविरचित यह काव्यग्रंथ
काव्यशास्त्रमें आपकी अपूर्व तन्मयता अप्र-
तिममार्मिकता और लोकोत्तर प्रतिभा-
शक्ति, चमत्कृतिता, प्रभृतिका अनुभव
लै यह लघुकाव्यग्रंथरूपी पवित्र-
पुष्पांजलि आपकी सेवामें
अर्पण करता हूं.

आपका विरही अनुचर,

गोवर्धनदास लक्ष्मीदास

प्राचीनग्रंथप्रकाशक



महाराजा शिवाजीराव छत्रपति



जन्म वैशाख शुदि २ शक १५४९
स्वर्गस्थ चैत्र शुदि १५ शक १६०२
इसवी सन १६२७ से १६८० तक
भू निवास ५२ वर्ष ११ महीने १३ रोज

बादशहा औरंगजेब



जन्म तारीख १० अक्टोबर सन १६१९ इस्वी
वफात तारीख २१ फेब्रुआरी सन १७०७ इसवी
फसली सन १०२८ से १११८ तक
हयात कुल ९० वर्ष १७ रोज

कविराज भूषणका वंशवृक्ष

(२) कवि भूषणजी
प्रथम पन्ना नरेश राजा
छत्रसाल और पीछे न
शिवराज छत्रपती महाराजा
के आश्रित थे

(३) कवि मतिरामजी
कुमाऊं नरेश राजा उदोतचंद
भाउ सिंह हाडा, कारण बुंदीका रा
जा छत्रसाल श्री नागर राजा फते
सिंह बुंदेला और पीछे राजा शं
भुनाथ सुलंकी उर्फ सम्भाजी
(शिवाजी के पुत्र) इनोंके
आश्रित थे

(१) कवि
चिन्तामणि उर्फ मणि लाल
नागपुरके राजा मकरंदशाह भों
सलेके आश्रित थे

(४) कवि
जटाशंकर उर्फ नीलकंठजी
कोइके आश्रित न थे मात्र फुट-
कर कविता करते थे

कश्यप गोत्री
रत्नाकरजी
कनोजिया ब्राम्हण



श्रीशिवाजी महाराज छत्रपतिका वंशवृक्ष

दूसराशाहू

प्रतापसिंह
एक पुत्रशाहू

रामराजा
(दत्तक)

शाहूराजा

संभाजी

(२)
राजाराम

छत्रपति
शिवाजी (१)
राज्यसंपादक

(१)
शिवाजी यह कोल्हापुर
एक राज्यका मूल
पुरुष

(२)
राजाराम

शहाजी

व्यंकोजी
मालोजी
मूल पुरुष



दोहा—धन्य सभा शिवराजकी, रामदास गुरुराय॥ ठाढे यश बरनन करत, सो भूषण कविराय ॥१॥



॥ श्रीः ॥

प्रस्तावना सहित—

कविराज भूषणकी संक्षिप्त जीवनी.



ग्रन्थोपोद्घातके १९ वे और २० वे पद्योंमे ज्ञात होताहै कि वीरका-व्यप्रसवशक्तिसम्पन्न भूषण कविने एक कश्यपगोत्री कन्नौजिया ब्राह्मणका वंश भूषित कियाथा नाम आपके पिताका रत्नाकर था अतुलकीर्तिकलाधर पुण्यसलिला जाह्नवीकी सहेली यमुनाके सुखवासतटपर त्रिविक्रमपुर नामक एक जनपदवास था उसी सौभाग्यशाली ग्रामके हमारे वीरभूषण भूषण थे

कानपुरखण्डमें टिकमापुर जो एक ग्राम है इतिहासोंसे जानाजाताहै कि यही उस त्रिविक्रमपुरका अपभ्रंश और कालव्याघात व्यतिक्रमसें परिवर्तित होकर इस रूपमें आगयाहै जो हो भूषणकवि अपने भाई चिन्तामणि, मतिराम और जटाशंकर उपनाम नीलकण्ठ भाइयोंके साथ उसी त्रिविक्रमपुरमें जन्मे थे अपूर्व कविताशक्तिसम्पन्न पिता रत्नाकरने देवीकी आराधना करके यही चार पुत्ररत्न पाये थे

चारों भाईयोंमें चिन्तामणि ज्येष्ठ थे वह नागपुरके सूर्यवंशी राजाओं भोसला, मकरन्दशाहके दरबारमें बहुत वर्षोंतक विराजमानथे उन्होंने "छन्दविचार, काव्यविवेक, कविकुलकल्पतरु, और रामायण" यह चार ग्रन्थ निर्माण किये हैं

जिस शाहजहाँ बादशाहकी महिमा सिंहासनभूमि इन्द्रप्रस्थमें प्रदीपमान थी, जिसने इकतीस वर्षतक गृहद्भूमि भारतका शासन कियाथा उस मुगलवंशभूषणने भूषणके ज्येष्ठ भ्राता चिन्तामणिका सन् १६२७ से १६५८ ईसाई तक बहुत कुछ सत्कार किया इन्होंने अपना नाम बहुधा पद्योंमें मणिलाल करकेभी लिखा है

हमको कवि भूषणकी जीवनी लिखतेसमय समालोचकोंका अपने ऊपर भूषणके भ्राताओंकी जीवनी विषयक दोषारोपणका भय रहतेभी भूषणके भ्रातृगणोंका उल्लेख कियेबिना नहीं रहाजाता, परन्तु विस्तारभयसे ज्येष्ठ भ्राता चिन्तामणिका परिचय करानेकेबाद हम उनके अन्य छोटे भाइयों-की दोचार बातें कहकर भूषणही कविकी जीवनी आरम्भ करेंगे

भूषण कविके छोटे भाई मतिरामभी काव्यकर्ममें बडे चतुर और अ-लङ्कारमर्मज्ञ थे इनका कुमाऊँके राजा उदोतचन्द, भावसिंह, हाडा कोटा, पन्नाके राना छत्रशाल और सोलङ्की वंशके राजा शम्भू उर्फ स-म्भाजीके यहाँ जो शिवाजी महाराजके वीरकुमार (सन १६८० से १६८९) महाराष्ट्र राजगद्दीके शासक थे बहुत कुछ सम्मान था इनके ललितललाम, छन्दसार और रसराज ये तीन ग्रंथ प्रसिद्ध हैं सबसे छोटे भाई जटाशंकर उपनाम नीलकण्ठजीकी बहुतसी स्फुट कविता देखी और सुनीजातीहै, परन्तु कोई मान्यग्रन्थ अबीतक देखनेमें नहीं आया

भूषण कविराजका जन्म शिवसिंहसरोजमें सम्बत १७३८ विक्रमाब्द लिखा है, परन्तु कुछ प्रामाणिक नहीं बोध होता क्योंकि इसी शिवराजभूषण ग्रन्थके निर्माणकी तिथि कविराजने ग्रन्थान्तमें १७३० विक्रमाब्दकी लि-खीहै इसीप्रकार उनके मरणकालकी तिथिभी नहीं मिलती

पूर्वसे हमारे देशमें जीवनचरित्र लिखनेकी कोई उचित प्रथा नहीं थी उसी कारणसे आज हम भूषणकी जन्ममरण तिथिके लियेभी तर-सतेहैं, यदि यही दशा रही तो आधुनिक साहित्यके क्षमताशाली और सुयोग्य लेखकभी हम जानतेहैं कि बीस तीस वर्ष बाद इसी दशामें आ-जायगे और इसप्रकार भाषारसिकोंकी न्यूनताके समय उनकी एकाद रचनाओंके छिपारहने वा जलादेनेपर उनके नामतकभी लुप्त होजायँगे

इधर उधरकी कथा कहानियोंके सुनने देखने और एकाद बचे खुचे लेखोंके पढनेसे जानाजाताहै कि भूषण कविको पहले कविताका कुछभी बोध न था अपने ज्येष्ठ भ्राता चिन्तामणि दिल्लीपति शाह औरङ्गजेबके दरबारमें सुशोभित और राजकविपदसे परिशोभित देखकरभी आप अश्रद्धालुकी

भाँति घरमें पडे रहतेथे उस समय लोगोमें यह चरचा फैली कि चिन्तामणि ऐसे विलक्षण विदुषोबुद्धिके कवि हैं दिल्लीपतिके दरबारमें प्रतिष्ठा पातेहैं चारोंओर अपनी काव्यकौशल्ताका परिचय देते फिरते हैं और उनके भाई भूषण बोदेकी तरह ठूस बने घरमें पडे रहतेहैं

होते २ यह चरचा बडोंतक पहुँची किसीने भूषणके कानतकभी पहुँचायी उनसे किसने कहा? उनके घरहीकी एक भ्रातृपत्नीने कहा, कैसे कहा? सीधे तरहसें नहीं बडे ऐंठ और तानेसे

असलमें एकही टेढी और अभद्र बात जैसें तीक्ष्ण लगतीहै, तेजस्व ताजी घोडेको चाबुकसवारका एकही हण्टर जैसा महा हानिकारी और ग्लानिदायक होताहै सतीको लाञ्छनप्रकाश और लम्पटकी जघन्य कामना और छेड छाड जैसें सर्वांगमें बेधजातीहै वचनबद्ध वीरभूषण भूषणकोभी यह चरचा और ऐंठनका ताना विषबाणसा लगा आप घरसें निकल खडेहुए और गुणोंका अनुसन्धान करनेलगे

"शिवछत्रपतिचरित्र" पृष्ठ८८में लिखाहै कि दिल्लीके शाहँ शाह औरंगजेबकेयहाँ जिस चिन्तामणिकविका बडा आदर था उसके भाई भूषण जब अपनी भ्रातृपत्नीके वचनबाणसे विद्ध दु:खी और घायल होकर निकले तब कुमायूँक राजाकेयहाँ गये, और अपनी कवितासे उनको बहुतकुछ प्रसन्न किया राजा कुमायूँने प्रसन्न हो एकलाख मुद्रा देकर कहा "ऐसा दाता पृथ्वीमें तुमको नहीं दृष्टिगत होगा" उसकी गर्वोक्ति सुन भूषणने उल्टा होकर कहा "ऐसे दाता तो भूमण्डलमें अनेक हैं" किन्तु आपने ऐसा याचक नहीं देखा या सुना होगा जो अहङ्कारसे दियेहुए एकलक्षको तृणकेसमान समझना और उसे स्पर्श करनेमेंभी घृणा करता है

किसी २ ग्रन्थकारका मत है कि यह भूषणका कुमायूँ राजसमागम शिवाजी महाराजके प्रख्यात समागमके पीछे हुआ था और राजाने यह समझकर यह गर्वोक्ति कहीथी कि शिवराज महाराजके यहाँ भूषणके मान प्रतिष्ठाका कोलाहल मिथ्या था कि भूषण धनलोभवशही यहाँ आये हैं तब भूषणने अपने आगमनका कारण शिवाजी महाराजके यश प्रता-

रका निरीक्षण बनाकर उसे सावधान किया और एकपक्ष परित्याग कर शिवाजीके यश विस्तारसे प्रसन्न होकर वहाँसे चले आये

पन्नाके महाराजा छत्रसालसिंहने भूषण कविका बहुत सन्मान किया और छ मास तक अपने दरबारसे जाने नहीं दिया

वार्तविनोद नामक ग्रन्थमें "शाह औरंगजेब और कविभूषण" शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआथा उसमें ज्ञात हुआ कि मुगलशाहशाहोंके संगमर्मरसे सुन्दर और शिखरपर अकबरशाह कर्तृक आरोपित सुवर्ण कलशको कई वर्षतक स्थायी रखनेवाला यद्दर औरंगजेबको कविताका बहुत अनुराग था और पूर्व परिपाटीके अनुसार उसके दरबारमेंभी कविलोगोंका आदर सन्मान होता था यद्यपि यह अनुराग और आदर सन्मान उसके मानसिक जात स्वत गुण और अकृत्रिम नहीं थे न अकबर आदिकी तरह उसका इन कवियोंकी शक्तिपर पूर्ण विश्वासहीथा, तथापि कुलरीति और प्राचीन प्रथानुसार प्रतिष्ठाहानिके भयसे इतना बाध्यसा होगयाथा कि इन कार्योंकेलिये उसका अनुराग स्वाभाविकसाही बोध होताथा कोई हिन्दू या यवन जब उसकी प्रतिष्ठामें कुछ पद्य पढता तब वह मोंछोंपर हँसता और जनस्वभाव सुलभ सामान्य नियमानुसार कुछ उन्हें अर्धदानभी करताथा और अपनेको बडा सुविचारी, श्रेष्ठ, बुद्धिमान और विद्वान समझताथा वह किसीका कुछ विश्वास न करके कपटसेंही अपनी राय अन्यायपनेका परिचालित रखताथा अत्याचारको अपना धर्म समझताथा साराश यह कि वह विचारवान, दुरुपयोगी असहन्य बादशाह था उपकारकोतो स्वप्नमेंभी उसें छींटें न पडी होंगी उसके पूर्वजोंकी सद्भावनाका स्मरण करके जो कोई उपकार करताथा उसका वह शक्तिभर अपकार करताथा किसीकी विशेष प्रतिष्ठा और कीर्तिसें तो वह जलकर भस्म हो जाताथा उसकी औंधी खोपडीमें यह दुर्विचार निरंतर घुसा रहाथा कि जो कोई सुयशी और कीर्तिमान यहाँ लोकप्रिय होगा वह हमारा राज्य छीन लेनेमेंभी समर्थ होजायगा तात्पर्य्य यह कि छोटे मनका वह एक दुर्विचारी बडा बुद्धिमान बादशाह था

हमारा यह कहना अत्युक्ति नहीं कि आत्मस्तुतिमें अप्रसन्न होनेवाले मनुष्य संसारमें नहीं दृष्टिगत होते तौभी सौजन्यशील और विवेकी जन अपनी बडाई सुनना पसन्द नहीं करते सुकीर्ति वही है जो सुपात्र प्रसिद्ध विद्वान और सुविचारी सत्यवादीके द्वारा पक्षपातरहित हो क्यों कि छोटासा अच्छा कार्य्यभी छोटी और साधारण बुद्धिवालोंमें महत् प्रतिष्ठाभाजन होजाताहै और बहुतसे मतलबी अप्रसिद्ध कवि [illegible] अपना अर्थ गाँठनेकेलिये विशेष स्तुति कर बैठतेहैं इसको मिथ्या [illegible] (खुशामद) कहतेहैं यह बडाही असाध्य और अनिष्टकर [illegible] कीर्ति तो युगयुगान्तरतक अमर करनेवाली एक महान [illegible] और खुशामदको निकटवर्ती समझनेवाले बहुतसे [illegible] थेंगे कि इनमें कितना अंतर है कवियोंकी [illegible] अहमन्य औरंगजेब अपनेको सर्वश्रेष्ठ समझकर [illegible] था कविलोग अपनी युक्तिसे उसकी [illegible] बके स्थानमें नौरंगजेब, नौरंगशाह आदि [illegible] बूनकर उत्तानपाद बनाजाता था

एकसमय जब वह मयूरासनपर [illegible] वियोंने अपनी २ युक्तिसे उसकी [illegible] हुआ, परन्तु मण्डलीकी ओर [illegible]

"हम बहुत दिनोंसे देखते हैं कि [illegible] सनागोईही करते आतेहो यह [illegible] ऐसेही नहीं है । ऐसा तो हर्गिज [illegible] कि उमदा २ और तारीफ [illegible] है लेकिन तुमलोग खाली खुशामद [illegible] क्या कोई रास्तगो तुममें [illegible] कौन ऐसा है जो हमारी [illegible]

कवियोंमें कोई ऐसा [illegible]

निन्दाभी करताहो, [illegible]

यह कहनाथा, तव यह उसकी सडाकेकी बातें सुनकर कलिके खद्योतकवि जो चन्द्रमाके उदय पहलेही ठौर २ चमकतेथे छिपगये सकपकाकर सब अवाक् होरहे मुहँसे बात न निकली ओठोंपर पपरी उखडआयी

सबको सकपकाया देखकर एक जवान कवि तपाकसें उठा और कह नेलगा "ऐ मालिकेजहाँ, शाहेनिशाह खुशामद ऐसीहै जो खुदाकोंभी पसंद है तो इस अरऐबमिकदारकी क्या ताब जो खुशामद पसन्द नहो कुदरतका कारसाजभी उन्हीं चीजोंको जाहिर रखताहै जो देखनेमें उमदा, प्यारी और हरदिल अजीज होतीहै मगर उन्हें छिपाताहै, जिनसें इन्सानको नफरत पैदा होतीहै इसी खयालसे हम शायरानकोंभी यही इख्तियार करनापडा कि बडाको बडाई और नेकीको जाहिर करना और ऐबोंको बन्द रखना मगर जब आप फरमातेहैं कि हममें कोई रास्तगो है या नहीं लिहाजा चन्द अल्फाज गुजारिश करदेना बहुत जरूर हुआ "इसलिये कि रास्त मूजिबेरजाए खुदास्त कसन दीदम कि गुम शुद अज रहे रास्त"

"आलीजनाब मुअल्ला अल्काब ! रास्त सनागो शायर तो हजारों हैं, इनकी कमी नहीं है, मगर हुजूर सच्ची तारीफके सुननेवालेहीं नहीं नजर-आते अगर सची तारीफका सुननेवाला कोई मर्द सामने हो तो खाकसार रास्तगो हाजिर है"

जवान कविकी लच्छेदार और प्रमाणिक बातोंसें औरंगजेब कुछ प्रसन्न तो हुआ परन्तु सत्य स्तुतिके विषयमें मनहीमन शोचनेलगा कि नजानें यह क्या २ कहेगा?

थोडे समयतक शोचकर औरंगजेबने कहा "ऐ कविराज भूषण तूँ अभी मेरी रास्त तारीफ कर मैं खुशीसें सुननेका मुश्ताक हूँ"

क० भू०–"बादशाह सलामत ! मैं जानताहूँ कि जब आपकी रास्तगोयी करूँगा तब मेरा शिर शरीरसें अलग कियाजायगा इस कारण मैं निवेदन करताहूँ कि आप इस आज्ञाको मौकूफ रक्खें"

शा० औ०–"नहीं कविराज नहीं ! मैं तुम्हारे सब गुनाह मुआफ

करताहूँ तुमसें आज रास्त कहनेमें जो २ तकसीरें होंगी, सब मुआफ कीजायँगी"

क० भू०—"आपका यह कहना उचित है, लेकिन जब मैं आपकी रास्तगोयी करूँगा, तब आपका यह मिजाज कुछ और होजायगा लिहाजा अगर हुजूर अपनी रास्तसना सुननेका इश्तियाक़ रखतेहैं तो हमको फरमान लिख देवें और अमीरोंकी गवाही करा देव तो अल्बत्ते खाकसारको रास्तगोयी करनेमें उज्र न होगा"

औरंगजेबने उस धुनमें भूपणकी इच्छानुसार फरमान लिखवाकर अमीरों और उमराओंकी गवाही करादी भूपणने वह फतवा लेकर अपने पास रक्खा और निडर होकर शान्त चित्तसें **"किबलेकी ठौर बाप बादशाह शाहजहाँ"** आदि कवित्त पढे उसके एक २ शब्द औरंगजेबको कटारीकी तरह लगतेथे आनन निकृति और त्यौरियोंका बदलना औरंगजेबके मनोगत क्रोधका सात्विक रूप दिखादेताथा

भूपणने यह सब ध्यान छोड इस कवित्तको पूरा करके धडाकेके साथ **"हाथों+ तसबीन लिये प्रात उठि बन्दगीको"** इत्यादि दूसरे कवित्तको समाप्त किया

कडे शब्दोंकी कटारी, चलती वक्रोक्तिके विषधर बाणसें प्रज्वलित औरंगजेबके रोम प्रतिरोम तो पहलेही कवित्तसें जल्गयेथे बीच २ में कुछ निडर और निरंकुश राजपूतोंका भूषणको धन्य २ कहकर सराहना और उत्साह देना औरंगजेबकी प्रज्वलित क्रोधकृशानुमें घीकी आहुति हुआ आँखें प्रज्वलित दीपशिखासी चचल होकर शनिनेत्र होगई अंग भस्मीभूत होआया इस कवित्तके अन्तमें कविका औरंगजेबको सम्बोधन करके **"सौ सौ चूहे खायकें बिलाडी बैठी तपकें"** कहना बादशाहको सबतरहसें असह्य हुआ सर्वांग थर्राउठा नेत्रोंसें क्रोधाग्निकी चिनगारियाँ प्रस्फुटित होनेलगीं अपने वचनबद्धहोनेकी सीमा लाँघकर अहमन्य अहमिती औरंगजेबने झट मियानसें कृपाण निकाली और भूषण सत्कीर्तिवा-

+ इन कवित्तोंको हमारी शिवाबावनीमें पढो

चीका शिरच्छेद करनेकेलियें गरजकर सिंहासनपर उद्यत हुआ बीचके मध्यस्थ विचारवानों और प्रतिष्ठित मंत्रदाताओं एवं राजपूतोंने नीति और इस कार्य्यमें अधिक अपमानका डर दिखाकर औरंगजेबको शान्त किया

औरंगजेब शान्त तो हुआ, किन्तु क्रोधदग्ध हृदयकी ज्वाला शान्त नहीं हुई उसने तलवार म्यानकी और गरजकर कविकेलिये आज्ञा दी "ऐ भूषण, चलाजा तूँ मेरे सामनेसें! मुझे मुँह मत दिखा मैं तेरी सूरतका रवादार नहीं आज इन मुसाहिबों और पुराने बुजुर्गोंके कहनेसें तेरी जान बख्शताहूँ मगर याद रख! कि चन्द अरसेंमें तूँ जमीन और आस्मानके दोनो तबकसें जरूर अलग कियाजायगा

कविभूषण मानो उसकी बातकों बिना सुने और बिना किसीतरहकी चिन्ता किये निरंकुश नाहरकी तरह गयन्दगतिमें वहांसें चलतेहुए और घर पहुँच अपनी देवयानसी वेगवती केसरघोडीकों लेकर वहाँसें चलने की तैयारी करनेलगे

भूषणके पीठदेकर चलेजानेपर औरंगजेबके मनमें नजाने किस भगवद् प्रेरणासें उद्वेग उत्पन्न हुआ अपने किसेपर उदास होकर पश्चात्ताप करनेलगा और अपकीर्तियोंपर झाख पटककर अपने एक हाँजी हाँजीके पूर्ण पारगत कवि और कुछ मुसाहिबोंके साथ जुमामस्जिदमें नमाज पढनेकेलिये गया

जब नमाज पढकर औरंगजेब शीतल मन्द त्रिविध पवनसें मन प्रसन्न करनेकी पराकाष्ठामें सडकपर एक बुर्जमें ऐसी इंगितसें बैठाथा मानो अभीकी किसी अपनी भूलपर अपने अभिमानके आमेसे बाहर हो निर्मूल ममतापर पश्चात्ताप करताहो

"इतनेमें भूषणकवि अपनी विद्युतगमनी केसरीपर चढे उधरसें निकले और शाहकों न नमकर समीपस्थ हाँजीगिरीके पक्के भाटकों नमस्कार किया "

"औरंगजेबने इस अपमानका दुःख आपेमें रखकर धीरेसें उस भाटसें यह पूछनेकेलिये इंगित किया कि भूषण बादशाहसें बिगडकर कहाँ जायगा कौन दिल्लीपति शाहँशाहके शत्रुकों शरण देनेवाला है?"

कविने बादशाहकी आज्ञा पाकर **"है रग नौरंगशाहको, और न दूजो रग"** इत्यादि दोहेमें पूछा

भूषण सानुभवीसे भला औरगजेबका इगित और परोक्षसी आज्ञा कहाँ छिपसकतीहै चट समझगया और बीरोन्मत्त **"कितेक देश जीते दलके बल"** यह सवैया उत्तरमें कहकर अपनी केसरीको एड दबायी कि यह बिजलीसी तडपकर उड चली क्योंकि भूषणने इस सवैयाका औरगजेबपर भविष्यमें होनेवाला प्रभाव पहलेहीसे अनुभव कररक्खा था

भूषणके युगल कवित्तकटारसे घायल औरगजेबके घाव नमाज आदिकी परमात्माप्रार्थनामें यद्यपि मुरझागयेथे, परन्तु इस नये विषके बुझाये बाणने उसका शरीर विषमय करके उसे विक्षिप्त करदिया शिवाजीसे महा शत्रुकी बडाई और अपनी निन्दा साथही सुनकर औरगजेब आपादमस्तक जलउठा और यह शोचकर अपने मनमें बहुतही झुंझलाया कि भूषणको उसी सभामे उन मुसाहिबों और राजपूतोंसे निरक्त होकर क्यो न काटडाला

वह शिवाजीके प्रबल पराक्रमसे परिचित था शिवाजीकी जिसदिन दिल्लीमें एकबार तलवार चमकी थी कादर यवनोंकी सेना जिसदिन बज-रग बहादुर शिवाजीरावकी कठिन असिधारसे छेदीगयीथी उसदिनकी बात औरगजेब भूलनहींगया था वह जानताथा कि जिस अगाध बली शिवाजीने बीजापुर विध्वश करके सिंहासन दिल्लीपर हाथ फेराथा उसकी ज्वलित बीरतामें भूषणकी बीरकविताका होम जब होगा तब उसकी प्रताप और बलती क्रोधाग्निकी लवें दिल्ली कदरीघ्य हमारे सिंहासन शिखरको मलीन करदेगी

अपनी आगन्तुक दशा और विपदकी शकासे भयभीत प्रगट क्रोधमें कॉंपती जिह्वासे उसने आज्ञा दी "जो भूषणको मारडालेगा वा जीता पकड लावेगा उसको दश गाँव इनाम मिलेंगे जोलोग वहाँ उपस्थित थे जाँघ पीटकर भूषणको मारने और पकडनेकी कामनामें केसरघोडीके पीछे हुए

भला यह भूषणकी कामनाप्रद केसर कहा यह गुडिये हौजी २ के लेले! कहाँ पकड सकतेहैं? वह वेपरवाही केसर परवाली घोडीके स-

मान बेगम उसकी अर्धांगी और दोनों ये मृगतृष्णामें भूषणको पकड़-
नेकी कामना करनेवाले दुष्ट पामर ठीक वैसे मालूम पड़ते थे एक
गोष्ठीकी पूर्ति होनेके अनन्तर कमरेमें इन दोनोंके से गोंड़ी खड़े र
भूषण अपनी बादशाह जाते समझके गुप्त गहर गुफाओंमें पहुंचकर
इन पामर पीलानोंकी आंखोंसे भागकर अदृश्य होगये

कभी तालेम मस आसमाकी कैंचनारी कामना करनेवाला भी ऐसे दलान
होता है आजकलकी पतिव्रता पतिप्राण नायिका के युवीजन मुग्धम्य था
ऐसे वैसा कुटिल मनुष्य पितप्रहार जहाँ दुष्ट कामनायें पर लह
होती है, टाफ २ उसी मगर टापके पाइश कग गर्भित बगावतपर धूल
डालनेवाले गरोल सामग्री भाग्ये औरंगजेबके दुष्ट भारती पर कामना
हीन होकर फिर आये औरंगजेबने सबके मुखपर कम्पित निकलगाली
छाई देख भूषणके आराम होकर अनुभव करताहुआ कहा कि आज छोड़-
कर कहा "क्या पापी भाग गया"

हरे! दुष्ट दुराचारी पापी! तेरी शिक्षा न मिलगयी, तेरी अवश्य तेरी
जब शिवाजीकी कृपाण रणभूमिमें चमकी थी तब तेरी

यही यात्राविनोदका सम्पादक आगे चलकर "शिवाजी महाराज और
भूषण कवि" शीर्षक लेखमें लिखताहै "औरंगजेबके सैनिकोंसे अदृश्य
हुआ भूषण पैदल ही करता वनवन और पहाड़ोंकी भयानक गुफा-
ओंको देखता झाड़ झाड़ियोंमें, कुश कांटे और पथरीली भूमियां झेलता,
नालियों और घाटियोंको पार करता शिवाजीकी राजगढ़ी रायग-
ढके पास पहुँचा यहाँ प्राकृतिक पथरीली भूमिके गड्ढोंमें निर्मल नीर
देखकर विश्राम करनेको जी ललचाया गड्ढोंका मन्द २ जल प्रवाहित
होकर एक दूसरेमें संगम करना और उनके दर्पणोदरमें हरित वृक्षोंकी
छायाका प्रतिबिम्ब देखकर भूषणका मुरझाया मन हरा होआया धीरे २
उस रम्यस्थानमें टहलनेकी तरह चलनेलगा गिने चुने कदम चलकर
एकदम चौंक पड़ा सहसा देखता है, एक सवार घोड़ेकी बाग थामें धीरे
हलकदमी कररहा है सुन्दर मुखमण्डलपर परिश्रम सीकर देखनेमें बोध

होताथा, यह कोई दूरकी राह तै करके आया है कभी उसका दो चार फाल टहलना फिर घोडेको थाप देकर सुहराना, चुचकारना, अभी घोडेकी पीठपरसे उसका उतरना बताये देताथा उस पुरुषका उन्नत ललाट, विशाल भुजाएँ और उदयोत आनन देखनेसे वह कोई बडा भाग्यवानसा बोध हुआ तेजस्वीके शुभाननकी उज्ज्वल प्रभा और मस्तकमे देवीभक्तका आरक्त चिन्ह देखकर भूपणने ठीक आस्तिक हिन्दू समझा शिरपर बहूमूल्य बाँकी पगडी दिव्य मस्तककों दुनी छबि सम्पादन करतीथी गलेमें हीरे, मोती और सुवर्णकी गंगायमुनी माला देखकर चकाचौंध लगनातीथी, लखनौ आसाही अंगरखेके जिसके हाथ फणाकार सुशोभित थे, नीचेसे सुवर्णकी पहुँचियाँ ऊपरतक आब छोडती थी उस ऐश्वर्य्यशाली श्रीमय पुरुषके बायें हाथमें प्राचीन शिल्पकारी भरी झकाजोर तलवार देखकर उस पुरुषके किसि महत कुलके बीरवंश और बीरप्रकृतिके होनेका अनुभव होजाताथा भूपणने आर्य्यनीतिके अनुसार सभ्यतापूर्वक उनको प्रणाम किया उस तेजस्वीनेभी विना किसीप्रकारके आडम्बरके प्रणाम करके पूछा "तुम कौन हो ?"

कवि भूपण—"मै अन्तर्बेदका रहनेवाला कनौजिया ब्राह्मण हूँ नाम मेरा कवि भूपण और पिताका नाम रत्नाकर है "

तेजस्वी पुरुष—"आप कहाँसे आते हो?"

कवि भूपण—"मै बहुत दिनोंसे दिल्ली दर्बार शाह औरंगजेबके यहाँ था इन दिनों मैने उसकी आज्ञानुसार उसका सत्कीर्तन किया, उसने विरक्ति प्रकाश की तब मुझे वह दरबार त्यागकर इधर आना पडा "

तेजस्वी पुरुष—"आपने अब कहा जानेका ठाना है ?"

कवि भूपण—"मेरा विचार अब हिन्दुधर्म्म और हिन्दु देशका उद्धार करनेवाले महाराज शिवाजीके दरबारमे जानेका है "

तेजस्वी पुरुष—"जब आप कवि होकर उनके दरबारमें जानेकी अभिलापा करतेहैं तब तो उनकी कीर्तिरूपी कुछ कविताभी आपने कीहोगी यदि की है तो उसमेंसे कुछ सुनाकर अनुग्रह करेंगे ?"

कवि भूषण–"आपके तो कई प्रश्न होचुके जिनका मैंने नम्रतासे उत्तर निवेदन किया अब एकबार मेरे प्रश्नका उत्तर अनुग्रह करें तो मैं उनकी कीर्ति सुनाना प्रारम्भ करूँ"

तेजस्वी पुरुष–"आप पूछिये मैं प्रसन्नतासे उत्तर दूँगा"

कवि भूषण–"आप कौन हैं? शिवाजीके दरबारमें क्या दरजा भोगते हैं? अथवा उनसे आपका कैसा सम्बन्ध है?"

तेजस्वी पुरुष–"मैं शिवाजीका सेनापति हूँ मुझे कविता सुननेकी बड़ी लालसा रहाकरती है तिसपरभी अपने स्वामीकी कविता! मैं राजनीतिके अनुसार उनका छठा अंग हूँ"

कवि भूषण–"सरदार आपसे योग्य वीर यदि हमारी कविता सुननेमें श्रद्धा प्रकाश करें तो हमारा परिश्रम सफल हो अच्छा आप सुनिये" कह कर "**इन्द्र जिमि जम्भपर वाडव सुअम्भपर**" अन्तका "**तिमि म्लेच्छ वंशपर शेर शिवराज हैं**" कविने यह कवित्त ऐसी गर्जसे कहा कि सुननेवाला पथ प्रचलनसे शिथिल और शान्त पुरुष एकाएक वीरताके आवेगमें तनतनाउठा रोमाञ्च होगया आँखें आरक्त होआयीं, पुनः कविको कविता कहनेका इंगित किया

कविने फिर पढ़ा, तेजस्वीकी अभिलाषा फिर बढ़ी उसने फिर कहनेका इंगित किया कविने फिर पढ़ा इसीतरह उस वीर पुरुषका उत्साह और कवित्त सुननेकी लालसा बढ़तीगयी भूषण कहतागया

इसीप्रकार भूषण बावनबार कवित्त पढ़कर शिथिल हुए और कवित्त सुननेकी आशा बन्द करनेकेलियें उस उत्साही पुरुषसे प्रार्थना की कुछ लोगोंका कहना है कि कविने बावनबार एकही कवित्तको कहा, परन्तु कुछेक यह बयान करतेहैं कि हरबार नये कवित्त बनाकर कवि कहते गये, जिनका संग्रह "**शिवाबावनी**"[1] है जो हो बावनबार कवित्त सुननेपर भी उस तेजस्वी पुरुषकी तृष्णा शान्त नहीं हुई और भूषणकी प्रार्थनापर भी अपनी अभिलाषा और सुननेकी प्रगट की फिरभी कविने शिथिलताके

---

१ यह ग्रन्थभी हमारी पुस्तकालयमेंसे मिलेगा किमत उसकी ≈ डाकखर्च न्यारा

मारे वही प्रार्थना की, तब उत्साह भगकर वीरपुरुषको अपनी आज्ञा रोकना पडी और कविसे यह कहकर कि "आपने मुझे शिवाजीकी कीर्ति सुनाई, इसका मैं परमबाधित हूँ आपको उनसे दरबारमें भेट करनेके विषयमें सहायता दूँगा" घोडेपर चढ चलते हुए

दूसरेदिन भूषण अखण्डप्रतापी महाराष्ट्र भोंसलाकुलभूषण शिवाजी महाराजके दरबारमें पहुंचे शिवाजीकी राजगद्दी कुछ प्राचीन तो न थी, तौभी प्राचीन राजनीतिके अनुकूल राजदरबार देखकर बहुत प्रसन्न हुए और अपने पूर्वपरिचित सेनापतिको खोजनेलगे बहुतकुछ खोजा किन्तु पता न पाया तब उनकी राजसभाप्रणालिके अनुसार सभामें प्रवेश किया

सभामें ऊंच्य सुवर्णसिंहासनपर एक तेजस्वी विशालमस्तक पुरुषको वस्त्रालंकार विभूषित आसीन देखकर बहुत प्रसन्न हुआ जातेही राजसभा प्रवेशानुसार भूषणने नमकर कलका सुनायाहुआ पहला कवित्त पढ आशीर्वाद किया कवित्त कहना प्रारम्भ करतेही सब मरहठे और ब्राह्मण गुणज्ञ एव सरदारोंकी भूषणकीओर टकटकी लगगयी समाप्त होनेपर एक सेनापतिने उठकर भूषणको योग्य स्थान दिखा बैठनेकी सैन की, और उसीके अनुसार कवि यथायोग्य आसनपर बैठा

कुछक समय पश्चात् भूषणने देखा तो सिंहासनपरका बैठाहुआ मनुष्य वही बोध हुआ जो कल मार्गमें मिलाथा और जिसने उनसे बावनबार आग्रहसे कवित्त सुननेपर भी और सुननेकी आकांक्षा प्रगट कीथी भूषणको यह जानकर बडा आश्चर्य और विकलता हुई, परन्तु पीछेसे यह समझकर कि मैंने कल कोई बात किसीप्रकार अनुचित्त वा मर्यादालंघनकी नहीं की थी समझकर, शान्त हुआ

इस अहताप पश्चात्तापको तीक्ष्णबुद्धि तेजवान महाराज शिवाजीने भूषणकी आननाकाति देखकर ताडलिया और कविको निडर करनेके हेतु कहा " ऐ मतिमान भूषण जी ! म्लेच्छ कुलगारका अब कुछ भय मत करो और निःशंक रहकर मेरे दरबारकी छवि वृद्धि करो हमको तुम्हारे ऐसे वीररसोद्दीपक क [illegible] आवश्यकता थी,

कामनादायिनी भगवतीने वह अभिलाषा आज पूरी की अब कुछ सकोच शंका न करो म्लेच्छ दरबार और वहाँसे इधर आनेकी व्यवस्था वर्णन करो ”

महाराजकी अभयवाणीसे कविने निर्भय होकर नीचेके लिखेहुए तीन कवित्त कहे —

१ “ जोराकर जैहैं जुमलाहके नरेस पर ”

२ “ दाढीके रखयनकी दाढीसी रहत छाती ”

३ “ उतरि पलगतें जिन दीयो ना धरापे पग ”

तीनों कवित्तोंको सुनकर मारे वीरोल्लासके शिवाजीका दरबार गरज-उठा शिवाजी महाराजने वीरतासे अधीरसा होकर कहा “ऐ कविराज-भूषण कल जो तुमने मुझे कविता सुनाई थी, उसे सौवार मुझे सुननेकी और सौ ग्राम, सौ हाथी और सौ शिरोपाव देनेकी अभिलाषा थी, परन्तु केवल बावनबार सुनाकर तुम शिथिल हुए इस कारण तुम्हें बावन गाँव, बावन हाथी और बावन आपादमस्तक वस्त्र दिये वह अभी मिलेंगे और आजसे इस शिवाजीके राजकविका पद आपको दियाजाता है

कविने नम्रतापूर्वक निवेदन किया —ऐश्वर्य्यवान् महाराजन् ! मै गाँव, हाथी और वस्त्रकेलिये नहीं आया, परन्तु मुझे आपका शौर्य्य और आर्य्याभिमान सुनकर आपके आश्रित रहनेकी अभिलाषा है आपके शूर योद्धाओंके हाथमें शत्रु म्लेच्छोंका नाश और सहार देखनेकी कामना है दुष्ट दुराचारियोंका दमन होकर आपके सुशासन और अखण्ड प्रताप्पको आर्य्यावर्त्तमें प्रदीप्तमान देखनेकी वासना है यही मुझे बडा पुरस्कार है स्वदेशाभिमान दर्शनसे विशेष मान्य पुरस्कार मेरी आखोंमें दूसरा नहीं आता ”

तथापि शिवाजी महाराजने भूषणको मनमाना पुरस्कार और अपने यहाँ चिरकालकेलिये स्थान दिया भूषण उसी समयसे अखण्ड यशधारी अटलकीर्ति और महत्वभाजन आर्य्यकुलोजागर शिवाजी महाराजके राजकवि हुए

इस सुन्दर समागम और महत पदका सुख भोगकर भूषणको कइ वर्षोंके बाद फिर अपने घरपर जानेकी इच्छा हुई आग्रह और निवेदन करनेपर बहुतकुछ मान सन्मान और दान महानके साथ महातेजस्वी शिवाजी महाराजने शीघ्र लौट आनेकि आज्ञा करके भूषणकविकी बिदाई की भूषण शीघ्र लौटनेकी आज्ञा शिरोधार्य्यकर प्रतिज्ञाबद्ध हो घर आये

आतेसमय मार्गमें पन्नाके राजा छत्रशालजी महाराजसें मिले महाराज छत्रशालने सुना कि शिवाजीके पुरस्कारसें सन्तुष्ट होकर भूषणजी घर जाते हैं भला मैं किस योग्यहूँ और मेरा क्षुद्रसम्मान उनको कहाँ तुष्टिकर होगा इसीप्रकार शोच विचारकर छत्रशालने अपनेकों सम्मानके योग्य न जान भूषण कविकी सवारीके कहारोंके साथ होकर अपने कन्धेपर सवारी रक्खी भूषणने यह सत्कार देखकर हाहाकार किया और अपनी प्रतिष्ठा जान महराजकी गुण ग्राहकतामें नीचे लिखा कवित्त पढा —

"साहूकों सराहों कि सराहों छत्रशालकों" इसीप्रकार दश कवित्त कहे जो शिवाबावनीके साथ छत्रशालदशक नामसे हमने दूसरे पुस्तकमें प्रकाश किये हैं जिन्हे सुनकर महाराज छत्रशालजी गद्गद हो अपने भाग्यको श्रद्धापूर्वक सराहकर कृतार्थ हुए

वार्ताविनोदकारहा लिखता है कि जब भूषण घर पहुँचे तो उनके घरमें बडा आनन्द मनायागया लोभके टूटे फुटे शत्रुभी मित्र होकर आ जुरे बधाई होनेलगीं, और यह समाचार और आनद मगलकी बात दिल्ली बादशाहके दरबारतक पहुँची

बादशाहने अपने कवि चिन्तामणिसें उनके भाई भूषणको दरबारमें हाजिर आनेका आदेश किया चिन्तामणिने दरबारमें घर जाकर भूषणसें दरबारमें चलनेका आग्रह किया भूषणने कहा "सुनो हम बादशाहके प्राणनाशक रक्तप्यासे शिवाजीके प्रशसक हैं यदि हमसें उनकी स्तुति सुनना है तब तो हम आ सक्ते हैं"

चिन्तामणिने बादशाहसें भूषणकी प्रतिज्ञा कही बादशाहनेभी स्वीकारकर आनेका अनुरोध किया भूषण दरबारमें आये और बादशाहने

उनसे कुछ काव्य कहनेका आग्रह किया तब कविने कहा कि, "आप पहले हाथ धोडालें तब हमारे कवित्त सुनें" बादशाहने कारण पूँछा, भूषणने उत्तर दिया "हमारे भाई चिन्तामणि आपको नित्य शृंगारकी कवित्तें सुनायाकरते हैं और आपका हाथ शृंगाररसके परवश होता है किन्तु मेरे कवित्तोंसे आपका हाथ मूँछोंपर जावेगा"

बादशाहने कहा "अच्छा मैं हाथ धोताहूँ परन्तु यदि मूँछोंपर हाथ न आया तो तुम्हारा शिर काट लेंगे"

भूषणने प्रमाण किया और बादशाहने हाथ धोया तब भूषणकवि वीररसमें पगे कवित्तोंके मन्त्र जगानेलगे शिवाजीका यशवर्णन बादशाहको असह्य हुआ तब उसने आज्ञा दी "हम सार्वभौमिक राजा हैं सब राजा हमको कर देतेहैं शिवाजी एक मण्डलका राजा है उसका यश माण्डलीक राजाओंमें वर्णन करो"

तब भूषणकविने कवित्तमें वर्णन किया कि सर्व राजा पृथ्वीके पुष्प वृक्ष हैं और आप भ्रमर हैं उसीके समान पुष्पोंका आप मधु लेते हैं, परन्तु शिवाजी चम्पकवृक्ष हैं, जिनके पास भ्रमर नहीं जासकता ऐसे अभिप्रायका यह कवित्त कहा "अली अवरगजेव चंपा सिवराज हैं" तब बादशाहने कहा "हाथ जिसलिये धुल्पाये वह उद्योग करो"

तब भूषणने छ कवित्तें उत्कृष्ट वीररसकी कहीं और सातवाँ कहते २ बादशाहका हाथ मूँछोंपर पहुँचा और चट भूषणने सातवीं कवित्त पुरीकी तब बादशाह बहुत प्रसन्न हुए और बहुतकुछ पारितोषिक देकर भूषणको बिदा किया यह समाचार शिवाजी महाराजके उस दूसरा तवाह्कने जो उनकी ओरसे दिल्लीके दरबारमें रहता था, शिवाजीके पास पहुँचाया महाराजने चट आज्ञा लिखकर उन्हें बुलालिया और भूषणकविने सुखपूर्वक वीरता क्षेत्रमें अपनी शक्ति परिचालित कर संसारयात्रा निर्वाह की इनके बनाये हुए शिवराजभूषण, भूषणहजारा, भूषणउल्लास, दूषणउल्लास ये चार ग्रन्थ सुनेगये हैं व्रजभाषाके प्रसिद्ध कवि अन्तर्वेदान्तरगत वनपुरा निवासी कालिदास अपने हजारा नामके ग्रंथमें इन्हीं कविराज भू-

षणके नवरससपन्न ७० कवित्त सनिवेशित कियेहैं (जो कवि संवत् १९४९ में विद्यमान थे, उपनाम आपका त्रिपाठी था)

इस शिवराजभूषण ग्रंथके अन्तमे इसकी रचनाका समय विक्रमी सम्वत् १७३० लिखा है और उससे यहभी स्पष्ट है कि शिवाजीमहाराजको राज्यतिलक शालिवाहन शके १५९६ में हुआ था उसके एक वर्ष पहले कविने इस ग्रन्थको निर्म्माण किया बोध होता है इसमे कविने अलंकारोंका उत्तम रीतिसे वर्णन किया है और उदाहरणोंमें जो पद्य लिखे हैं वह सर्वतोभाव यशशाली महाराज शिवाजीके गुण और वृत्तक्रम वर्णनसे परिपूर्ण हैं ब्रजभाषाके प्रसिद्ध कवि विहारीलाल और सीतल हमारे इन्ही भूषण कविके वंशज थे यहाँतक कविराज भूषणकी संक्षिप्त जीवनीका वृत्तांत लिख समाप्तिके पूर्व उस सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान जगदीश्वरके चरणकमलोंमें कोटिश धन्यवाद और प्रणामपुष्पांजलि निवेदन करते हमको महान् आनंद और उत्साह होता है कि जिसने आज इस दुर्लभ और प्राचीन "शिवराजभूषण" नामक काव्यग्रंथकी द्वितीयावृत्ति प्रकाश करनेमें हमें शक्तिमान किया

यह अपूर्व और प्राचीन ग्रंथकी एक प्रति रीवा और जयपुर महाराजसे लब्धप्रतिष्ठ महाशय त्रिपाठी श्रीयुत श्यामनाथजीके ग्रन्थसंग्रहालयसे जयपुर महाराजाश्रित महामहोपाध्याय पंडित श्रीदुर्गाप्रसादजी द्वारा मुबईके प्रसिद्ध विद्वान रा. रा. काशीनाथ पांडुरंग परबको प्राप्त हुईथी

उक्त महाशय परबनें वह पुस्तक रा. रा. जनार्दन बालाजी मोडक (डेकन कोलेज) को प्रकाश करनेकेलिये दिया महाशय मोडकने उक्त पंडित दुर्गाप्रसादजीकी सहायतासे शुद्ध कर "महाराष्ट्र काव्येतिहास संग्रह" के तीसरे खंडमे इसवी सन १८८९ में छपा प्रसिद्ध किया

सच है कि ये तीनों गृहस्थ (पंडित दुर्गाप्रसादजी, परब और मोडक) जो परिश्रम न करते तो जिसमें आर्यधर्मसंरक्षक महाराजा शिवाजी छत्रपतिकी अप्रतिम वीरताका वर्णन है ऐसा यह ग्रंथ प्रसिद्ध न होता

वास्तवमें ये तीनो महाशयोंका समस्त महाराष्ट्रप्रजाके उपरही नहीं किंतु आर्यधर्माभिमानी, काव्यज्ञ, रसिक, सुहृदय लोगोंपरभी अवर्णनीय उपकार

हुये हैं, और उन्होंने जो प्रथमावृत्ति प्रकाश करनेमें महत् परिश्रम किये वह अवश्य वर्णनीय और प्रशंसनीय है

इस काव्यकी शेष प्रति उक्त महाशय परवने मुझे दी और पूर्ण शुद्धतापूर्वक कविकी जीवनीसमेत द्वितीयावृत्ति प्रकाश करनेको मुझे उत्तेजित किया उसपरसें उम्मेद हो मैंने ग्रंथसाहित्य जमाकर मेरे मित्र बाबू गोपालराम गहमरनिवासी जो उस वख्त भाषाभूषण पत्रके संपादक थे उनसें प्रार्थना की उक्त महाशयने मेरे साहित्यो परसे शुद्ध हिन्दीमें कविकी संक्षिप्त जीवनी लिख भेजनेका परिश्रम ले मुझे कृतार्थ किया वास्ते उनकाभी मैं बड़ा उपकृत हु, अतएव इस अवसरपर उक्त महाशयोंके उपकार कंठरवसे प्रसिद्ध करनेमें मुझे बड़ा आनंद होता है

इस वीररसभरित ग्रंथकी द्वितीयावृत्ति कुछ दुरुस्तीपूर्वक छपानेकी मुझे पहलेहीसे बड़ी उत्कंठा थी, लेकिन उक्तग्रंथ व्रजभाषानिबद्ध और अलंकारिक होनेसें कोइएक संस्कृतज्ञ और व्रजभाषाके उ०कविकी तलाशमें था, कारण ऐसे अलंकारबद्ध ग्रंथोंके ग्रंथका उत्तम कविके निरीक्षणसें उद्धार हो तो प्रशंसनीय हो

ईश्वरीतंत्रमें जामनगर (काठियावाड प्रदेशमें एक राजधानी) निवासी श्रीयुत गोपालभट्टात्मज त्रिविक्रमलालाजी जो संस्कृत और व्रजभाषाके काव्यालंकार वगेरेमें अच्छे कवि और मर्मज्ञ हैं उनका मुंबई आगमन हुआ आपसे मेरा परिचय हुये बाद ग्रंथको फिरसे द्वितीयावृत्ति शुद्ध करने-की प्रार्थना की, आपने कृपा करके स्वीकार किया

उक्त लालाजीने व्रजभाषा और अलंकारोंमें तथा पिंगल प्रभृतिके नियमानुसार काव्य में जो कुछ दृष्टिदोष दृष्टिगोचर हुये उन्हें शुद्ध कर समग्रप्रूफ तपासनेका परिश्रम ले इस ग्रंथके साथ आपकी कवित्वशक्तिका नमुना रहे वास्ते ग्रंथांतमें शिवराजदृष्टिपंचक और नीचे रचीभइ कविता बनादी यो धन्यवाद पुरस्सर यहाँ नियोजित कर आपका बडा उपकार मानता हु

(छप्पय)

चढत अमित उच्छाह, करें सधान् शरजाल ॥
देतहौंस हय चढें, हीरा रथ होत महाघन ॥

दिल्लीदल दलमलै, दल अवरांगशाह मन ॥
आर्यधर्म थिर थपे, करै द्विजदेव सर्व धन ॥
डगमगत धरा धरकत हियो, परै काल परपच्छपर ॥
सिवराज वीर सिरजा अज, देत स्वच्छकर मुच्छपर ॥१॥

(भूमिकाका-कवित्त)

पचिगन भूपन महान कविभूपनको। विरचित "शिवराज-भूपन" ललित ग्रंथ ॥ लक्ष्मीदास तनै यदुवंशी परदासी बुध। गोवर्द्धनदास दियो शोधन बिने अनंत ॥ भूपनकी धानी शिवाकीरति समानी जाम। निरखि त्रिविक्रम यथामति कवित्त पथ ॥ शोध्यो वृत्त विषय विचार अर्थ भूषणको। तदपि भई जो होय भूल ताहि सोधो संत ॥ १ ॥

यहांतक प्रस्तावना सहित संक्षिप्त जीवनीको समाप्तिकर आगे कुछ अलंकारोंका उपक्रमभी पाठक महाशयोंकी सेवामें पवित्र पुष्पांजलीरूप अर्पण करता हूं —

अलंकारोंका उपक्रम

मनस्वभाव सुलभा परिमोहिनी रमणीका स्वाभाविक सौन्दर्य हेम और हीरे मोतीके अलंकारोंका आश्रय पानेसे जिसप्रकार उत्तिमसम्पन्न और परिवर्द्धित होताहै नक्षत्रगण और राकेश जिसप्रकार प्रकृति देदीप्त दिवाकरकी दमकसे सुश्रीउज्वल और ज्योतिर्मय होकर चमकते हैं, स्वाभाविक उत्कृष्ट काव्यभी उसीप्रकार अलंकारसम्पन्न होकर सर्वांगसुन्दरपदकी प्रतिष्ठा पाताहै

ज्योतिर्मय सुस्निग्ध सुधाकर विना जिसप्रकार भास्कर गतविभावरी भयावन लगतीहै सर्व व्यंजन परिपक्व जिसतरह लवण विना आस्वादनहीन रहजाताहै उसीप्रकार जिस अलंकारके विना काव्य नीरस और उसठ लगता है, उस अलंकारके मतिअनदातादि कवियोंने दो भेद ठहराये हैं पहला शब्दालंकार दूसरा अर्थालंकार और उन्हीं काव्यवेत्ताओंका प्रमाणवचनभी है कि शब्दालंकारका तारतम्य अर्थालंकारके सन्मुख अक्षम है

इस ग्रंथके उपोद्घातमें २९ और अलंकारोंके लक्षणमें १०७ पद्य हैं

जिनम १७१ उदाहरणाक मिलानेसे ३०७ सत्र सग्या होतीहै शेषमें विपयोंकी अनुक्रमणिका के १८ ग्र थरचनाकालका १ और १ उपसहारका मिलाके ३२७ पद्य इस ग्र थमें संनिवेशित हैं १०७ पद्योंमे कविनें मुख्य २ एकसौपाच अलकारोंका वर्णन किया है दोहा, सवैया, हरिगीत, छप्पय, कवित्त और चचरीक आदि ६ प्रकारके छन्द इस ग्रन्थमें पाठकोंकों मिलेंगे और छन्दोंके लक्षणभी पाठकोंकी ज्ञापकताके लिये इसमें लिखदियेगये हैं

अलकारशास्त्रके प्रसिद्ध मर्म्मज्ञ और भरभूपित काव्यप्रकाशका कर्त्ता मम्मट जो ई० सन १०७९ से ११२९ तक साहित्यवाटिकामें भूपित था, शब्दालकारको वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेप, चित्र और पुनरुक्तवदाभास ये ६ भागोंमें और अर्थालकारको ६१ भागोंमें विभक्त करता है अलकारज्ञ रुद्रटने (जो ईसवी सनके नवें शतकमें हुआ,) पुनरुक्तवदाभास, त्यागकर शेप ५ प्रकारके शब्दालकार औ ६६ प्रकारके अर्थालकार वर्णन किये हैं किन्तु साहित्यदर्पणके कर्त्ता विश्वनाथ कविराजने मम्मट आदिके छहों शब्दालकारको लॉंघकर "भाषासम" नामका सातवाँभी निर्माण करके लगभग ७० अर्थालंकार खींच डाले हैं विचित्रबुद्धि विचक्षण वामन जो ई०स० ७७९ से ८२९ तक भूतलमें सुशोभित था उसने केवल यमक और अनुप्रास दो शब्दालकार और ३१ ही अर्थालकारोंसे साहित्य जगतको सुबद्ध करडालाहै साराश यह कि अर्थालकार और शब्दालकारकी भेद सख्या कवियोंकी उक्ति गाम्भीर्यके अनुसार यथाक्रम भिन्न २ देखनेमें आती है

हमारे इस शिवराजभूपणके जीवनाधार भूपण कविने इस ग्र थमें १०५ अलकार छेक, पुनरुक्तवदाभास, यमक, लाटानुप्रास, और वक्रोक्ति ये ५ शब्दालकार बनाये हैं, उनमें छेक और लाटानुप्रास यह अनुप्रासकी धारा हैं जिनकी उचित गणनापर केवल ४ ही शब्दालकार मुख्य कहेजासकतेहैं कुल १०५ अलकारभेद सख्यामेंसे उपरके ५ शब्दालकार शेप करनेमे १०० अर्थालकार इस ग्र थमें हुए उनमेंसे अक्रमातिशयोक्ति, अत्यन्तातिशयोक्ति, चचलातिशयोक्ति, भेदकातिशयोक्ति

और रूपकातिशयोक्ति, यह ९ अतिशयोक्तिकी शाखा हैं कैतवापन्हुति, छेकापन्हुति, पर्यस्तापन्हुति, भ्रान्तापन्हुति और हेत्वपन्हुति यह ५ अपन्हुतिके भेद हैं मालोपमा और ललितोपमा यह उपमाके भेद हैं आवृत्तदीपक और मालादीपक यह दो दीपकके भेद हैं, परिकरांकुर यह परिकरका पेटाभेद और विरोधाभास यह विरोधका भेद है - यह १६ मुख्य अलंकार नहीं किंतु अलंकारकी शाखाप्रतिशाखाऐं हैं जिन्हें १०० मेंसे निकालदेनेपर शेष ८४ मुख्य अर्थालंकारलक्षण काव्यशक्तिसम्पन्न भूषण कविकी विचारशक्तिमें हुए

उनके १०९ अलंकारोंकी विधिपूर्वक नामावली हम अनुक्रमणिकामें प्रकाश करचुकेहैं

मम्मटकृत काव्यप्रकाशके ६१ मेंसे उत्तर, विशेषोक्ति, सूक्ष्म, संसृष्टि और हेतुमाला यह ५ इस ग्रन्थम नहीं हैं, अर्थात् शेष ५६ अर्थालंकार इस ग्रन्थमें विद्यमान हैं भावार्थ यह कि इस ग्रन्थमें मम्मटके ग्रन्थसें २८ अर्थालंकार अधिक हैं, परन्तु कामधेनु, चित्र, गुम्फ, प्रश्नोत्तरमाला, भाविकछवि और सामान्यविशेष हैं इस कारण २३ अलंकारोंकाही अन्तर रहा, जिनका निर्वाह मम्मटके सिद्धान्तानुकूल उन्हीं ६१ में होजाताहै

उपर्युक्त, कामधेनु, चित्र आदि ५ अलंकार जैसे मम्मटके ग्रन्थमें नहीं हैं, वैसे सूक्ष्म, ससृष्टि और हेतुमाला प्रभृति यह ५ इस शिवराजभूषणमें नहीं हैं भावार्थ यह कि दोनों ग्रन्थोंके मुख्य अर्थालंकार समानही बोध हुए, काव्यप्रकाश सन्निवेशित ६ शब्दालंकारोंका वर्गीकरणभी हम अनुक्रमणिकाके अंतम बताचुकेहैं, अब इस शिवराजभूषण ग्रन्थमेंके वृत्तोंके उदाहरण इस ग्रन्थकर्त्ताके ज्येष्ठभ्राता कविराज चिंतामणिके छंदविचार-पिंगल नामके ग्रन्थपरमें अर्थसहित नीचे लिखतेहैं

(दोहा लक्षण—दोहा)

तेरह कल पहले चरण, दुजे ग्यारह जान ॥
याही विधि उत्तर अरध, यों दोहा पहिचान ॥ १ ॥

अर्थ—पहले चरणमें जिसके १३कल अर्थात् मात्रा और दूसरेमें ११ हो, फिर तीसरे और चौथेमेभी यथाक्रम १३ और ११ मात्रा हो, इस-प्रकार २४ कलका उत्तरार्ध और २४ कलका पूर्वार्द्ध दोहा जानना चाहिये

(मदिरादि सवैया लक्षण—दोहा)

सात भगण मदिरा कहे, गुरु मिलि सुन्दर जानि ॥
सात भगण गुरु लघु मिलें, तो चकोर उरआनि ॥२॥
सात भगण गुरुयुगलयुत, सो कहि मत्तगयन्द ॥
आठ भगण जामें परें, सो किरीटहि कहि छन्द ॥ ३ ॥

अर्थ–जिसके प्रत्येक पदमें ७ भगण हो उसको मदिरा सवैया कहतेहैं यदि ७ भगणके बाद १ गुरु आवे तो सुन्दर और ७, भगणके बाद अन्तमें १ गुरु और १ लघु हो तो चकोर और ७ भगणके बाद २ गुरु हो तो मत्तगयन्द और ८ भगणके प्रत्येक पद हों तो किरीट–छंद समजना चाहिये

(हरिगीत लक्षण—दोहा)

प्रथम पंच कल छ कल पुनि, तीन पंच कल देहु ॥
गुरू अन्त हरिगीत यों, जानि सज्जनो लेहु ॥ ४ ॥

अर्थ–हरिगीतके प्रत्येक पदमें प्रथम ५ मात्राका १ समुदाय, पीछे ६ मात्राका और आगे ५ मात्राके ३ समुदाय और पीछे अन्तमें १ गुरु होताहै, अर्थात् हरएक चरणमें २८ मात्रा उपर्युक्त प्रकारसे होताहै

(छप्पय लक्षण—दोहा)

ग्यारह तेरह पर विरति, चौपद छप्पय माह ॥
पन्द्रह तेरह चरण युग, चरणत पद्यगनाह ॥ ५ ॥

अर्थ–छप्पै अर्थात् षटपदी इस छंदमें ६ पाद रहतेहैं, यह सिद्ध होताहै इन ६ मेंसे पहिले ४ पाद में ११ वीं और वहाँसे १३वीं मात्रा पर विश्रांतिस्थान होताहै इससे इन ४ पादोंमेंके प्रत्येक पादमें २४ मात्रा होती हैं, यह स्पष्ट होताहै छप्पैके अन्तरके २ पादमें प्रत्येक पादमें १५ वे

१ एक गुरु और उसके अगाडी दो लघु अक्षर मिल्के भगण होता है

और वहाँसे १३ वें मात्रापर विराम होताहै अर्थात् इस अतके २ पादमें २८ मात्रा रहती हैं

(घनाक्षरी [कवित्त] लक्षण—दोहा)

सोरह पन्द्रह वरन पर, होत जहाँ विश्राम ॥
इकतिस अक्षर अत गुरु, कहत घनाक्षर नाम ॥ ६ ॥
सोरह सोरह पर जहाँ, विरति अत लघु होय ॥
सो रूपक घनाक्षरी, बत्तिस बत्तिस जोय ॥ ७ ॥

अर्थ—कवित्त इस छदका घनाक्षरी दसरा नाम है इस छदके प्रत्येक पादमें ३१ अक्षर रहते ह प्रथम १६ वें अक्षरपर और वहांसे १५ वें अक्षरपर विराम होताहै प्रत्येक पादमें ३२ अक्षर होकर १६ अक्षरपर विराम हो तो उस छदको रूपकघनाक्षरी कहतेहै

(चचरीक (छद) लक्षण—दोहा)

प्रथम विरति दशचारपे, फिर बारहपे होय ॥
चचरीक तासों कहत, सकल सयाने लोय ॥ ८ ॥

अर्थ—जिसके १ चरणमें प्रथम १४ मात्रापर और फिर १२ मात्रापर विश्राम होय ऐसे ४ चरण वाले छदको चचरीक कहते ह

वृत्तोंके लक्षण लिखनेमें लघु गुरु और गणोंका नामनिर्देश हुआ है वास्ते उनोंके लक्षणभी उसी पिगलके आधार नीचे लिखायेजाते ह

(लघु लक्षण—दोहा)

सबै कहावत वर्ण लघु, गुरु एक कल जानि ॥
गुरुहूको लघु करि पढे, लघुही होत सुजानि ॥ ९ ॥

अर्थ—एक मात्राका वर्ण वो लघु कहाजाताहै, और भाषामें कोइ कोइ जगे गुरुकोभी लघु कर कर पढाजाय तो उसकीभी सज्ञा लघुही होती है

(गुरु लक्षण—दोहा)

सजोगितें प्रथम जो, दीरघ बिंदु समेत ॥
सो गुरु अकहु मत्त कहँ, चरन अत कहु येत ॥ १० ॥

अर्थ—संयुक्तअक्षरके आदिका अक्षर, दीर्घ अक्षर, अनुस्वारवाला, और दोयमात्राका वर्ण गुरु कहलाताहै कहीं कहीं यानी विशेषमें कवितामें अंतका अक्षर लघु होय तोभी उसको गुरु माना जाताहै

(अक्षरगण प्रस्तार)

ऽऽऽ मगण ।ऽऽ यगण ऽ।ऽ रगण ॥ऽ सगण ऽऽ। तगण ।ऽ। जगण ऽ॥ भगण ।।। नगण

अर्थ— ३ गुरु जिसमें हों उसे मगण कहते हैं आदि लघुको यगण कहतेहैं मध्य लघु रगण कहाताहै अंत गुरुको सगण कहते हैं, और अंत लघुको तगणकी संज्ञा देतेहैं और मध्य गुरु जगण कहाता है आदि गुरुवालेको भगण कहतेहैं और ३ लघु जिसमें हों उसे नगण कहते हैं इस प्रकार ये वर्णप्रस्तारके आठ गण हैं

(मात्रागण प्रस्तार)

।।।। नगण ॥ऽ सगण ।ऽ। जगण ऽ॥ भगण ऽऽ मगण

अर्थ— ४ लघु जिसमें हो उसे नगण कहते हैं २ लघु १ गुरु हो वो सगण कहलाताहै आदि लघु मध्य गुरु अन्त लघुको जगण जानो आदि गुरु और २ लघु भगण और २ गुरुको मगण समझनाचाहिये

छंद, लघु, गुरु, लक्षण और वर्णगण, मात्रागणके, प्रस्तार हम अर्थ सहित उपर दिखलाचुके, वास्तवमें यह विषय ग्वास विचारका है

हमारा विचार इन्ही कविराज भूषणजीके ज्येष्ठ भ्राता कविकुलचुडामणि चिंतामणिका बनायाहुआ "छंदविचार" नामका पिंगल का ग्रंथ कि जिसमें ये विषय बहोत विद्वत्तापूर्वक विस्तारसें लिखागया है उसे छपा प्रसिद्ध करनेकी मनीशा है अतएव सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान जगदीश्वर में हमारी अंतःकर्णसे यही प्रार्थना है कि वो हमको इस ग्रंथके प्रकाश करनेमें शक्तिमान करे तथास्तु रसअलंकारमर्मज्ञ पाठकगणोंका अनुचर

गोवर्धनदास लक्ष्मीदास,

प्राचीनग्रंथ प्रकाशक

अनुक्रमणिका-

(अलंकारनामसूची)

अनुक्रमणिका

(उपोद्घात और उपसहारमेंके पद्योकी सूची)

(उदाहरणपद्योकी सूची)

(कवि ममटके काव्यप्रकाशमेंके ६१ अर्थालंकारोंकी सूची)

१ अतद्गुण	२१ दीपक	४१ विशेष
२ अतिशयोक्ति	२२ दृष्टांत	४२ विषम
३ अधिक	२३ निदर्शना	४३ व्यतिरेक
४ अनन्वय	२४ परिकर	४४ व्याघात
५ अपन्हुति	२५ परिवृत्ति	४५ व्याजस्तुति
६ अनुमान	२६ परिसंख्या	४६ व्याजोक्ति
७ असंगति	२७ पर्याय	४७ श्लेष
८ अन्योन्य	२८ पर्यायोक्ति	४८ सम
९ अप्रस्तुतप्रशंसा	२९ प्रतिवस्तूपमा	४९ समासोक्ति
१० अर्थांतरन्यास	३० प्रतीप	५० समाधि
११ आक्षेप	३१ प्रत्यनीक	५१ समुच्चय
१२ एकावली	३२ भाविक	५२ सहोक्ति
१३ उत्तर	३३ भ्रांतिमान्	५३ सामान्य
१४ उदात्त	३४ मीलित	५४ सार
१५ उपमा	३५ यथासंख्य	५५ सूक्ष्म
१६ उपमेयोपमा	३६ रूपक	५६ संकर
१७ उत्प्रेक्षा	३७ विनोक्ति	५७ संदेह
१८ काव्यलिंग	३८ विभावना	५८ संसृष्टि
१९ तद्गुण	३९ विरोध	५९ स्मृति
२० तुल्ययोगिता	४० विशेषोक्ति	६० स्वभावोक्ति
		६१ हेतुमाला

शब्दालंकारों का वर्गीकरण

- अनुप्रास
  - छेक
  - वृत्ति
    - नागरिका
    - परुषा
    - कोमला
  - लाट
    - पदोंका (?)
    - पदका (?)
    - एकसमास
    - भिन्नसमास
    - समासासमास
- पुनरुक्तवदाभास
  - शब्द
  - शब्दार्थ
- वक्रोक्ति
  - श्लेष
    - पदभंग
    - अभंग
  - काकु
- यमक (४० प्रकार)
- श्लेष
  - वर्ण
  - पद
  - लिंग
  - भाषा
  - प्रकृति
  - प्रत्यय
  - विभक्ति
  - वचन
- चित्र
  - अनुलोम
  - विलोम
  - गोमूत्रिका
  - खड्ग
  - नरपद पाठ (?)
  - मुरज
  - धनुष
  - शक्ति
  - छत्र
  - हल (?)
  - बुद्धिप्रकाश पद्य (?)
  - चमर (?)
  - चक्र
  - एकस्वर पद्य (?)
  - द्विस्वर पद्य (?)
  - एकाक्षर पद्य (?)
  - सर्वतोभद्र (?)
  - गुरु
  - चौ० छिद्र (?)
  - नाम

समास

भूषणकविकृत

शिवराजभूषण.

उपोद्घात

(छप्पै)

जय जयति जय आदिसकति, जय कालि कपर्दिनि ।
जय मधुकैटभछलनि देवि, जय महिषविमर्दिनि ॥
जय चमुंड जय, चंडमुंडभंडासुरखंडिनि ।
जय सुरक्त जय रक्तबीज, बिड्डालविहंडिनि ॥
जय जय निसुंभसुंभद्दलनि, भनि भूषण जयजय भननि ।
सरजा समथ्थ सिवराज कहँ, देहि विजय जय जगजननि १

(दोहा)

तरनि जगतजलनिधितरनि, जै जै आनँदओक ॥
कोककोकनदसोकहर, लोकलोकआलोक ॥ २ ॥
राजत है दिनराजको, बंस अवनि-अवतंस ॥
जामै पुनि पुनि अवतरे, कंसमथन प्रभु अंस ॥३॥
महावीर ता बंसमै, भयो एक अवनीस ॥
लियो बिरद सीसोदिया, दियो ईसको सीस ॥४॥
ता कुलमे नृपबृंद सब, उपजे बखतबिलंद ॥
भूमिपाल तिनमै भयो, बडो मालमकरंद ॥ ५ ॥
सदा दानकिरवानमे, जाके आनन अंभ ॥
साहि निजाम सखा भयो, दुग्गदेवगिरिखंभ ॥६॥
यातै सरजा बिरद भो, सोभित सिंहप्रमान ॥
रनभुसिला सु भौसिला, आयुषमान सुमान ॥७॥

भूपनि भौंसिला ताके भयो, भुजभूषन नृप साहि ॥
रात्योंदिन संकित रहैं, साहि सबै जगमाहि ॥८॥

(कवित्त)

एते हाथी दिए आलमगरदजू के, नद जेते गनि सकति विरंचिहूकी न तिया । भूषन भनत जाकी साहिबी सभाके देखे, लागै और सब छितिपाल छितिमें छिया ॥ साहस अपार हिंदुवानको अधार धीर सकल सिसोदिया सपूत कुलको दिया । जाहिर जहाँ भयो साहिजू शुमानवीर, साहिनको सरन सिपाहिनको तकिया ॥ ९ ॥

(दोहा)

दशरथके जो राम भो, वसुदेवके गोपाल ॥
सोई प्रगट्यो साहिके, श्रीसिवराज भुवाल ॥१०॥
उदित होत सिवराजके, मुदित भए द्विजदेव ॥
कलजुग हट्यो मिट्यो सकल, म्लेच्छनिको अहमेव ॥११॥

(कवित्त)

जा दिन जनम लीनो भूपर भौंसिला भूप, ताही दिन जीत्यो अरिउरके उछाह कौं ॥ छठी छत्रपतिनको जीत्यो भाग अनयास, जीत्यो नामकरनमें करन प्रबाह कौं ॥ भूषन भनत बाललीला गढ कोट जीते, साहिके सिवाजी करि चहूँ चक चाह कौं । गोलकुंडा बीजापुर जीत्यो लरिकाइहींमें, ज्वानी आए जीत्यो दिलीपतिपातसाह कौं ॥ १२ ॥

(दोहा)

दच्छिनके सब दुग्ग जिति, दुग्ग साहदविलास ॥
सिवसेवक सिवगढपति, कियो राजगढ वास ॥१३॥

(राजगढवर्नन--सवैया)

जापर साहितनै सिवराज, सुरेसकी ऐसी सभा सुभ साजै ।
यों कवि भूषन जपत है, लखि संपतिकों अलकापति लाजै ॥
तामधि तीनिहूँ लोककी दीपति, ऐसो बडो गढराज बिराजै ।
वारि पताळसी माची मही, अमरावतिकी छवि ऊपर छाजै १४

(हरिगीत)

मनिमय महल सिवराजके, इमि राजगढमे राजहीं ।
लखि जक्ष किंनर सुर असुर, गंधर्व होसनि साजहीं ॥
उत्तंग मरकतमंदिरनि मधि, बहु मृदंग सु गाजहीं ।
घनसमर मानहुँ घुमडि करि घन,घनपटलगल गाजहीं॥१५॥
मुकुतानिकी झालरनि मिलि, मनि लाल ऊजा छाजहीं ।
सन्ध्यामैं मानहु नखतगन, लाल अंबर राजहीं ॥
जहँ तहाँ ऊरध उठे हीरा, किरनघनसमुदाय हैं ।
मानौ गगन तंबू तन्यो, ताके सपेत तनाय हैं ॥ १६ ॥
भूषन भनत जिहि परसिकैं, मनि पुहुपरागनकी प्रभा ।
प्रभुपीतपटकी प्रगट पावत, सिंधुमेघाकी सभा ॥
मुख नागरिनके राजहीं कहु, फटिक महलन संगमैं ।
लसि अमल कोमल कमल, मानहु गगनगंग तरंगमैं ॥१७॥
आनदसौं सुंदरिनके कहु, इंदुवदन उदोत हैं ।
नभसरितके प्रफुलित कुमुदकुल, कमल विकसित होत हैं ॥
कहु बावरी सर कूप राजत, बद्धमनिसोपान हैं ।
जहँ हंस सारस चक्रवाक, बिहार करत गुमान हैं॥१८॥
कितहू बिसाल प्रबालजालनि, जटित अंगनभूमि हैं ।
जहँ ललितबागनि द्रुम लतनि, मिलि रहे झिलिमिलि झूमि हैं
चंपा चमेली चारु चंदन, चारिहू दिसि देखिए ।
लवली लवंग इलानि केरे, लाखहौं लगि लेखिए ॥१९॥
कहुँ केतकी कदली करौंदा, कुंद अरु करबीर हैं ।
कहुँ दाख दारिम सेब कटहर, तूत अरु जंबीर हैं ॥
कितहूँ कदंब कदंब कहुँ, हिंताल ताल तमाल हैं ।
पीयूष ते मीठे फले, कितहूँ रसाल रसाल हैं ॥ २० ॥
पुन्नाग कहुँ कहुँ नागकेसरि, कितहुँ बकुल असोक हैं ।
कहुँ ललित अगर गुलाब पाटल, पटल बेला थोक हैं॥

चितहँ निहारी माधवा, मिहारहार कहँ रंगै।
जहँ भाँति भाँति विहग रंग, विहग आरम्भौ रंग ॥२१॥

(छप्पै)

रम्मत विहगम रहत, बहुत बहु भाँति बागमहँ।
पोरिउ भीर कपोत, केलि कलकल करत तहँ ॥
मंजुल महरि मयूर, चटुल चातक चकोरगन।
पियत मधुर मकरन्द, करत झंकार भृंगगन ॥
भूषन सुवासु फल फूल जुत, छहु रितु बसत बसंत जहँ।
इमि राजदुग्ग राजत रुचिर, अति सुखिया शिवराज कहँ॥२२॥

(दोहा)

तहाँ राजधानी करी, जीति सकल तुरकानि ॥
शिवसरजा रचि दानमें, कीनो सुजसु जहानि ॥२३॥
देसनि देसनि तें गुनी, आवत जाचन ताहि ॥
तिनमें आयो एक कवि, भूषन कहियतु जाहि ॥२४॥
द्विज कनौज कुल कस्यपी, रतनाकरसुत धीर ॥
बसत त्रिविक्रमपुर सदा, तरनितनूजा तीर ॥२५॥
शिवचरित्र लखि यों भयो, कविभूषनके चित्त ॥
भाँति भाँति भूषननिसों, भूषित करौं कवित्त ॥२६॥
सुकविनहूकी कृपा बहु, समुझि कविनको पंथ ॥
भूषन भूषनमय करत, शिवभूषनमय ग्रंथ ॥२७॥
कुल सुलंक चित्रकूटपति, साहसशील समुद्र ॥
कविभूषण पदवी दई, हृदयरामसुत रुद्र ॥२८ ॥
भूषन सब भूषननिमें, उपमैं उत्तम चाहि ॥
यातें उपमै आदिदै, बरनत सकल सराहि ॥२९॥

ग्रंथारंभ.

(उपमा—दोहा.)

जहाँ दुहुनकी देखिये, सोभा बनत समान ॥
उपमा भूषन ताहि कों, भूषन कहत सुजान ॥१॥
जाको बरनन कीजिए, सो उपमेय प्रमान ॥
जाकी सरवर कीजिए, ताहि कहत उपमान ॥२॥

(उदाहरण—कवित्त)

मिलतही कुरुख चकत्ताको निरखि कीन्हो, सरजा सुरेसज्यों उचित गजराजकों । भूषनको मिसि गैरमिसिल परेकियेको, किए म्लेछ मुरछित करिकै गरानकों ॥ अरे ते गुसलखाने बीच ऐसे उमराय, लै चले मनाय महाराज सिवराजको । दावेदारकों लखि रिसानो दीहदलराय, जैसे गडदार अडदार गजराजको ॥ १ ॥

(सवैया)

साइसभिस्त सुजोधनसो, श्रो दुसासनसो जसवंत निहान्यो ।
द्रोणसो भाऊकरन्न करन्नसो, और सबैदल सौंदल भान्यो ॥
ताहि बिगोइ सिवा सरजा भनै, भूषन ऐलिफतैयो पछान्यो ।
पारथके पुरुषारथ भारथ, जैसें जगाय जयद्रथ मान्यो ॥ २ ॥

(कवित्त)

आवतही दरबार खिलखाने ठरीढार, जापताकरनहार हारे तन मनके । भूषन भनत भौंसिलाके आगें आवतही, बाजे भये उमराय बेजक कराके ॥ साहि रह्यो जकि सिव साहि रह्यो तकि और, चाहि रह्यो चकि बने ब्योंत अनबनके । ग्रीषमको भानुसो खुमानको प्रताप देखि, तारे सम तारे गए मूंदि तुरकनके ॥ ३ ॥

(अनन्वय—दोहा)

जहाँ करत उपमेयको, उपमेयै उपमान ॥
ताहि अनन्वै कहतहैं, भूषन सब मतिमान ॥३॥

(उदाहरण—सवैया)

साहितनै सरजा तुव द्वार, प्रतीदिन दानकि दुंदुभि बाजे ।
भूषन भिच्छुक भीरनको, अति भोजहुते बढ़ि मौजनि साजे ॥
रावनको गन राजनिको गन, साहिनमें नहिं यों छवि छाजे ।
आजु गरीबनिवाज महीपर, तोसो तुँही सिवराज निराजे ॥४॥

(प्रतीप—दोहा)

जहँ प्रसिद्ध उपमानको, करि बरनत उपमेय ॥
तहँ प्रतीप उपमा कहत, भूषन गाय प्रमेय ॥४॥

(उदाहरण—सवैया)

छाइ रही जितही तितही, अतिही छबि छीरधिरंग करारी ।
भूषन सुद्ध सुधानके सोधनि, सोधतसी धरि ओप उज्यारी ॥
यों तमतोमहि चाबिकै चंद, चहूँ दिसि चाँदनि चारु पसारी ।
ज्यों अफजलहि मारि महीपर, कीरति श्रीसिवराज बगारी ॥५॥

(दोहा)

जहँ बरनत उपमेयते, हीनो करि उपमान ॥
तासों कहँ प्रतीप हैं, भूषन सुकवि सुजान ॥ ५ ॥

(उदाहरण—सवैया)

कुंद कहा पयवृंद कहा अरु, चंद कहा सरजा जसु आगे ।
भूषन भानु कृसानु कहा, व खुमानु प्रताप महीतल पागे ॥
राम कहा द्विजराम कहा, बलराम कहा रनमें अनुरागे ।
बाज कहा मृगराज कहा, अति साहसमें सिवराजके आगे ॥६॥

यों सिवराजको राज अडोल, कियो सिव जो व कहाँ ध्रुव भू हे।
कामनादानि खुमान लखे न, कछू दिववृक्ष न देवगऊ हे ॥
भूषन भूपनमें कुलभूषन, भौसिला भूप धरे सब भू हे।
मेरु कछू न कछू दिगदंति न, कुंडलि कोल कछू न कछू है ॥७॥

(उपमेयोपमा—दोहा)

जहाँ परस्पर होत है, उपमेयौ उपमान ॥
भूषन उपमेयोपमा, ताहि बखानत जान ॥ ६ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

तेरो तेज सरजा समथ्थ दिनकरसो हे, दिनकरसोहै तेरे तेजके निकरसा। भौसिला भुवाल तेरो जस हिमकरसो हे, हिमकर-सोहै तेरे जसुके अकरसो ॥ भूषन भनत तेरो हियो रतनाकरमो, रतनाकरो है तेरे हिय सुख करसौ। साहिके सपूत सिव साहिदानि तेरे कर, सुरतरुसों है सुरतरु तेरे करसो ॥ ८ ॥

(मालोपमा—दोहा.)

जहाँ एक उपमेयके, होत बहुत उपमान ॥
ताहि कहत मालोपमा, भूपन सकल सुजान ॥ ७ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

इंद्र जिमि जंभपर वाडव ज्यों अंभपर, रावन सदंभपर रघुकुलराज है। पौन वारिवाहपर संभु रतिनाहपर, ज्यों सहस्रबाँहपर राम द्विजराज है ॥ दावा द्रुमदंडपर चीता मृगझुंडपर, भूपन वितुंडपर जैसे मृगराज है। तेज तमअंसपर कान्ह जिमि कंसपर, त्यों मलेच्छबंसपर सेर सिवराज है ॥ ९ ॥

(ललितोपमा—दोहा)

जहँ समताको दुहुनकी, लीलादिक पद होत ॥
ताहि कहत ललितोपमा, सकल कविनके गोत ॥ ८ ॥

(उदाहरण—दोहा)

वस्तुन निरत इगत जहँ, छनि अनुसरित बखानि ॥
सत्रु मित्र इमि औरऊ, दीपकादिक पर जानि ॥ १० ॥

(कवित्त)

साहितनै सरजा सिवाजी सभा जामधि हैं, मेरवारी सुरकी सभाकौं निदरनि है । भूषन भनत जाके एक एक सिखर तें, केतिक उदोत दिनकरके तरनि हैं ॥ जोन्ह को हसति जोति हीरामनिमंदिरनि, कंदरनिमें छबि कुहूकी उघरनि है । ऐसो ऊँचो दुरग महाबली सिवाजी जामें, नखतावली बहसि दिपावली धरति है ॥ ११ ॥

(रूपक—दोहा)

जहाँ दुहुनको भेदु नहि, बरनत सुकवि सुजान ॥
रूपक भूषन ताहिको, भूषन कहत प्रमान ॥ ९ ॥

(उदाहरण—छप्पै)

कलिजुग जलधि अपार, उदद अधर्म्म उर्म्मिमय ।
लच्छि लच्छमलिच्छ, कच्छ अरु मच्छ मगरचय ॥
नृपति नदीनदबृंद, होत जाको मिलि नीरस ।
भनि भूषन सब भुम्मि घेरि, किन्निय सु अप्प बस ॥
हिंदुवान पुण्यगाहक बनिक, तिनिगाहक जय साहि सुव ।
पतवार बिरद किरवान धरि, जसु जिहाज सिवराज तुव १२
साहिनिमनसमरथ्थ, जासु अवरंग साहि सिर ।
ह्वै जासु अव्वासु, साहि जाको, बिलास थिरु ॥
एदलसाहि उतुब्ब, जासु भुजजुग भूषन भनि ।
पाद म्लेच्छ उमराय, काय तुरकान और गनि ॥
यह रूप अवनि अवतार धरि, जिहि जालिम जग दंडियव ।
सरजा सिव साहस खग्ग गहि, कलिजुग सोइ खल खंडियव १३

भोसिला भूप बली भुवको भुज, भारी भुजंगमसों भरलीनो।
साहितने कुलचंद सिवा, जसचंदमों चंद कियो छबि छीनों॥ १७॥

(उल्लेख–दोहा)

कै बहुतैके एक जहँ, एक वस्तुको देखि॥
बहु विधिकर उल्लेख हैं, सो उल्लेखि उलेखि॥ १७॥

(उदाहरण—सवैया)

एकै कहैं कलपद्रुम है, इमि पूरतुहै सबकी चितचाहै।
एकै कहैं अवतार मनोजको, यों तनमें अति सुंदरता है॥
भूषन एकै कहैं महि इंदु यों, राजु विराजतु बाढ्यौ महा है।
एकै कहैं नरसिंघ है संगर, एकै कहैं नरसिंघ सिवा है॥ १८॥

(कवित्त)

पैज प्रतिपाल भूमिभारको हमाल चहूँ, चक्कको अमाल भयो दंडत जहानको। साहिनको साल भयो ज्वारको जवाल भयो, हरको कृपाल भयो हारके निधानको॥ वीररस ख्याल सिवराज भुवपाल तुव, हाथको बिसाल भयो भूषन बखानको। तेरो करवाल भयो दक्षिणको ढाल भयो, हिंदको दिवाल भयो काल तुरकानको॥ १९॥

(स्मृति–दोहा)

समसोभा लखि आनकी, सुधि आवत जेहि ठौर॥
स्मृति भूषन तासों कहत, भूषन कवि सिरमोर॥ १३॥

(उदाहरण—कवित्त)

तुम सिवराज ब्रजराज अवतार आजु, तुमही जगतकाज पोषत भरत हौ। तुम्हें छाँडि यातें काहि बिनती सुनाऊं मैं, तिहारे गुन गाऊँ अब ढीलक्यों धरत हो॥ भूषन भनत वह कुलमें भयो न पर, गुनाहक छुटाए अब चित्त क्यों हरत हौ। और ब्राह्मननि देखि करत सुदामा सुधि, मोहि देखि काहे सुधि भृगुकी करत हौ॥२०॥

(भ्रम–दोहा.)

आन बातको आनमें, होत जहाँ भ्रमु आनि ॥
तासों भ्रमु सब कहत है, भूषन कविमत जानि ॥ १४ ॥

(उदाहरण—सवैया)

पीय पहारनि पास न जाहु यौं, तीय बहादुरसों कह सोपै ।
कौन बचैहै नवाज तुम्हे, भने भूषण भोंसिला भूपके रोपै ॥
यदि कियो इहो साइस्तखाँ, जसवंतसे भाउकरन्नसे दोपै ।
सिंघ सिवाजिके वीरनसो, गो अमीरनि बाचि गुनीजन घोपै ॥२१॥

(संदेह–दोहा)

कै यह कै वह यों जहाँ, होत आनि सदेह ॥
भूषण सो सदेह है, यामे नहीं सदेह ॥ १५ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

आवत गुसलखाने ऐसे कछू त्योरठाने, जान्यों अवरगजूके प्राननको लेवा है । रसखोट भय एँते अगोट आग्रेमें साते, चौकी नाँकि आइ घरकीनी हद्द रेवाहै ॥ भूषन भनत यह चहू चक चाह कियो, पातसाह चकत्ताकी छातीमह छेवा है । जान्यो न परतु ऐसे काम है करतु कोऊ, गंधरव देवा है कै सिद्ध है कि सेवा है ॥ २२ ॥

(अपन्हुति–दोहा)

आन बात आरोपिए, साँची बात दुराइ ॥
सुद्ध अपन्हुति तिहि कहत, भूषन सब कविराइ ॥१६॥

(उदाहरण—कवित्त)

चमकती चपला न फिरत फिरंगे भट, इद्रको न चाप तरु वैरप समाजको । धाए धुरवान छाए धुरके पटल मेघ, गाजिवो न बाजिवो है दुंदुभि दुराजको ॥ भौंसिलाके डरनि डरानी रिपुरानी कहै, पिय भजो देखि उदो पावसकी साजको । घनकी घटा न गजघटनि सनाह साजे, भूषन भनत आयो सेन सिवराजको ॥ २३ ॥

(हेत्वापन्हुति—दोहा)

जहाँ जुगतिसों आनको, कहिये आन छपाइ ॥
हेतुअपन्हुति कहत है, तासों कविसमुदाइ ॥१७॥

(उदाहरण—दोहा)

सिव सरजाके करलसे, सो न होइ किरवाँन ॥
भुज भुजगेस भुजगनी, भषति पौन अरिप्रान ॥२४॥

(पर्यस्तापन्हुति—दोहा)

वस्तु गोइ ताको धरम, आन वस्तु मैं रोपि ॥
परजस्तापन्हुति कहत, कवि भूषन मतिओपि ॥१८॥

(उदाहरण—दोहा)

काल करत कलिकालमैं, नहि तुरकनको काल ॥
काल करत तुरकानको, सिवसरजा करवाल ॥ २५ ॥

(भ्रातापन्हुति—दोहा)

सक आपनी होत ही, जहँ भ्रमु कीजै दूरि ॥
भ्रातापन्हुति कहत हैं, तह भूषन कवि भूरि ॥१९॥

(उदाहरण—कवित्त)

साहितनै सरजाके भयसों भगाने भूप, मेरुके लुकाने ते लहत जाइ ओक हैं । भूषन तहाँऊ मरहट्टपतिके प्रताप, पावत न कल अति कौतुक उदोत हैं ॥ सिव आयो सिव आयो सकरके आगमन, सुनिकै पगन ज्यो लगत अरिगोत हैं । सिव सरजा न यह सिव है महेस तब, यो के उपदेस यवरसकसे होत हैं ॥ २६ ॥

(सवैया)

एक समै सजिकै सब सैन, सिकारकों आलमगीर सिधाए ।
आवत है सरजा समन्यो, इकओरतै गौलनि बोल जताए ॥
भूषन भो भ्रमु औरगके, सिव भौसिला भूपकी धाक धुकाए ।
धाइकै सिंध कह्यो समुझाइके, रौलनि आइ अचेत उठाए ॥२७॥

(छेकापन्हुति–दोहा.)

जहाँ औरकी सक करि, साँच छपावत बात ॥
छेकापन्हुति कहत हैं, भूषन मतिअवदात ॥२०॥

(उदाहरण—दोहा)

तिमिरवसहर अरुनकर, आयो सजनी भोर ॥
सिन सरजा चुपरहि सखी, सूरज सुर सिर मौर॥२८॥

(कैतवापन्हुति–दोहा.)

जहँ कैतवछलव्याजमिस, इनसों होत दुराव ॥
कहत कैतवापन्हुतिहि, भूषन कवि सदभाव ॥२१॥

(उदाहरण—दोहा)

दुग्गनलय सरजा प्रबल, जग जीत्यो रनमाँहि ॥
ओरग कहैं दिनानसो, सपन सुनावत ताहि ॥ २९ ॥
सुनि सु उजीरन यों कह्यो, सरजा सिव महाराज ॥
भूषन कहि चकता सकुचि, नहिं सिकार म्रगराज ॥३०॥

(कवित्त)

साहिनके सिछक सिपाहिनके पातसाह, सगरमैं सिंघकैसे जिनके सुभाउ है। भूषन भनत सिवसरजाकी धाकै ते यै, काँपत रहत चित गहत न चाउ है ॥ अफजलकी अगति साइस्तखाकी अपति, बहलोलकी निपति सो डरे उमराउ है । पकी मतौ करिकै मलेच्छ मनसब छोडि, मक्काहीके मिसि उतरत दरियाउ है ॥ ३१ ॥

(उत्प्रेक्षा–दोहा)

आन बातको आनमैं, जहँ संभावन होइ ॥
वस्तु हेतु फलजुत कहत, उत्प्रेक्षा है सोइ ॥२२॥

(उदाहरण—सवैया)

दानव आयो दगा करि जावली, दीह भयारो महामद भार्यो ।
भूपन बाहुबली सरजा हि सुँ, भेंटिवेकों निरसक पधार्यो ॥

बीछूके घाय गिरे अफजलहि, ऊपर ही सिवराज निहार्‍यो ।
दाबियों बैठ्यो नरिंद अरिंदहि, मानो मयंद गयंद पछार्‍यो ॥३२॥
साहितनै सिवराहि निसामे, निसाँक लियो गढसिंह सुहानो ।
राठिवरानको संहार भयो, भिरिकै सिरदार गिर्‍यो उदैभानो ॥
भूषन यों घमसान भो भूतल, घेरत लोथिनि मानो मसानो ।
ऊँचे सुछज्ज छटा उचटी, प्रगटी परभा परभातकी जानो ॥३३॥

(कवित्त)

दुरजनदार भजि भजिकै सलार चढी, उत्तर पहार डरि सिवाजी नरिंद तें । भूषन भनत बिनभूषन बसन सनै, भूषन पियासन है नाहनिके निंद तें ॥ बालक अयाने बाट बीचही बिलाने, कुम्हिलाने मुखकोमल अमल अरविंद तें । दृगजल कज्जल कलित बढ्यो मानो दूजो, सोतहै तरनितनूजाको कलिंद तें ॥ ३४ ॥

(दोहा)

महाराज सिवराज तुव, सुधाधवल ध्रुवकित्ति ॥
छबिछटानिसों छुहतिसी, छितिअंबर दिगभित्ति ॥ ३५ ॥

(कवित्त)

लूट्यो खान दौरा जोरावर सफजंग, अरु ल्योपार सलबराँ मनहु अमाल है । भूषन भनत लूट्यो पूनामें माइलखान, गढनिमे लूट्यो त्यों गढोइनिको जाल है ॥ हेरि हेरि कूटि सलहेरि बीच सरदार, घेरि घेरि लूट्यो सब कटक कराल है । मानों हय हाथी उमराव करि साथी, अवरंग डरि सिवाजीपै भेजत रसाल है ॥ ३६ ॥

(दोहा)

दुवन सदन सबके बदन, सिव सिव आठों जाम ॥
निज बचिबेकों जपत जनु, तुरकौ हरको नाम ॥ ३७ ॥

(दोहा)

मानौ इत्यादिक बचन, आवत नहि जिहिं ठौर ॥
उत्प्रेच्छा गनि गुपतिसौं, भूषन भनत अमोर ॥ २३ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

देखत उचाई उदरतिपाग सूधी राह, चोपहूमै चढेते जे साहस निकेत है । सिवाजी हुकुम तेरो पाइ पैदल निसल, हेरि परनालेसेहू जीते जिनु खेत है ॥ सावन भदौही भारी कुहूकी अध्यारी चढि, दुग्गपर जात मावलावल सचेत है । भूषन भनत ताकी बातमै बिचारी तेरे, परताप रविकी उज्यारी गढ लेत है ॥ ३८ ॥

(दोहा)

और गढोई नदी नद, सिवगढपाल दुन्याव ॥
दौरि दौरि चहु ओर ते, मिलत आनि यह भाव ॥३९॥

(रूपकातिशयोक्ति—दोहा)

ग्यान करत उपमेयको, जहँ केवल उपमान ॥
रूपकातिसयउकति तहँ, भूषन कहत सुजान ॥२४॥

(उदाहरण—कवित्त)

वासवसे बिसरत बिक्रमकी कहा चली, बिक्रम लखत बीर बखत बिलदके । जाके तेजवृद सिवाजी नरिंदम सरद, भालमकरद कुलचद साहिनदके ॥ भूपन भनत जाके बैरी बनिताननेन होत अचरिज घर घर दुखदंदके । कनकलतानि इदु इदु-निमैं अरविंद, झरैं अरविंदनि तै बुद मकरंदके ॥ ४० ॥

(भेदकातिशयोक्ति—दोहा)

जहँ तहँ आनहि भाँतिके, बरनैं बात कछूक ॥
भेदकातिसयउकुति सो, भूषन कहत अचूक ॥२५॥

(उदाहरण—कवित्त)

श्रीनगर नयपाल जुमिलाके छितपाल, भेजत रसाल चौर गूढ सुरी वाजकी। मेवार ढूंढार मारवार औ बुंदेलखंड, झारखंड बाँधौ धनी चाकरी इलाजकी ॥ भूपन जे पूरब पछाँह नरनाह ते वै, ताकत पनाह दिल्लीपति सिरताजकी । जगतको जैतवार जीत्यो अवरंगजेब न्यारी रीति भूतल निहारी सिवराजकी ॥ ४१ ॥

(अक्रमातिशयोक्ति–दोहा)

जहाँ हेतु अरु काज मिलि, होत एक ही साथ ॥
अक्रमातिसयउक्ति सो, कहि भूपन कविनाथ ॥ २६ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

उद्धत अपार तुव दुंदुभीधुकार साथ, लंघै पारावार वृंद वैरी बाल वनके ॥ तेरे चतुरंगके तुरंगनके रंगे रज, साथही उड़ात रजपुंज है परनके ॥ दच्छिनके नाथ सिवराज तेरे हाथ चढ़ै, धनुखके साथ गढ कोट दुरजनके । भूपन असीसैं तोहि करत कसीसैं पुनि, बाननके साथ छूटे प्रान तुरकनके ॥ ४२ ॥

(चचलातिशयोक्ति–दोहा)

जहाँ हेतु चर चाहिमें, काज होत ततकाल ॥
चचलातिसयउक्ति सो, भूपन कहत रसाल ॥ २७ ॥

(उदाहरण—दोहा)

आयो आयो सुनतही, सिव सरजा तुव नाँउ ॥
वैरिनारिदृगजलनिसों, बूडि जात अरिगाँउ ॥ ४३ ॥

(अत्यतातिशयोक्ति–दोहा)

जहाँ हेतु ते प्रथम हीं, प्रगट होत है काज ॥
अत्यतातिसयोक्ति सो, कहि भूपन कविराज ॥ २८ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

मगनमनोरथके प्रथमही दानी तोहि, कामतरु कामधेनुसो गनायतुहैं । याते तेरे गुन सब गाइ को सकतु कवि, बुद्धिअनुसार तऊ कछु गाइयतुहै ॥ भूषन कहे यों साहितने सिवराज निज, बखत बढाइ करि तोहि ध्याइयतुहे । दीनताकों डारि ओ अधीनता निडारि दीह, दारिदको मारि तेरे द्वार आइयतुहै ॥ ४४ ॥

(दोहा)

कवि तरुवर सिव सुजस सर, सींचे अचरज मूल ॥
सफल होत है प्रथम हीं, पाछे प्रगटे फूल ॥ ४५ ॥

(सामान्यविशेष—दोहा)

कहिवे जह सामान्य है, कहैं तहाँ जु विशेष ॥
सो सामान्यविशेष है, बरनत सुकवि अशेष ॥२९॥

(उदाहरण—दोहा)

और नृपति भूषन कहै, करै न सुगमा आज ॥
साहितने सिव सुजस तो, करै कठिनऊ काज ॥४६॥

(तुल्ययोगिता—दोहा)

तुल्यजोगिता धरम जहँ, बरननको है एक ॥
कहू अवर्ननको कहत, भूषन सुकवि विवेक ॥३०॥

(उदाहरण—कवित्त)

चढत तुरग चतुरग साजि सिवराज, चढत प्रताप दिनकर अति जगमै । भूपन चढत मरहट्टनिके चित चाव, खग्ग खुलि चढत है अरिनके अगमै ॥ भोंसिलाके साथ गढ कोट है चढत, अरिजोट है चढत एकु मेरुगिरिशृंगमे । तुरकानगन व्योमजान है चढत, विमान है चढत बदरग अवरगमै ॥ ४७ ॥

(दोहा)

सिव सरजा भारी भुजनि, भुवभर धन्यो सभाग ॥
भूषन अब निहचिंत है, सेसनाग दिगनाग ॥४८॥

(दीपक—दोहा.)

धर्न्य अवर्न्यनको धरमु, जहँ बरनत हैं एक ॥
ताको दीपक कहत हैं, भूषन सुकवि बिबेक ॥३१॥

(उदाहरण—सवैया)

कामिनि कंतसों जामिनि चंदसों, दामिनि पावस मेघ घटासों ।
कीरति दानसों सूरति ज्ञानसों, प्रीत बड़ी सनमान महासों ॥
भूषन भूषनसों तरनी, नलिनी नव पूषन देव प्रभासों ।
जाहिर चारिहुँ ओर जहाँन, लसै हिंदुवान खुमान सिवासों ॥४९॥

(आवृत्तदीपक—दोहा)

दीपकपदके अर्थ जहँ, फिरि फिरि करत बखान ॥
आवृत्तदीपक कहत हैं, भूषन कविमत जान ॥ ३२ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

अटल रहे हैं दिग्ग अंतनि के भूप धरि, रैयतिको रूप निज देस पेम करिकै । राना रह्यो अटल बहाँना धरि चाकरीको, बाना तजि भूषन भनत गुन भरिकै ॥ हाडा राठोर औ कछवाहे गौर और रहे, अटल चकत्ताको चमाऊ धरि डरिकै । अटल सिवाजी रह्यो दिल्ली-को निदरि धीर, धरि ऐंड धरि तेग धरि गढ धरिकै ॥ ५० ॥

(सवैया)

मद जलधरन द्विरदबल लागत, बहु जलधरन जलद छबि साजई ।
भूमिधरन फनपति बिलसत अति, तेजधरन ग्रीषम रबि छाजई ॥
खग्गधरन सोभा तहँ राजत, रुचि भूषन गुनधरन सभा जई ।
दिल्लिदलन दच्छिनदिसि थंभन, ऐंडधरन सिवराज बिराजई ॥ ५१ ॥

(प्रतिवस्तूपमा—दोहा)

वाक्यनको जुग होत जहँ, एकै अर्थ समान ॥
जुदो जुदो करि भाषिये, प्रतिवस्तूपमा जान ॥३३॥

(उदाहरण—सवैया)

देत तुरी गुनगीत सुनेनिन, देत करी गुनगीत सुनाये ।
भूषन भावत भूप न आन, जहान खुमानकी कीरति गाये ॥
मंगनकों भुवपाल घने पै, निहाल करै सिवराज रिझाये ।
और रितैं वरसैं सरसै पै, वढै नदिया नद पावस आयै ॥९२॥

(दृष्टांत—दोहा)

पदसमूह जुग अर्थ जहँ, प्रतिबिंबितसां होत ॥
ताहि कहत दृष्टांत है, भूषन सुमति उदोत ॥ ३४ ॥

(उदाहरण—दोहा)

सिव औरंगहि जिति सकै, और न राजा राउ ॥
हथ्थिमथ्थपर सिंघबिनु, और न घाले घाउ ॥ ९३ ॥
चाहत निरगुन सगुनको, ग्यानवंत गुनधीर ॥
यहीभाँति निरगुन गुनिहि, सिवा निवाजत बीर ॥ ९४ ॥

(निदर्शना—दोहा)

सदृस वाक्य जुग अरथको, करिये एक अरोप ॥
भूषन ताहि निदरसना, कहत बुद्धिदै ओप ॥३५॥

(उदाहरण—सवैया)

मच्छहु कच्छमें कोल नृसिंघमें, वामनमें भनि भूषन जो है ।
जो भ्रगुरामनै जो रघुराममें, जो व कह्यो वलिरामहु को है ॥
बौधमें जो अरु जो कलकी मह, विक्रम ह्वेको आगे सुनो है ।
साहस भूमिअधार सोई अव, श्रीसरजा सिवराज मैं सो है ॥ ९५ ॥

(दोहा)

औरनिको जो जनमु है, सो जाको यक रोज ॥
औरनिको जो राज सो, सिव सरजाकी मौज ॥ ९६ ॥
साहिनसों रन माँडिवे, कीबो सुकवि निहाल ॥
सिव सरजाको ख्याल है, औरनिको जंजाल ॥ ९७ ॥

(व्यतिरेक–दोहा)

सम छवि वाले दुहुनिमें, जहँ बरनत बढि एक ॥
भूषन कविकोविद सकल, ताहि कहत वितरेक ॥३६॥

(उदाहरण—छप्पै)

त्रिभुवनमें परसिद्ध यकु, अरि बलि यह खंडिय ।
यहि अनेक अरिनन्द, निहडि रनमंडल मंडिय ॥
भूषन वह रितु एक, पहुमि पानिपहि नढावत ।
यह छहु रितु निसदिन, अपार पानिप अधिकावत ॥
सिवराज साहिसुव सथ्थ नित, लरत हथ्थि हय लक्ख रह ।
यक्कहि गयंद यक हि तुरग, निमि सुरेंद्र सरिवर करइ ॥ ९८ ॥

(सहोक्ति–दोहा)

वस्तुनिको भासत जहाँ, जनरंजन सह भाय ॥
तहाँ सहोकति कहत हैं, कविकोविदसमुदाय॥३७॥

(उदाहरण–कवित्त)

छूटत उलास आमखास एकसंग छूटे, हरम सरम एकसंग विनु ढगही । नैननत नीर छूटे धीर छूटे एकसंग, छूटे सुख मुखरुचि त्योंहीं विनुरंगही ॥ भूषन बखाँने सिवराज मरदाने तेरे, धाक बिललाने न गहत बल अंगही । दच्छिनके सूवा पाइ दिल्लीके अमीर तजें, उत्तरकी आस जीवआस एकसंगही ॥ ९९ ॥

(विनोक्ति–दोहा)

प्रस्तुत जहँ कछु बात बिन, हेतु वर्न्यको होइ ॥
ताहि कहत विनउक्ति है, भूषन कविमत जोइ ॥३८॥

(उदाहरण—सवैया)

को कविराज बिभूषन होत, बिना कवि साहितनैको कहाये ।
को कविराज सभाजित होत, सभा सरजाके बिना गुन गाये ॥
को कविराज भुवालनि भावतु, भौंसिलाके मनमैं बिन भाये ।
को कविराज चढै गजराज, सिवाजीकी मौज मही बिनु पाये॥६०॥

(दोहा)

सोभमान पर जग किए, सरजा सिवा खुमान ॥
साहिनसों बिनडर अगड, बिन गुमानको दान॥६१॥

(समासोक्ति–दोहा)

बर्नन कीजै आनको, ज्ञान आनको होय ॥
समासोक्ति भूषन कहत, कविभूषन सबकोय॥ ३९ ॥

(उदाहरण—दोहा)

बडो डील लखि पीलको, सबनि तज्यो बनथान ॥
धनि सरजा तू जगतमैं, ताको हऱ्यौ गुमान ॥ ६२ ॥
तुही साँच द्विजराज है, तेरी कला प्रमान ॥
तोपर सिव किरपा करी, जान्यो सकल जहाँन ॥६३॥

(परिकर और परिकराकुर—दोहा)

साभिप्राय विशेषननि, भूषन परिकर जानि ॥
साभिप्राय विशेष तैं, परिकरअकुर मानि ॥४०॥

(उदाहरण—कवित्त)

नवैगा न सगुहानै नहलोलखाँ अयाने, भूषन बखानै दिल आनि

मेरा घरजा । तुजतै सबाई तेरा भाई सल्हेर पाम, थदी निया साथरा न कोइ वीर गरजा ॥ साहिनको साहिमी औरंगहूके दीने गउ, जिमका तूँ चाकर ओ जिमकी है परजा । माहिता रुलन अफजल्ला मलन, दिल्लीदलका दलन सिवराज आया सरजा ॥६४॥

(दोहा)

सूरसिरोमनि सूरकुल, भूपन मिन मकरंद ॥
क्यों करिकै ओरंग जिते, तुठि मलेच्छकुलचद॥ ६५ ॥
भूपन भनि सबही सबहि, जीत्योहो जुरि जग ॥
क्यों जीततु सिवराजसौं, अब अधक अनरग ॥ ६६ ॥

(श्लेष—दोहा)

एक वचनमैं होत जहँ, बहु अर्थनिको ग्यान ॥
श्लेष कहत हैं ताहिको, भूपन सकल सुजान ॥४१ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

सीता सग सोहति लछमन सहाइ जाको, भूपर भरत नाम भाई नीति चारु है । भूपन भनत कुलि सूरकुलभूपन हैं, दासरथी सब जाके भुज भुव भारु है ॥ अरि लक तोर जोर जाके साथ बानर हैं, सिंधु रहे बाँधे जाके दलको न पार है । तेगहिकै भेट जौन राकस मरद जान्यो, सरजा सिवाजी रामहीको अवतार है॥ ६७ ॥ देखत सरूपको सिहात न मिलन काज जग जीतिवेको जामे रीति छल बलकी । जाके पास आवै ताहि निधर करत नेगि, भूपन भनत जाकी सगति न फलकी ॥ कीरति कामिनी राख्यो सरजा सिवाको एक, बसकै सकै न वसकरनी सकल्की । चचल सरस एक काहूपै न रहै दारी, निलुका समान सूबादारी दिल्लीदलकी ॥६८॥

(अप्रस्तुतप्रशसा—दोहा)

प्रस्तुति लीन्हे होइ जहाँ, अप्रस्तुतपरसस ॥
अप्रस्तुतपरसस सो, कहत सुकविअवतस ॥ ४२ ॥

(उदाहरण—दोहा)

हिंदुनिसों तुरकिनि कहै, तुमकों सदा सतोसु ॥
नहिंन तिहारे पतिन पर, सिव सरजाको रोसु ॥ ६९ ॥
अरितिय भिल्लिनिसों कहै, घन वन जाइ थकत ॥
सिव सरजासों वैर नहिं, सुखी तिहारे कत ॥ ७० ॥

(पर्यायोक्ति—दोहा)

वचननकी रचना जहाँ, बर्ननीय परजानि ॥
परजायोकति कहत है, भूषन ताहि बखानि ॥४३॥

(उदाहरण—कवित्त)

महाराज सिवराज तेरे वैर पेखियतु, घर वन व्हैरहे हरम हवसीनके । भूखन भनत दामनगर जँजारपर, तेरेवैर बाहबहे रुधिरनदीनके ॥ सरजा समथ्थवीर तेरे वेर बीजापूर, वैरी वैयरनिकर चीह्न न चुरीनके । तेरे वेर देखियतु आगरे दिल्लीमें विनु, सिंदुरके विंदु मुखइंदु जवनीनके ॥ ७१ ॥

(व्याजस्तुति—दोहा)

निंदामें स्तुति कढति जहाँ, स्तुतिमें निंदा होइ ॥
व्याजस्तुति तासों कहत, भूपन कवि सब कोइ ॥ ४४ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

पीरी पीरी हुँवै तुम देतहो मगाय हमें, सुवरन हमसों परखिकरि लेत हो । एक पलहींमें लावै रूपनिसों लेत लोग, तुम राजा-व्हैके लाखें देवेको सचेत हौ ॥ भूपन भने यों महाराज सिवराज वडे, दाँनी दुनीऊपर कहाए कौन हेत हौ । रीझि हँसि हाथी हमें सबकोऊ देत, कहा रीझकर हाथी एक तुमही तौ देत हौ ॥७२॥
तूंतौ रात्योदिन जग जागत रहत वोऊ, जागत रहत रात्योदिन वनरत है । भूपन भनत तू विराजै रजभर्‍यो वोऊ, रजभरे देहनि

दरीम निवरत हैं ॥ तूँ सूरगनको विदारि विहरत यो सूर, मंडलै निदारि सुरलोक निहरत हैं । काहे ते सिवाजी गाजी तेरोई सुजस होत, तोसों अरिवर सरिवर भी करत है ॥ ७३ ॥

(आक्षेप—दोहा.)

पहिले कहिए बात कछु, तामों पुनि प्रतिषेध ॥
ताहि कहत आछेप हैं, भूषन सुकवि सुमेध ॥ ४५ ॥

(उदाहरण—सवैया)

जाइ भिरो न भिरे बचिहौ, भौं भूषन भोंसिला भूप सिवासौं ।
जाइ दरी न दुरौ दुनियौ, तजिकै दरिया उलघौ लघुतासौं ॥
सीछन फाज उजीराको, फर्टै बोल यों एदिलसाहि सभामों ।
छूटिगयो तो गयो परनालो, सलाहनी राह गहौ सरजासौं ॥ ७४ ॥

(विरोध—दोहा)

द्रव्यक्रिया गुनमें जहाँ, उपजत काजविरोध ॥
तासों कहत विरोध है, भूषन सुकवि सुबोध ॥ ४६ ॥

(उदाहरण—सवैया)

श्रीसरजा सिव तो जस सेतसों, होत हैं साहिनके मुख कारे ।
भूषन तेरे अरुन्न प्रताप, सपेद लखे कुनरा नृपसारे ॥
साहितने मुखकोप अगिनमों, वैरी जरे सब पानिपवारे ।
एक अचभव होत बडो, तिन ओट गहें अरि जात न जारे ॥७५॥

(विरोधाभास—दोहा)

जहँ विरोधसो जानिये, साच विरोध न होइ ॥
ताहि विरोधाभास कहि, वरनत है सब कोइ ॥ ४७ ॥

(उदाहरण—सवैया)

दच्छिननायक एक तुही, भुवभामिनिको अनकूल व्है भावै ।
दीनदयाल न तोसो दुनी, अरु म्लेच्छके दीनहि मारि मिटावै ॥

श्रीसिवराज भनै कवि भूषन, तेरे सरूपही कोउ न पावै ।
सूरके बसमैं सूरसिरोमनि, ह्वैकरि तूँ कुलचट कहावै ॥ ७६ ॥

(विभावना—दोहा)

भयो काज बिनहेत हूँ, बरनैं हैं जिहि ठौर ॥
तहँ बिभावना होतिहै, भाषत कविसिरमौर ॥ ४८ ॥

(उदाहरण—सवैया)

वीर बडे बडे मीर पठान, खरो रजपूतनको गनु भारो ।
भूषन आइ तहाँ सिवराज, लियो हरि औरगजेबको गारो ॥
दीनो कुज्जाय दिलीपतिको, अरु कीनो उजीरनको मुह कारो ।
नायो न माथहि दच्छिननाथ, न साथमें सेन न हाँथ हथ्यारो॥७७॥

(दोहा)

साहितनै सिवराजकी, सहज टेव यह ऐन ॥
अनरीझे दारिद हरै, अनखीझे अरिसैन ॥ ७८ ॥

(द्वितीयविभावना—दोहा)

जहाँ प्रगट भूषन भनत, हेतु काज तैं होइ ॥
सो बिभावना औरऊ, कहत सयाने लोइ ॥ ४९ ॥

(उदाहरण—दोहा.)

आचरज भूषन वढ्यो, श्रीसिवराज खुमान ॥
तुव कृपान ध्रुव धूमतै, भयो प्रताप कृसान ॥ ७९ ॥

(असंभव—दोहा)

अनहूवेकी बात कछु, प्रगट भई सो जानि ॥
जहाँ असंभव बरनियै, सोई नाम बखानि ॥ ५० ॥

(उदाहरण—कवित्त)

जसनके रोज यों जलूस गहि बैठ्यो जोव इन्द्र आवै सोऊ लागै

औरंगकी परजा । भूषन भनत तहँ गरज्यो सिवाजी गाजी, जिनको तुरुक देखि को न हिय लरजा ॥ डान्यो न सलाम मान्यो साहिको इलाम धूम, धामके न मान्यो रामसिंह हूको बरजा । जासों बैर करि भूप बचै न दिगंत ताके, दंत तोरि तखत तरेतें आयो सरजा॥८०॥

(दोहा)

औरंग यों पछिताय मन, करतो जतन अनेक ॥
सिवा लेइगो दुरग सब, को जानै निसि एक ॥ ८१ ॥

(असंगति–दोहा.)

हेतु अनतहीं होत जहँ, काजु अनतहीं होइ ॥
ताहि असंगति कहत हैं, भूषन सुमति समोइ ॥५१॥

(उदाहरण—कवित्त)

महाराज सिवराज चढत तुरंगपर, ग्रीवा जात नैकर गनीम अतिबलकी । भूषन चलत सरजाकी सेन भूमिपर, छाती दरकति खरी अखिल खलनकी ॥ कियो दौरि घाउ उमरावन अमीरनपर, गईं कटि नाक सगरेई दिल्लीदलकी । सूरति जराई कियो दाहु पातसाह उर, स्याही जाय सब पातसाही मुख झलकी ॥ ८२ ॥

(विषम–दोहा.)

कहाँ बात यह कहाँ वह, यों जब करत बखान ॥
ताहि विषम भूषन कहत, भूषनसुकवि सुजान ॥ ५२ ॥

(उदाहरण—सवैया)

जावलि बार सिंगारपुरी, औ जवारिको रामके नैरिको गाजी ।
भूषन भौंसिला भूपतिनें, सब मारियों दूरि किये जिमि पाजी ॥
बैर कियो सरजासों खवासखाँ, क्यों डरसैन बिजैपुर बाजी ।
बापुरो एदिलसाहि कहाँ कहाँ, दिल्लीको दावनगीर सिवाजी ॥८३॥
लै परनालो सिवा सरजा, करनाटकलौं सब देस बिगूचे ।

वैरिनके भगे बालकवृन्द, भने कवि भूषन दूरि पहूँचे ॥
नाँघत नाँघत घोर घने, बन हारि परे यो कटे मनों कूँचे ।
राजकुमार कहाँ सुकुमार, कहाँ विकरार पहार वे ऊँचे ॥ ८४ ॥

(सम—दोहा)

जहाँ दुहूँ अनुरूपको, करिये उचित वखान ॥
भूषन सम तासों कहत, भूषन सकल सुजॉन ॥५३॥

(उदाहरण—सवैया)

पजहजारिन वीच खराकिय, मै उसका कछु भेद न पाया ।
भूपन यों कहि औरगजेब, उजीरनिसौं मुहसाह रिसाया ॥
कम्मरकी न कटारि दई, इसलामनै गोसलखॉन वचाया ।
जोर सिवा करता अनरथ्थ, भली हुइ हथ्थ हथ्यार न आया ॥ ८५ ॥

(दोहा)

कछु न भयो के तो लन्यो, हान्यो सकल सिपाह ॥
भली करै सिवराजसों, औरग करै सलाह ॥ ८६ ॥

(विचित्र—दोहा)

जहाँ कहत है जतन फल, चित्त चाहि विपरीत ॥
भूपन ताहि विचित्र कहि, वरनत सुकवि सुप्रीत ॥५४॥

(उदाहरण—दोहा)

तै जैसिहहि गढ दए, सिवसरजा जस हेत ॥
लीन्हे कैयौ वरसमें, वार न लागी देत ॥८७॥

(प्रहर्षण—दोहा)

जहँ मनवाछित अर्थते, प्रापति कछु अधिकाइ ॥
ताहि प्रहर्षन कहतहै, भूपन जे कविराइ ॥५५॥

(उदाहरण—कवित्त)

साहितनै सरजाकी कीरतिसों चार्यों ओर, चाँदनी वितान छिति-

ठौर छाइयतु है । भूषन भनत ऐसो भूपति भौंसिला को है, जाके द्वार भिक्षुक सदाई भाइयतु है ॥ महादानी सिवाजी खुमानजी ज हानपर, दानके प्रमान जाके यों गनाइयतु है । रजतकी हौंस किए हेम पाइयतु जासों, हयनिकी हौंस किये हाथी पाइयतु है ॥ ८८ ॥

(विषादन—दोहा)

जहँ चितु चाहे अरथको, उपजै काज विरुद्ध ॥
ताहि विषादन कहत हैं, भूषन बुद्ध विबुद्ध ॥ ५६ ॥

(उदाहरण—सवैया)

दारहि मारि मुरादको बाँधिकै, सगर साह सुजा विचलाए ।
भूपनवै जसि दिल्लियि डोलति, औरउ देस घने अपनाए ॥
बैर कियो सरजा सिवसो यक, औरगके न भये मनभाए ।
फौज पठाइहुती गढ लेनकों, गाँठिहुके गढ कोट गँवाए ॥ ८९ ॥

(दोहा)

महाराज सिवराज तुव, बैरी तजि रसरुद्र ॥
बचियेको सागर तिरे, बूडे सोकसमुद्र ॥९०॥

(अधिक—दोहा)

जहाँ बडे आधार तें, बरनत बढि आधेय ॥
ताहि अधिक भूषन कहत, जानि सुगाँह प्रमेय ॥५७॥

(उदाहरण—दोहा)

सिव सरजा तुव हाथको, नहिं बखान करि जान ॥
जाको बासी सुजसु सब, त्रिभुवनम न समान ॥ ९१ ॥

(अन्योन्य—दोहा)

अन्योन्या उपकार जहँ, यह वर्णन ठहराइ ॥
ताहि अन्योन्या कहत हैं, अलकार कविराइ ॥५८॥

(उदाहरण—सवैया)

तो करसों छिति छाजत दाँन है, दाँनहुसो अति तो कर छाजे ।
तेंहि गुँनीकि बढाइ सजे अरु, तेरि बढाइ गुनी सब साजे ॥
भूषन तोहिसों राजु बिराजतु, राजसों तूँ सिवराज बिराजे ।
तो बलसो गढकोट गजे अरु, तूँ गढकोटनिके बल गाजे ॥ ९२ ॥

(विशेष—दोहा)

बरनत है आधेयको, जहँ बिनु हूँ आधार ॥
ताहि विशेष बखाँनिही, भूषन कविसिरदार ॥५९॥

(उदाहरण—दोहा)

सिव सरजासों जग जुरि, चद्रावत रजवत ॥
राउ अमरगो अमरपुर, समर रहो रजतत ॥९३॥

(व्याघात—दोहा.)

ओर काज करता जहाँ, करै औरई काज ॥
ताहि कहत व्याघात है, भूषन कवि सिरताज ॥६०॥

(उदाहरण—सवैया)

ब्रह्म रचै पुरषोत्तम पोषत, सकर सृष्टि सघारनहारे ।
तूँ हरिको अवतारु सिवा, नृपकाज सवारै सबै हरिवारे ॥
भूषन यों अवनी जवनी कहैं, कोउ कहे सरजासों हहारे ।
तूँ सबको प्रतिपालनहार, बिचारे भतार न मारि हमारे ॥९४॥

(गुफ—दोहा)

पूरब पूरब हेतु कै, उत्तर उत्तर हेत ॥
या विधि धारा बरन कवि, गुफ कहत बानेत ॥६१॥

(उदाहरण—सवैया)

सकरकी किरपा सरजापर, जोर बढी कवि भूषन गाई ।

ता किरपासौं सुबुद्धि वढी भुव, भौंसिला साहितनैंकी सवाई ॥
रोज सुबुद्धिसौं दान बढ्यौं, अरु दानसौं पुन्यसमूह सदाई ।
पुन्यसो बाढ्यो सिवाजि खुमान, खुमानसौं वाढि जहाँनभलाई ९९

(दोहा)

सुजसु दान अरु दान धन, धन उपजै किरवान ॥
सो जगमैं जाहिर करी, सरजा सिवा खुमान ॥ ९६ ॥

(एकावली–दोहा.)

प्रथम वरनि जहँ छोडिये, जहाँ अरथकी पाँति ॥
वरनत एकावलि अहे, कवि भूषन इहि भाँति ॥६२॥

(उदाहरण–हरिगीत)

तिहु भुवनमें भूषन भनै, नरलोक पुन्य सु साजमैं ।
नरलोकमैं तीरथ लसैं, महि तीरथोंकि समाजमैं ॥
महिमा वडी महिमैं भली, महिमैं महारज लाजमैं ।
रजलाज राजति आजु है, महराज श्रीसिवराजमैं ॥ ९७ ॥

(मालादीपक और सार–दोहा)

दीपक एकावलि मिले, मालादीपक होइ ॥
उत्तर उत्तर उतकरष, सार कहतहैं सोइ ॥६३॥

(उदाहरण दीपकको—कवित्त)

मन कवि भूषनको सिवकी भगति जीत्यो, सिवकी भगत जीति सा धुजन सयानै । साधुजन जीते या कठिन कलिकाल, कलिकाल जीते महावीर राजनि महिमाने ॥ जगतमें जीते महावीर महाराजनिते, महाराज वावनहू पातसाहि लैवाने । पातसाहि वावनौं दिल्लीके पातसाहि, दिल्लीपातसाहि हिंदुपति पातसाहि सिवानै ॥ ९८ ॥

(उदाहरण सारको—सवैया)

आदि वडी रचना है विरंचिकी, जामे रह्यो रचि जीव जडो है

ता रचनामैं सुजीव बडो अति, काहेते ता उर ग्यान गडो है ॥
जीवनिमैं नरलोग बडो, कवि भूषन भाषत पेज अडो है ।
है नरलोगमैं राज बडे, सब राजनिमैं सिवराज बडो है ॥ ९९ ॥

(यथासंख्य—दोहा)

क्रमसौं कहि तिनके अरथ, क्रमसो बहुरि मिलाइ ॥
यथासंख्य तासो कहत, भूषन जे कविराइ ॥ ६४ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

जेई चहो तेई गहो सरजा सिवाजी देस, सबै दले दुवन हते जे
बडे उरके । भूषन भनत भौंसिलासों अब सनमुख, कोऊ ना ल-
रैया है धरैया धीर धुरके ॥ अफजलखान रसामें जमान फत्तेखान,
कूटे लूटे जूटे जे उजीर बीजापुरके । अमर सुजान मोहकम बह-
लोलखान, खाँडे छाँडे डाँड उमराय दिल्लीसुरके ॥ १०० ॥

(पर्याय—दोहा)

जहाँ अनेकनिमें रहे, अस्थिर है करि एक ॥
ताहि कहत परयाय है, भूपन सुकवि विवेक ॥६५॥

(उदाहरण—दोहा)

जीति रही अवरंगमे, सबै छत्रपति छाँडि ॥
तजि ताहकों अब रही, सिव सरजा कर माँडि॥१०१॥

(कवित्त)

कोट गढ देकै माल मुलकमैं बीजापुरी, गोलकुंडावारो पीठेहीकों
सरकतु है । भूषन भनत भौंसिला भुवाल भुजबल, रेवाहीके पार
अवरंग हरकतु है ॥ पेसकसै भेजत इरान फिरंगानपति, उनहूके
उर याकी धाक धरकतु है । साहितने सिवाजी खुमान या जहाँ-
नपर, कौने पातसाहके न हिये खरकत है ॥ १०२ ॥

ता निरपासौं सुबुद्धि बढी भुव, भौंसिला साहितनैवी सवाई ॥
रोज सुबुद्धिसौं दान चढ्यो, अरु दानसौं पुन्यसमूह सदाई ।
पुन्यसौं बाढ्यो सिवाजि खुमान, खुमानसौं बाढि जहाँनभलाई ९५

(दोहा)

सुजसु दान अरु दान धन, धन उपजै किरवान ॥
सो जगमें जाहिर करी, सरजा सिवा खुमान ॥ ९६ ॥

(एकावली–दोहा)

प्रथम धरनि जहँ छोडिये, जहाँ अरथकी पाँति ॥
बरनत एकावलि अहै, कवि भूषन इहि भाँति ॥६२॥

(उदाहरण—हरिगीत)

तिहु भुवनमें भूषन भनै, नरलोक पुन्य सु साजमैं ।
नरलोकमें तीरथ लसैं, महि तीरथोंकि समाजमैं ॥
महिमा बडी महिमें भली, महिमें महारज लाजमैं ।
रजलाज राजति आजु है, महराज श्रीसिवराजमैं ॥ ९७ ॥

(मालादीपक और सार–दोहा)

दीपक एकावलि मिले, मालादीपक होइ ॥
उत्तर उत्तर उतकरष, सार कहतहै सोइ ॥६३॥

(उदाहरण दीपकको—कवित्त)

मन कवि भूषनको सिवकी भगति जीत्यो, सिवकी भगत जीति साधुजन सयानै। साधुजन जीते या कठिन कलिकाल, कलिकाल जीते महावीर राजनि महिमानै ॥ जगतमे जीते महावीर महाराजनिते, महाराज बावनहू पातसाहि लेवानै । पातसाहि बावनौ दिल्लीके पातसाहि, दिल्लीपातसाहि हिंदुपति पातसाहि सिवानै ॥ ९८ ॥

(उदाहरण सारको—सवैया)

आदि बडी रचना है बिरंचिकी, जामें रह्यो रचि जीव जडो है

ता रचनामै सुजीव बडो अति, काहेते ता उर ग्यान गडो है ॥
जीवनिमें नरलोग बडो, कवि भूषन भाषत पैज अडो है ।
है नरलोगमै राज बडे, सब राजनिमै सिवराज वडो है ॥ ९९ ॥

(यथासख्य—दोहा)

क्रमसौ कहि तिनके अरथ, क्रमसौं बहुरि मिलाइ ॥
यथासख्य तासो कहत, भूषन जे कविराइ ॥ ६४ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

जेई चहौ तेई गहो सरजा सिवाजी देस, सबै दले दुवन हते जे बडे उरके । भूपन भनत भौंसिलासों अब सनमुख, कोऊ ना लरैया है धरैया धीर धुरके ॥ अफजलखान रुसामै जमान फत्तेखान, कूटे लूटे जूटे जे उजीर बीजापुरके । अमर सुजान मोहकम बहलोलखान, खाँटे छाँडे डाँड उमराय दिलीसुरके ॥ १०० ॥

(पर्याय—दोहा)

जहाँ अनेकनिमें रहै, अस्थिर है करि एक ॥
ताहि कहत परयाय है, भूपन सुकवि विवेक ॥६५॥

(उदाहरण—दोहा)

जीति रही अवरगमें, सबै छत्रपति छाँडि ॥
तजि ताहुकों अब रही, सिव सरजा कर माँडि॥१०१॥

(कवित्त)

कोट गढ दैकै माल मुलकमें बीजापुरी, गोलकुडावारो पीछेहीको सरकतु है । भूपन भनत भौंसिला भुवाल भुजबल, रेवाहीके पार अवरग हरकतु है ॥ पेसकसें भेजत इरान फिरगानपति, उनहुके उर याकी धाक धरकतु है । साहितनै सिवाजी खुमान या जहाँनपर, कौने पातसाहके न हिये खरकतु है ॥ १०२ ॥

(परिवृत्ति–दोहा)

एक वातकों दै जहाँ, आन वात को लेत ॥
ताहि कहत परिवृत्ति हैं, भूषन सुकवि सुचेत॥९६॥

(उदाहरण—कवित्त)

दच्छिनधरन धीरधरन खुमान गढ, लेत गढ धरनिसों धरमु दुवारु दै । साहि नरनाहको सपूत महाबाहु लेत, मुलुक महान छीनिसाहिनकों मार दै ॥ समरमें सरजा सिवाजी अरिसैननिको, सारु हरि लेत हिन्दवान सरमार दै । भूषन भौंसिला जय जसको पहार लेत, हरजूको हारु हरगनकों अहार दै ॥ १०३ ॥

(परिसख्य–दोहा.)

अनत वराजि कछु वस्तु जहँ, वरनत एकहि ठौर ॥
ताहि कहत परिसख्य है, भूषन कवि दिलदौर ॥९७॥

(उदाहरण—कवित्त)

अति मतवारे जहाँ छिरदे निहारियतु, तुरगनहीमें चंचलाई परकीति है । भूषन भनत जहाँ पर लगे वाननिमें, कोक पच्छिनिहि माहँ निछुरन रीति है ॥ गुनिगन चोर जहाँ एक चितहीके लोक, ग्र्धै जह एक सरजाकी गुनप्रीति है । कपु कदलीमे बेर वृक्ष वद-रीमे सिवराज, अदलीके राजमै यों राजनीति है ॥ १०४ ॥

(विकल्प–दोहा)

कै यह कै वह कीजियें, जहँ कहनाउति होइ ॥
ताहि विकल्प वखान ही, भूषन कवि सब कोइ ॥९८॥

(उदाहरण—सवैया)

मोरग जाहु कि जाहु कुमाँऊ, सिरीनगरै हु कवित्त वनायै ।
वाँधव जाहु कि जाहु अमेर कि, जोधपुरै कि चितौरहि धायै ॥

जाहु कुतुब्ब कि एदिलपै कि, दिलीसहुपे किमिजाहु बुलाये ।
भूषन गाइ फिरौ महिमै वनिहै, चित चाह सिवाहि रिझाये ॥१०५॥
देसनि देसनि नारि नरेसनि, भूषन यों सिख देंहि दयासों ।
मगन ह्वो मन दूत गहौं जिन, कत तुम्है है अनत महासों ॥
चोट गहौ कि गहौ वनओट कि, फौजकि जोट सहौ प्रभुतासों ।
और करो किन कोट कराद, सलाह बिना वचि हो न सिवासों १०६

(समाधि—दोहा)

और हेतु मिलिकरि जहाँ, होत सुकर अति काज ॥
ताहि समाधि बखानहीं, भूषन जे कविराज ॥६९॥

(उदाहरण—सवैया)

वैरु कियो सिव चाहतु हो, तवलौं अरि बाह्यो कटार कटैठ्यो ।
यौंहि मलेच्छहि छोडे नहीं, सरजा मन तापर रोसमे पैठ्यो ॥
भूषन क्यों अफजल्ल बचै, अटपाउके सिंहको पाँउ उमेठ्यो ।
वीछुके घाय धौं क्योंइ धरक्क है, तौलगि धाय धराधर वैठ्यो ॥१०७॥

(समुच्चय—दोहा.)

एक वारगी जहाँ भयो, बहुत जानिको बध ॥
ताहि समुच्चय कहत है, भूषन देखि प्रबध॥७०॥

(उदाहरण—सवैया)

माँगि पठायो सिवा कछु देसु, उजीर अजाननि बोल गहे ना ।
दौरि लियो सरजा परनालो यों, भूषन जो दिन दोउ लगे ना ॥
धाँकसो खाक बिजेपुर भो, मुख आइगो खान खवासके फेना ।
भै भरकी करकी हरकी धरकी, उर एदिलसाहिकी सेना ॥ १०८ ॥

(दोहा)

वस्तु अनेकनिको जहा, बरनत एकहि ठौर ॥
ताहि समुच्चय कहत है, कोऊ कविसिरमोर ॥७१॥

(उदाहरण—सवैया)

सुँदरता गुरता प्रभुता भनि, भूषन होतिहे आदर जामैं ।
सज्जनता औ दयालुता दीनता, कोमलता झलकै पर जामैं ॥
दान कृपानहुको करिबो, करिबो अभैदानहुको वर जामैं ।
साहिनसों रनटेक विवेक, इते गुन एक सिवा सरजामैं ॥१०९॥

(प्रत्यनीक—दोहा)

जहँ जोरावर सत्रुके, पच्छींपै कर जोर ॥
प्रत्यनीक तासों कहत, भूषन बुद्धिअमोर ॥७२॥

(उदाहरण—सवैया)

लाज धरौ सिवाजीसों लरौ सब, सैयद मीर पठान पठाइकैं ।
भूषन वे गढ कोट निहारे, यहाँ तुम क्यौं मठ तोरे रिसाइकै ॥
हिंदुनकेपतिसों न बसाति, सतावत हिंदुगरीबन आइकैं ।
लीजे कलंक न दिल्लिके बालम, आलम आलमगीर कहाइकैं ११०

(अर्थापत्ति—दोहा)

यह जीत्यो तौ यह कहा, यौं कहनावति होइ ॥
अर्थापत्ति बखानहीं, ताहि सयाने लोइ ॥ ७३ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

सयनमैं साहिनको सुन्दरी सिखावै प्रेम, सरजासों बैर जिनि करौ महाबली है । पेमकसें भेजत निलाइति परतमाल, सुनिकै जिहा-जनि हूवै करनाट थली है ॥ भूषन भनत गढ कोट माल मुलक दै, सिवासौं सलाह राखिये तो बात भली है । जाहि देत दंड तुम डरिकै असंड सोई, दिल्ली दलमलीतौ तिहारी कहा चली है ॥१११॥

(काव्यलिंग—दोहा)

हैं डिढाइवे जो अरथ, ताको करत डिढाव ॥
काव्यलिंग तासों कहत, भूषन जे कविराउ ॥७४॥

(उदाहरण—कवित्त)

साहत लै जीतिए निजामहतिको साहि कीजे, वलक निजामहतिके यदि अरिडारे । भूषन भनत कीजे उत्तरी भुवाल वस, पूरवको लीजिये रमाल गजजाल रे ॥ दच्छिनक नाँहसों सिपाह निज वेरु करि, अवरंगसाहिजू कहाइगे न वारेरे । कैसे सिवा मनु गढ देत अवरंगै गढ, माटे गढपती गढ लीने और रावरे ॥ ११२ ॥

(अर्थांतरन्यास—दोहा)

कह्यो अरथ ताहीलियै, वरी अरथ जहँ होई ॥
सो अर्थांतरन्यास है, भूषन कहि सब कोई ॥ ७५ ॥

(उदाहरण—सवैया)

साहितनै सरजा समरथ्थ, करी करनी धरनीपर नीकी ।
भूलिगे भोजसे विक्रमसे औ, भई बलि बेनकी कीरति फीकी ॥
भूषन भिच्छुक भूप भये, भलि भीख लै केवल भौसिलाहीकी ।
नैमिहि नीच धनेस करे, लखि ऐसियै रीति सदा सिवजीकी ॥ ११३ ॥

(प्रौढोक्ति—दोहा)

जहँ उतकरष अहेतुको, वरनत है करि हेत ॥
प्रौढउकति तासों कहत, भूषन कवि बिरदैत ॥ ७६ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

मानसरवासी हंस वसन समान होत, चंदनसो घस्यो घनसारी न घरीकहै । नारदकी सारदकी हाँसीमें कहाँसी सत, सरदकी सुरसरी कौन पुडरीकहै ॥ भूषन भनत छक्यो छीरधिमें नीद लेत, फेनलपटानो ऐरावतको करी कहै । कैलासमें ईस ईसमीस रजनीस यहाँ, अवनीमें सिवाके न जसको सरीकहै ॥ ११४ ॥

(सभावना—दोहा.)

जहँ यों होइ तो होइ यों, यह संभावन होइ ॥
" ... संभावना, भूषन कवि सबकोइ ॥ ७७ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

लोमससरीरसी आयु होइ कौनऊ उपाउ, तापर कवच नो नरन यारो धरिये। तापर जो हूजिए सहसबाहु तापर, सहसगुनसाहस जो भीमहूते करिये॥ भूषन कहै यों अवरंगजूसों उमराव, नाहक कही तो जाय दच्छिनमें मरिये। चलैना कछू इलाज भेजियतु मेही काजु, ऐसी होइ साजु तो सिवासों जाइ लरिये॥ ११५॥

(मिथ्याध्यवसिति—दोहा.)

झूठ अर्थकी सिद्धिको, झूठो बरनत आन॥
मिथ्याध्यवसिति ताहिको, भूषन कहत सुजान॥७८॥

(उदाहरण—दोहा)

पगरनमें चल यों लसैं, ज्यों अगर पग पैन।
भुजमो भुजसो मेरुसो, सिवसरजाको चैन॥११६॥

(उल्लास—दोहा)

एकहिके गुन दोप तें, औरेके गुन दोप॥
बरनत है उल्लास सो, सकल सुकवि करि तोप॥७९॥

(उदाहरण—सवैया)

काज मही सिवराज बली, हिंदुवान बढाइवेकैं उर ऊटै।
भूषन भू निरम्लेच्छ करी, चहै म्लेच्छनि मारिवेको रन जूटै॥
हिंदु बचाइ बचाए इही, अमरेस चदावतलौं कोउ टूटै।
चंद अलोकनि लोक सुखी, यहि कोक अभाग जो सोक न छूटै॥११७॥

(दोषेण गुणो यथा—कवित्त)

देस दहनट्ट कीने लूटिके खजाने लीने, बचे न गढोई कछु गढ सिरताजके। तोरादार सकल तिहारे मनसबदार, डाँडे जिनके सुभाय जगदे मजाजके॥ भूषन भनत पातसाहिको यौं लोग सब, बचन सिखावत सलाहकी इलाजके। डावरेकी बुद्धि ह्वै के बावरे न कीजै वैरु, रावरेके वैरहोत काज सिवराजके॥११८॥

(गुणेन गुणो यथा—दोहा)

नृप सभानमैं आपनी, होंन बडाई काज ॥
साहितनै सिवराजके, करत कवित कविराज ॥११९॥

(दोषेण दोषो यथा—दोहा)

सिव सरजाके बैरको, यह फल आलमगीर ॥
छूटे तेरे गढ सबै, कूटेगए उजीर ॥ १२० ॥

(अवज्ञा—दोहा.)

औरेके गुन दोष तें, औरेके गुनदोष ॥
जहाँ अवज्ञा ताहि सों, कहत सुकवि मतिपोष॥८०॥

(उदाहरण—सवैया)

औरनिके अनगाढे कहा अरु, बाढे कहा नहि होत चहा है ।
औरनिके अनरीझे कहा अरु, रीझे कहा न मिठावत हा है ॥
भूषन श्रीसिवराजहि मागिए, एक महीपर दानि महा है ।
माँगन औरनिके दरबार, गए तौ कहा न गए तौ कहा है ॥१२१॥

(अनुज्ञा—दोहा)

जहाँ सरस गुन देखि कै, करै दोपकी हौंस ॥
ताहि अनुज्ञा कहत है, भूषन कवि इहि रौस॥८१॥

(उदाहरण—कवित्त)

जाहिर जहाँन सुनि सुनि दानके बखान, महादानि साहितनै गरीबनिवाजके । भूषन जवाहिर जलूस जरबाफ जोति, देखि सिव सरजाकी सुकविसमाजके ॥ तपु करि करि कमलापतिसों मागतयों, लोग सब करि मनोरथ ऐसी साजके । बैपारी जहाजके न राजा भारी राजके, भिखारी हमै कीजै महाराज सिवराजके ॥ १२२ ॥

(लेश—दोहा)

जहँ बरनत गुन दोषकै, कहे दोष गुनरूप ॥
भूषन ताको लेस करि, गावत है कविभूप ॥८२॥

(उदाहरण—दोहा)

उदैभान राठवार गौ, धीरजु गढ धरि पैंड ॥
प्रगटे फल ताको छरा, परिगो सुरपुर पैंड ॥१२३॥
कोऊ बचत न सामु है, सरजासों रन माजि ॥
भलि कीनी पिय समरतें, जीन बचायो भाजि ॥१२४॥

(तद्गुण—दोहा.)

जहाँ आपनो रग तजि, गहै और को रग ॥
ताको तद्गुन कहत हैं, भूपन बुद्धि उतग ॥८३॥

(उदाहरण—कवित्त)

पपा मानसर आदि अगन तलाव लागे, जिनकी परनिमें अकथ्य जूथ गथके। भूपन यौं साज्यो राइगढ सिवराज रहै, देव चनि ताहिक बनाइ राजपथके ॥ निनजल अचलस्थान आसमान मेग्है, ऐतह विराम जहाँ इदु आ उडु थके। मण्डल उत्तग मनि जोतिनके सग आनि, कैयो रग चक्हा गहत रविरथके ॥१२५॥

(पूर्वरूप—दोहा)

प्रथमरूप मिटिजात जहा, फेरि वैसई होतु ॥
भूपन पूरबरूप सो, कहत ताहि कविगोतु ॥ ८४ ॥

(उदाहरण—सवैया)

ब्रह्मके आननतें निकसी, अतिमंजु पुनीत तिहूँपुर मानी।
राम जुधिष्ठिरके बरने, बल्मीकहुँ व्यासके सग सुहानी ॥
भूपन यों कलिके कविराजनि, राजनिके गुन पाप निसानी।
पुन्यचरित्र सिवा सरजें, नरन्हाइ पवित्र भई वर बानी ॥१२६॥
यों सिरको छहरावत छार है, जात उठै असमान बभूरे।
भूपन भूधरऊ धरकैं, जिनके धुनि धक्कनि यों बलरूरे ॥
ते सरजा सिवराज दिये, कविराजनिको गजराज गरूरे।
सुडनिसों पहिले जिन सोखिकै फेरि महामदसों नद पूरे ॥१२७॥

श्रीसरजा सलहेरिके जुद्ध, घने उमरावनिके घर घाले।
सुभ चगावत सेद पठान, कबधनि धावत भूधर हाले॥
भूषन यों सिवराजकी धाक, गये पियरे अरुने रगवाले।
लोहै कटे लपटे अति लोहु, भए मुह मीरनके पुनि काले॥१२८॥

यों कवि भूषन भाषतु है, यकतो पहिले कलिकालकि सैली।
तापर हिंदुनकी सब राह सु, औरगसाह करी अति मैली॥
साहितने सिवके डरसौ, तुरको गहि वारिधिकी दिसि पैली।
वेद पुराननकी चरचा, अरचा दुज देवकी पुनि फैली॥१२९॥

(अतद्गुण—दोहा)

जहँ सगतिमै औरको, गुन कछुवो नहिं लेत॥
ताहि अतद्गुण कहत हैं, भूषण सुकवि सुचेत॥८५॥

(उदाहरण—सवैया)

दीनदयाल दुनी प्रतिपालक, जे करता निरम्लेच्छ महीके।
भूषन भूधरि उद्धरियो, सुने और जिते गुनके सब जीके॥
या कलिमै अवतार लियो तउ, तेई सुभाव सिवाजि वलीके।
आइ धर्यो हरि ते नररूप पै, काज करै सिगरे हरिहीके॥१३०॥

(दोहा)

सिवसरजाकी जगतमे, राजति कीरति नौल॥
अरितियदृगअजन हरे, तऊ धौलकी धौल॥१३१॥

(कवित्त)

साहिनद सरजा सिवाके सामुख आइ, कोऊ वचिजाइ न गनीम भुजबलमैं। भूषन भनत भौसिलाकी दलदौर सुनि, धाकही मरत म्लेच्छ औरगके दलमै॥ रात्योदिन रोवनि रहति जवनी है सोगु, पर्योई रहतु दिल्ली आगरे सकलमै। कज्जलकलित असुवानिके उमग सग, दूनो होत रोज रग जमुनाके जलमैं॥ १३२॥

(मीलित—दोहा)

सदृस वस्तुमें मिलि जहाँ, होत न भेद लखाइ ॥
मीलित तासों कहत हैं, भूषन जे कबिराइ ॥८६॥

(उदाहरण—कवित्त)

इन्द्र निज हेरत फिरत गजइन्द्र अरु, इन्द्रको अनुज हेरै दुग्धनदीशको । भूषन भनत सुरसरिताको हंस हेरै, बिधि हेरै हंसको चकोर रजनीशको ॥ साहितनै सिवराज करनी करी है तैं जु, होत है अचंभो देव कोटियौ तैंतीसको । पावत न हेरे तेरे जसमें हेराने निज, गिरिको गिरीश हेरै गिरिजा गिरीशको ॥ १३३ ॥

(उन्मीलित—दोहा)

सदृस वस्तुमें मिलै पुनि, जानत कौनहु हेत ॥
उन्मीलित तासों कहत, भूषन सुकवि सुचेत ॥८७॥

(उदाहरण—दोहा)

सिवसरजा तुव सुजसमें, मिले धौल छबितूल ॥
बोल बासतें जानियतु, हंस चमेलीफूल ॥ १३४ ॥

(सामान्य—दोहा)

भिन्न रूप जहँ सदृसमैं, भेदु न जान्यो जाइ ॥
ताहि कहत सामान्य है, भूषन कबिसमुदाइ ॥८८॥

(उदाहरण—सवैया)

पावसकी इकराति भलीति, महाबली सिंह सिवा तमकेतैं ।
म्लेच्छ हजारनिही मरगे, दसही मरदाननिके धमकेतैं ॥
भूषन हालि उठे गढ़ भूमि, पठान कबंधनिके धमकेतैं ।
मीरनिके अवसान गए मिलि धोपनिसों चपला चमकेतैं ॥१३५॥

(विशेषक—दोहा.)

भिन्न रूप जहँ सदृशमें, लहिए कछुक विशेख ॥
ताहि विशेषक कहतहे, भूषन सुमति उलेख ॥८९॥

(उदाहरण—कवित्त)

अहमदनगरके थान किरवान लैकै, नवसेरीखानसों खुमान भिन्यो बलतें । प्यादेनसों प्यादे पखरेतनिसों पखरेत, बखतरवारे बखतरवारे हलतें ॥ भूषन भनत यों समान घमसान भयो, जान्यो ना परतु कोन आयो कौन दल तें । समनेप ताके तहाँ सरजा सिवाके बाँके, बीर जाने हाँकेदेत मीर जाने चलते ॥ १३६ ॥

(पिहित—दोहा)

परके मनकी जानि गति, ताकों देत जनाइ ॥
कछु क्रिया करि कहतहे, पिहित ताहि कबिराइ ॥९०॥

(उदाहरण—दोहा)

गैरिमिसिल ठाढे सिवा, अंतरजामी नाम ॥
प्रगट करी रिस साहिकों, सरजा करि न सलाम॥१३७॥
आनि मिल्यो अरि यों गह्यो, चखनि चकत्ता चाउ ॥
साहितनै सरजा सिवा, दियो मुच्छपर ताउ ॥ १३८ ॥

(प्रश्नोत्तर—दोहा)

कोऊ पूछै बात कछु, कोऊ उत्तर देत ॥
प्रश्नोत्तर तासों कहत, भूषन बुद्धिनिकेत ॥९१॥

(उदाहरण—सवैया)

लोगनिसों भनि भूषन यों कहै, खान खवास कहा सिख देही ।
आवत देखनिल्लेत सिवा, सरजे मिलिहो भिरहो कि भगेहो ॥
एदिल्की सभा बोलिउठी यों सलाह करो न करें भजिजैहो ।
लीन्हो कहा लरिकै अफजल, कहा लरिकै तुमहूँ अब ऐहो ॥१३९॥

(दोहा)

को दाता को नर बडो, को जगपालन हार ॥
कवि भूषन उत्तर दियो, सिवनृप हरिअवतार॥१४०॥

(व्याजोक्ति—दोहा)

आन हेतसौं आपनो, जहाँ छिपावत रूप ॥
व्याजउकति तासों कहत, भूषन सब कविभूप ॥ ९२ ॥

(उदाहरण—सवैया)

साहिनके उमराव जितेक, सिवा सरजा सब लूटिलए हैं।
भूषन ते बिनदौलत ह्वैकैं, फकीरव्है देस बिदेस गए हैं॥
लोग कहै तुहै दक्खिन जेयि, सिसोदिया रावरे हाल ठये हैं।
देत रिसाइके उत्तर यों, हमही दुनियाते उदास भए हैं॥ १४१ ॥

(दोहा)

सिवा बैर औरगजबदा, लगीरहै नित आहि ॥
कवि भूषन बूझे सदा, कहै देत दुख साहि ॥१४२॥

(लोकोक्ति और छेकोक्ति—दोहा)

कहनावति जो लोककी, लोकउकति सो जाँनि ॥
जहाँ कहत उपमानहै, छेकउकति सो माँनि ॥९३॥

(लोकोक्ति उदाहरण—दोहा)

सिव सरजाकी सुधि करी, भली न कीनी पीव ॥
सूबाव्है दक्खिन चले, धरेंजात कहँ जीव ॥ १४३ ॥

(छेकोक्ति उदाहरण—दोहा)

जे सुहात सिवराजकों, वे कवित्त रसमूल ॥
जे परमेसुरकों चढ़ैं, तेई आछे फूल ॥ १४४ ॥

(वक्रोक्ति—दोहा)

जहँ श्लेषकै काकुसौं, अरथ लगावे और ॥
बक्रउकति तासों कहत, भूषन कवि सिरमौर ॥९४॥

(उदाहरण—कवित्त)

साहितने तेरे बैरु बैरिनको कौतुकसों, बूझत फिरत कहौ कोह रहे तचिहौ। सरजाके डर हम आए इतै भाजि तौ व, सिंघ सोइ एहि याही ठौरतें उकचिहौ॥ भूषन भनत वे कहैंकै हम सिव कहै, तुम चतुराईसों कहत बात रचि हौ। सिव जापै रुठ्यो तौ निपट कठिनाई तुम, बेर त्रिपुरारिके त्रिलोकमे न बचिहौ॥१४५॥

(दोहा)

करि मुहीम आए कहे, हजरति मनसब दैन॥
सिवसरजा सौं जग जुरि, ऐरै बचिकै है न॥१४६॥

(स्वभावोक्ति—दोहा)

साँचो त्योंही बरनियै, जैसो जातिसुभाव॥
ताहि सुभावोकति कहै, भूषन जे कविराव॥९५॥

(उदाहरण—कवित्त)

दानसमै द्विज देखि मेरहू कुबेरहूकी, संपत्ति लुटाइवेको हियो ललकतुहै। साहिके सपूत सिव साहिके बदनपर, सिवकी कथानिमै सनेह झलकतुहै॥ भूपन जहाँन हिंदवानिके उबारिवेको, तुरकानि मारिवेको वीर वलकतुहे। साहिनसों लरिवेकी चरचा चलति आनि, सरजाके दगनि उछाह छलकतुहै॥ १४७॥

काहूके कहे सुनेतै जाहीओर चाहे ताही, ओर इकटक घरी चारिक चहततहै। भूपन भनत कहैतें कहत बात, कहेते पियत खात ऊँची साँसनि लहतहै॥ पौढेहै तौ पौढे बैठे बैठे खरे खरे हम, कोहै कहा करत यों ग्यान न गहतहै। साहिके सपूत सिव साहि तेरे बैर ऐसे, साहि सब रात्योदिन सोचतु रहतहै॥ १४८॥

(भाविक—दोहा)

भयो होनहारो अरथ, बरनत जहँ परतच्छ॥
ताकौं भाविक कहत हैं, भूषनकवि मतिस्वच्छ॥९६॥

(उदाहरण—कवित्त)

शजौं भूतनाथ मुण्डमाल लेत हरखत, भूतनि अहार लेत अजहूँ उछाह हैं । भूषन भनत अजौं काटे करवालनिके, कारे कुंजरनि परी कठिन कराह है ॥ सिंघ सिवराज सलहेरके समीप ऐसो, कीन्हो कतलाँम दिल्लीदलको सिपाह है । नदी रनमंडल रुहेलनि रुधिर अजौं, शजौं रविमंडल रुहेलनिकी राह हैं ॥ १४९ ॥

गजघटा उमड़े महाघनघटासी घोर, भूतल सकल मदजलसों पटतुहै । भूषन बढ़त भौंसिलाभुवालकों यों तेज, जेतो सब बारहो तरनिमें बढ़तुहै ॥ वेला छाडि उछलत सातौ नीरनिधि मन, मुदित महेसभौज नाँचतु रहतहैं । सिवाजी सुजान दल दौरत जहाँन पर, आनि तुरकानि पर प्रलै प्रगटतुहै ॥ १५० ॥

(भाविकछवि—दोहा)

जहँ दूरस्थित वस्तु को, देखत बरनत कोइ ॥
भूषन भूषनराज यह, भाविकछवि सो होइ ॥९७॥

(उदाहरण—सवैया)

सूबनि साजि पठावत हो, निज फौज लखै मरहट्ठनि केरी ।
औरंग आपनि दुग्ग जमाति, विलोकत तेरेहि फौज दरेरी ॥
साहितनै सिव साहि भई, भनै भूषन यों तुव धाँक घनेरी ।
रातिहुँ द्यौस दिलीसनकें तुव, सेननि सूरति सूरति घेरी ॥ १५१ ॥

(उदात्त—दोहा)

अति सपति बरनत जहाँ, तासों कहत उदात ॥
कै आनै सु लखाइये, बड़ी आनकी बात ॥९८॥

(उदाहरण—कवित्त)

द्वारनि मतंग दीसैं आगने तुरंग हींसैं, बन्दीजन बारन असीसैं जसरतहैं । भूषन बखानै जरबाफके सम्याने ताने, झालरिन

मोतिनके गुढ झुलरतहैं ॥ महाराज सिवाके निवाजे कविराज ऐसे, साजिके समाज जिहि ठोर विहरतहैं । लालकरै प्रात तहाँ नीलमनि करैं राति, इहिभाँति सरजाकी चरचा करतहैं ॥ १९२ ॥

(दोहा)

या पूनामैं मति टिकौ, खानबहादुर आइ ॥
ह्याँई साइस्तखानकौं, दीनी सिवा सजाइ ॥१९३॥

(अत्युक्ति—दोहा)

जहाँ सूरतादिकनकी, अति अधिकाई होइ ॥
ताहि कहत अतिउक्ति हैं, भूषन जे कविलोइ ॥१९४॥

(उदाहरण—कवित्त)

साहितनै सिवराज ऐसे देत गजराज, जिन्हैं पाइ होत कविराज वेफिकिरि है । झूमति झलझलानि झूलै जरवाफिनकी, जकरे जंजीर जोर करत किरिरि है ॥ भूषन भवर भननाँत घननाँत घट, पग झननाँत मनो घनरहे घिरि है । जिनकी गरज सुनि दिग्गज वेआब होत, मदहीके आब गरकाब होत गिरि है ॥ १९४ ॥ आजु यहि समै महाराज सिवराज तुही, जगदेव जनक जजाति अबीरीकसो । भूषन भनत तेरे दान जलनिधि मैं, गुनिनको दारिद गयो बहि खरीकसो ॥ चदकर किंजलक चाँदनी पराग उडु, वृंद मकरंद बुंद पुंजके सरीकसो । कुंदसम कयलास नाकगंगनाल तेरे, जस पुंडरीकको अकास चचरीकसो ॥ १९५ ॥

(दोहा)

महाराज सिवराजके, जेते सहज सुभाइ ॥
औरनिको अतिउक्तिसे, भूषन कहत बनाइ ॥ १९६ ॥

(निरुक्ति—दोहा)

नामनिकों निज बुद्धिसों, कहियै बात बनाइ ॥
तासों कहत निरुक्ति है, भूषन जे कविराइ ॥ १०० ॥

(उदाहरण--दोहा.)

कविगनको दारिददुरद, याही दल्यौ अमान ॥
याते श्रीसिवराजको, सरजा कहत जहाँन ॥१९७॥

(हेतु--दोहा)

या निमित्त यहई भयो, यौं जहाँ वर्नन होइ ॥
भूषन हेतु बखानहीं, सकल सयाने लोइ ॥१०१॥

(उदाहरण--कवित्त)

दारुन दैयत हिरनाकुस बिदारिबेकौं, भयो नरसिंह रूप तेजु बिकरारहै । भूषन भनत त्योंही रावनके मारिबेकौं, रामचंद्र भयो रघुकुलसिरदारहै ॥ कंसके कुटिल बलवसनि बिदरिबेकौं, भयो जदुराइ वसुदेवको कुमारहै । पृथ्वीपुरुहूत साहिकें सपूत सिवराज, म्लेछनिके मारिबेको तेरो अवतारहै ॥ १९८ ॥

(अनुमान--दोहा)

जहाँ काज तें हेतु कै, जहाँ हेतु तें काज ॥
जानि परत अनुमान सो, कहि भूषनकविराज॥ १०२ ॥

(उदाहरण--कवित्त)

चित्त अनचैन आँसू उमगत नैन देखि, बीबी कहैं बैन मियाँ कहियतु काहिनै । भूषन भनत बूझे आए दरबार ते, कंपत बार-बार क्यों सम्हारत न माहिनैं ॥ सीनो धकधकतु पसीनो आयो देह सब, हीनो भयो रूप न चितौत बाँयें दाहिनै । सिवाजूकी संक मान गएहौ सुखाइ तुम्हें, जानियतु दक्खिनको सूबा कन्यो साहिनैं॥१९९॥

(छेक और लाटानुप्रास--दोहा)

स्वरसमेत अक्षरकि पद, आवत सदृस प्रकास ॥
भिन्न अभिन्ननि पदनि कहि, छेक लाटअनुप्रास ॥१०३॥

(छेक यथा—अमृतध्वनि.)

दिल्लिय दलनि गजाइ करि, सिव सरजा निरसंक।
लुट्टिलियो सूरति सहर, बंकक्करि अति डंक ॥
बंकक्करि अति, डंकक्करि, असंसकक्कुलि खल।
सोच्चचकित, भरोच्चचलिय, विमोच्चच्चखजल ॥
तट्टट्टइमन, कट्टट्टिकसोइ, रट्टट्टिल्लिय।
सद्दद्दिसिदिसि, भद्ददविभइ, रद्दद्दिल्लिय १६०

गत बलखान दलेल हुव, खानबहादुर मुद्ध।
सिव सरजा सलहेरि ढिग, कुद्धद्धरि किय जुद्ध॥
कुद्धद्धरि किय, जुद्धद्धरि अरि, अद्धद्धरि करि।
मुंडट्टरि तहँ, रुंडड्डुकरत, डुंडड्डुगभरि ॥
खेदिद्दयवर, छेदिद्दयकरि, मेदद्दधि दल।
जंगग्गतिसुनि, रंगग्गलि, अवरंगग्गतबल १६१

लिय धरि मुहकमसिंह कहँ, अरु किसोर नृप कुम्भ।
सिवसरजा संग्राम किय, भुम्मम्मधि करि धुम्म ॥
भुम्मम्मधि करि, धुम्मम्मडि रिपु, जुम्मम्मलि करि।
जंगग्गरजिउ, तंगग्गरव, मतंगग्गन हरि ॥
लक्खक्खन रन, दक्खक्खलनिभ, लक्खक्खित भरि।
मोल्लल्लहि जसु, नोल्लल्लरि, बहलोल्लल्लिय धरि ॥१६२॥

लिय जित दिल्लीको मुलुक, सिवसरजा जुरि जंग।
भनि भूषन भूपति भजे, भंगग्गरब तिलंग ॥
भंगग्गरब, तिलंगग्गयउ, कलिंगग्गलि अति।
दुदिद्दवि दुहु, ददद्दलनि, निलदद्दहसंति ॥ लच्छ
च्छिन करि, म्लेच्छच्छय किय, स्वच्छच्छवि छिति।
ढाल्लड्डगि, नरपाल्लड्डरि, पराल्लड्डियजिति॥ १६३॥

(उदाहरण—कवित्त)

ऐसे बाजिराज देत महाराज सिवराज, भूपन जे बाजकी समाजै निदरतु है । पौन पाँइ हीनदृग घूँघटमैं लीन मीन, जलमैं निलीन क्यों वरावरी करतु है ॥ सबतें चलाक चित तेऊ कुलि आलमके, रहै ऊर अतर ते धीर ना धरतु हैं । जिन चढि आगेंको चलायतु तीर तीर, एक भरि तऊ तीर पीछे ही परतु है ॥ १७१ ॥

(ग्रथसूची—छद)

उपमा अनन्वय कहि वहुरि, उपमाप्रतीप प्रतीप ॥
बरनत सु उपमेयोपमा, मालोपमा कवि दीप॥ १ ॥
ललितोपमा रूपक वहुरि, परिनाम पुनि उल्लेख ॥
स्मृति भ्राति अरु सदेह कह, अपन्हुति पुनि सुभवेष॥२॥
हेतूअपन्हुति वहुरि सुनि, पर्जस्तपन्हुति मानि ॥
भ्रातपूर्वअपन्हुत्यौं, छेकाअपन्हुति जानि ॥ ३ ॥
कैतवअपन्हुति अरु सुनौ, उत्प्रेक्षा सुखखानि ॥
रूपकातिसयोक्ति, भेदकअतिसयोक्ति बखानि ॥ ४ ॥
अक्रमातिसयोक्ति, चचलअतिसयोक्ति सु लेप ॥
अत्यतअतिसैंउक्ति पुनि, पढिये समान्यविशेष ॥ ५ ॥
कहि तुल्य दीपकवृत्त, प्रतिवस्तूपमा दृष्टात ॥
सु निदर्सना व्यतिरेक पुनि, सहउक्ति बरनत सत ॥६॥
बीनोक्ति भूपन समासोक्ति, सु परिकरौ अद्भुत ॥
परिकरसुअकुर श्लेप त्यो, अप्रस्तुतोंपरसस ॥ ७ ॥
परजाउकत्ति गनाइये, व्याजस्तुती आक्षेप ॥
कहिये निरोध विरोधभास, विभावना सुखलेप ॥८॥
सु विसेसोक्ति असभवो, बहुर्‍यों असगति लेखि ॥
पुनि विषम सम सु विचित्र प्रहसन,औ विषादन पेखि॥९॥
कहि अधिक अन्योन्या बिसे(ष), व्याघा(त) परस्परचारु॥
अरु गुफ एकावली मालादीपक हिं पुनि सारु॥१०॥

सुनि जथासंख्य बखानिये, पर्जाय पुनि परिवृत्ति ॥
परिसंख्य कहत विकल्प है, जिनकैं सुमति सपत्ति ॥११॥
बहुर्यो समाधि समुच्चयो, अरु प्रत्यनीक बखानि ॥
पुनि कहत अर्थापत्ति कविजन, काव्यलिंग सुजानि॥१२॥
अरु अर्थअंतरन्यास भूपन, प्रौढउक्ति गनाइ ॥
सभावना मिथ्याध्यवसिति, पुनि उल्लास हि गाइ ॥१३॥
अवज्ञा अनुज्ञा लेस तद्गुन, पूर्वरूप उरेखि ॥
अनगुन अतद्गुन मिलित, उन्मीलित हिपुनि बुध लेखि १४
सामान्य और विशेष पिहितो, प्रश्नउत्तर जानि ॥
पुनि व्याजउक्ति रु लोकउक्ति, सु छेकउक्ति बखानि १५
वक्रोक्ति और सभावउक्ति, सु भाविको निरधारि ॥
भाविकरुछवि सु उदात कहि, अत्युक्ति बहुरि विचारि १६
बरने निरुक्ति र हेतु, अनुमानौ सु छेकनुप्रास ॥
भूपन अनत पुनि जमक गनि, पुनरुक्तवदआभास॥१७॥
इमि चित्र सकर एकसै, भूपन कहे अरु पाच (१०५) ॥
सुनत बाँचत ग्रथजिनकों, मानि सुकविवर साँच ॥१८॥

(ग्रथरचनाकाल—दोहा)

सम सत्रहसै तीस (१७३०) पर, सुचि वदि तेरस भान ॥
भूपन सिवभूपन कियो पढियो सुनो सुजान ॥ १ ॥

(उपसहार—कवित्त)

एक प्रभु ताको धाँम सजे तीयो बेद काम, रहै पचानन षडानन-राजी सर्वदा । सातौ बार आठो जाम जाचक निवाजे नव–, अवतार थिर राजे कृपान त्यो हरिगदा । सिवराजभूपन अटल रहै तौलौ जौलौ, त्रिदस भुवन सब गग औ नरमदा । साहितनै साहसिक भौ-सिला सूरजबश दाशरथिराज तौलौ सरजा थिर सदा ॥ १ ॥

इति श्रीभूपणकविकृत शिवराजभूपण समास

त्रिविक्रमकविकृत

नवीन

शिवराजदृष्टिपंचक.

(कवित्त.)

महा महाराष्ट्रराज्य, रामराज्य थापनमें । जाहिर जगत जाहि, भूमि-कासी सार्वीहै ॥ जोमभरी म्लिछानाद,—आह्रत उथ्यपनमें । नायक गुजर शक्ति, निजुरी छटासीहै ॥ रणभूमि राजकमलाके, थिरमेलियकों । राजरीति गति जामें, खेलन पटावहै ॥ भूषन गिराकी, भूषनीय अरचाकी हिंद । बीरमदछाकीआँखी, नजर सिवाकीहै ॥ १ ॥ आरज धरमतरु, सींचन घटासी दीसी । नासन जवासी, अनरगम तासीहै ॥ जामधि यतग, अफजल बहलोल आदि । यान अमीरनकों, दीपक शिखासीहै ॥ माँगे बिनु कविनकों, दारिद मिटाय आस । पूरें मनमाकी मनि-यत्पलनिशाकीहै ॥ भूषन गिराकी, भूषनीय अरचाकी हिंद । बीरमदछाकीआँखी, नजर सिवाकीहै ॥ २ ॥ समर समाज माँहि, गूरमरहट्ठनिके जलधि उछाह जोनि, चन्द्रचन्द्रिकासीहै ॥ मूक करे यवन, उलूक पातसाहनकों । अधररिवेमें कानि, रविममताकीहै ॥ सकल निपच्छकी दबावत स्यानभरी । अधिदेवतानि यह, दशहुँ दिसाकीहै ॥ भूषन गिराकी, भूषनीय अरचाकी हिंद । बीरमदछाकीआँखी, नजर सिवाकीहै ॥ ३ ॥ यवन दवागि दग्ध, रजपूत राजनकों । तुरत जिवावें जागे, शकति सुधाकीहै ॥ सूबा बादशाही पर, पच्छिमके हेतु पुनि । कातिल कहर, हालाहल धराकीहै ॥ युद्धकला अजब, गिराते मरहट्टनकों । सिरवें अनूप जामें, गतिप्रभुताकीहै ॥ भूषन गिराकी, भूषनीय अरचाकी हिंद । बीरमदछाकीआँखी, नजर सिवाकीहै ॥ ४ ॥ खेंचें मुगलाही देश, चारहुँ दिमानमेंते । दच्छिन तरफ लोर,—चुनक दशाकीहै ॥ कुसमकलीसमान, दिल्लीरम चूसेंलेत । गति बसे जामें देरो, मधुपकलाकीहै ॥ मुगल मलेच्छ, परपच्छिन बधू रहेत । विधवापनेकी दैन,—हारी दच्छिनाकीहै ॥ भूषन गिराकी, भूषनीय अरचाकी हिंद । बीरमदछाकीआँखी, नजर सिवाकीहै ॥ ५ ॥

॥ श्रीः ॥

यह विज्ञापन अवश्य वाँचिये

यदुवंशीयपुस्तकालय.

ठिकाना–भूलेश्वरबाजार, फिरगीके देवलका रस्ता, मुबई



अभिनव पुस्तकसग्रहाकांक्षी परमोदार पुरुष तथा भगवद्भक्तिमती मानवती महिलाप्रति विनयपूर्वक विदित हो कि, मैंने नीचे लिखेभये प्राचीन अपूर्व ऐतिहासिक और स्तुतिपर, ग्रथ देवनागरी सुदर टाईपके अक्षरोंसे मुद्रित कराय विक्रयार्थ प्रस्तुत किये ह आशा है कि इस दुर्गम कार्यको भोक्ता पुरुष और स्त्रीवर्गसे पुस्तकें खरीदकर उत्तेजना करनेसे योग्य सहाय मिलेगी आगे औरभी उत्तमोत्तम पुस्तक छापनेका काम जारी हे

(सस्कृत ग्रथावली)

घटखर्परकाव्य सटीक

यह अलकारग्रथ चक्रवर्ती विक्रमादित्यकी सभारत्नोंमेंके महाकवि घटखर्परकृत घटखर्परकाव्य, आधुनिक पडितरत्नशिरोमणि वेदातभट्टाचार्य भारतमार्तंड श्रीगट्टूलाल्जीकृत चद्रिकानामक टीकासमेत द्वितीय आवृत्ति छपकर तैयार है किंमत आने १० डा म १ आ (जिसमें टीकाकारका चित्र और सक्षिप्त चरित्र भी दिया है)

श्रीआनदरामायण

यह अपूर्वग्रथ आदिकवि वाल्मीकिमहर्षिप्रणीत शतकोटि रामायणान्तर्गतमेंका श्लोक सख्या १७००० का आजतक किसीको मालूम न था सो महत्प्रयाससे उपलब्धकर शुद्ध करवा सुदर कागजपर उत्तम बडे टाईपके ``` `ग्रीरूप छपवाकर प्रसिद्ध किया है इसमें भी८ प्रसिद्ध

रामायणोंसे श्रीरामचंद्रका अपूर्व चरित्रका वर्णन किया है इसका महत्त्व वाचनेहीसे मालूम होगा (इसमेंका विषय और रामायणोंमें न मिलेगा) कि० रु० १ टा० म० ८ आना

श्रीविठ्ठलपंचरत्न गुटका

यह श्रीभगवत्पंचरत्नगीता जैसा ग्रन्थ किसीको विदित न था सो प्राप्तकर उत्तमतासे छपाकर प्रसिद्ध किया है इसके नित्यनियममें पाठ करनेवाले ईश्वरपरायण सात्विक जन और स्त्रीवर्गको बहुत उपयुक्त होनेके वास्ते रेशमी और सादी बँधाइके ऐसे दो प्रकार कियेगये हैं जिसमें सादेकी किमत ४ आना, और रेशमीकी ६ आ० डा० म०)॥ आ और आ० १ है नीचे लिखी हुई अनुक्रमणिका बांचिये

१ श्रीविठ्ठलकवच, पद्मपुराणोक्त	४ श्रीविठ्ठलाष्टोत्तरनामशतक, पद्म०
२ श्रीविठ्ठलसहस्रनाम, ,,	५ श्रीविठ्ठलस्तवराज, स्कंदपुराणोक्त
३ श्रीविठ्ठलहृदय, भविष्योत्तरपुराणोक्त	

बृहत्स्तोत्ररत्नसागर भाग १ ला

इसमें मुख्य ११ आराध्यदेवताओंके पंचरत्नोंका शोधनपूर्वक समावेश करनेमें आया है पुस्तक सुंदर कागजपर उत्तमटाईपके अक्षरोंसे छपवाकर तैयार किया है इसकी बँधाई वगैरकी उत्कृष्टता केवल अवलोकनसेही मालूम होगी ईश्वरपरायण गृहस्थ और ब्राह्मणवर्गको सुलभ पडनेके वास्ते कि० रु० २। डा० म० आ० ॥ (ईश्वरस्तुतिपर ऐसा एकत्र रत्नोंका एकभी ग्रंथ आजतक नहीं छपा उदाहरणार्थ नीचे दी हुई अनुक्रमणिका बांचिये इसमेंका कोई पंचरत्न न्यारा नहीं मिलेगा।

१ श्रीगायत्रीपंचरत्न	२ श्रीगणपतिपंचरत्न	३ श्रीमहाविष्णुपंचरत्न
१ गायत्रीरहस्य	१ गणेशकवच	१ भगवद्गीता
२ गायत्रीकवच	२ गणेशस्तवराज	२ विष्णुसहस्रनाम
३ गायत्रीस्तवराज	३ गणेशहृदय	३ भीष्मस्तवराज
४ गायत्रीहृदय	४ गणेशसहस्रनाम	४ अनुस्मृति
५ गायत्रीसहस्रनाम	५ गणेशगीता	५ गजेन्द्रमोक्ष

बृहत्स्तोत्रसरित्सागर भाग २ रा

गोस्वामिवर्य श्रीदेवकीनंदनाचार्यजीके असल फोटोग्राफके चित्रसमेत, और पांच गोस्वामि बालकोंकी सम्मतियुक्त अपूर्व ग्रंथ, जिसमें श्रीवल्लभाचार्यसंप्रदायके नित्य पाठ करनेके, शास्त्रार्थके, वादके, और धर्मशास्त्रके मिलकर २३७ अपूर्व ग्रंथोंका शोधनपूर्वक समावेश करनेमें आया है (ऐसा अपूर्व ग्रंथ आजतक नहीं छपा) किं० ८ रु० डा० म० ०।० (स्थलसंकोचसे अनुक्रमणिका नहीं लिखी)

कृष्णाभिसारनामक काव्य सटीक तथा सटिप्पण

श्रीबालमुकुंदस्तोत्र

यह ग्रंथ भारतमार्तंड श्रीमद्वेदांतभट्टाचार्य प्रसिद्ध पंडित श्रीगट्टूलालजीने श्रीकृष्णपरमात्माका अभिसारिका नायकाके भेदसे श्रीमहाराणी राधिका-

जीको छल करनेके विषयमें अत्युत्तम काव्यरूपमें बनाया और अपने से व्यसरूप श्रीगारमुकुन्दजीकी प्रार्थनाका अष्टक भी साथ दिया है जिसकी टीका उक्त पंडितजीके परमप्रिय शिष्य शीघ्रकवि शास्त्री नंदकिशोर रमेशभट्टजीनें बनाई है किंमत रु । डाक महसूल)/-

पुष्टिमार्गीय नित्यपाठके ३३ ग्रंथ व्याससूत्रनसहित

इस पुस्तकमेंके ३२ ग्रंथ प्रसिद्ध पंडित श्रीगट्टूलालजीनें स्वमार्गीय अनेक ग्रंथापरसे शुद्धतापूर्वक उपजाय प्रसिद्ध किये थे, वो वैष्णवोंको अतिप्रिय लगनेसे सूक्ष्माक्षरमें सदा संग रखनेकेवास्ते मुख्य प्रमाणरूप श्रीवेदव्यास प्रणीत व्याससूत्रोंसहित ३३ ग्रंथ छपवाकर प्रसिद्ध किये हैं न्यो. रु ०। डा म –)

निर्भयरामभट्टकृतआशौचनिर्णय (सूतकनिर्णय)

यह प्राचीन ग्रंथ अनेक धर्मशास्त्रोंके आधारसे अति उत्तम बनाया सो उपलब्ध कर **व्रजभाषा** तथा **गुजरातीभाषामें** टीका करवा **मूल सहित** छपवाकर प्रसिद्ध किया है कि० रु ०॥ तथा डा० आना)≈ है,

(भाषा ग्रंथावली)

श्रीभ्रान्तिवारणदर्पण

इस ग्रन्थमें स्वामि श्रीदयानंदसरस्वतीजीके मतका खंडन कियागया है भाषा हिन्दुस्थानी, और संस्कृत दृष्टान्तोंके साथ पुस्तकरूपमें छपाई कपडेकी जिल्द बँधामया किंमत रु १ डा म २ आने

शिवराजबावनी और छत्रसालदशक

यह वीररसप्रधान ग्रंथ महाकविराज भूषणने हिन्दुस्थानी भाषामें हिंदुधर्मरक्षक महाप्रतापी शिवाजीमहाराज छत्रपति सितारेगढवालेकी दिल्हीकी चढाईके शूरत्वके वर्णनका अपूर्व रचाथा, सो बडे परिश्रमसे उपलब्धकर कविराजके इतिहाससमेत उसीभाषामें उत्तम कागजपर बडे टाईपमें छपवाया है किंमत आ ६ डा म २ आ

श्रीवल्लभाचार्यजीकी विविधविषयालंकृत गद्यपद्यात्मक आजतक न लिखी न छपी ऐसी चौराशी वैष्णवोंकी वार्ता शुद्ध व्रजभाषामें

सुंदर कागज, बडे टाइप, मजबूत जिल्दमें ६०० पत्रा जिसमें मंगला-चरणाष्टक, सिद्धान्तरहस्य और पृथ्वीप्रदक्षिणागर्भित ९१ प्रसंगकी 'निजवार्ता' शिक्षाश्लोक और श्री आचार्यजी तथा श्री गुसांईजीकी संस्कृत प्राकृत जन्मपत्रिका सहित १२ 'घरुवार्ता' श्री आचार्यजीके वनयात्रा-गर्भित 'चौराशी बैठकनके चरित्र' श्रीनाथजीकी जन्मपत्रिका पूर्वक 'चौराशी वैष्णवनकी वार्ता' और अष्टसखामेंके 'चारि सखानकी वार्ता' गानेके १०६ पदोंसे अलंकृत एकही पुस्तकमें छपके तैयार है जिसकी किंमत रु० ५। तथा टपालमहसूल वैल्यूपेबल समेत रु० ०॥ ज्यादह पडेगे

व्रजभाषा भ्रमरगीत

प्रसिद्ध महासाधु श्रीतुलसीदासजीके भाई श्रीनंददासजीका श्रीमद्भागवत दशमस्कंधमेंके भ्रमरगीतका व्रजभाषामें कियाहुआ पद्यरूप उल्था पदच्छेदयुक्त उत्तम बडे टाईपके अक्षरोंमे छपकर तैयार है किंमत आ ३ डा म ०॥ आ (इस प्रथम गोपीयोंको उद्धवका किया-भया निराकार ब्रह्मका उपदेश है)

किसनबावनी कवि कृष्णदासविरचित

यह पद्यबद्ध विविधबोधपर वाक्यनके मौक्तिककी मालारूप ग्रथित शान्त और करुणारसप्रधान ग्रंथ सुंदरकागजपर बडे टाईपके अक्षरोंसे छपवाकर प्रसिद्ध किया है की० आने ४≈ डा० म० ॥ आना

शिवराजभूषण काव्य

यह काव्यरचनाका अपूर्वचमत्कारमय कविराज भूषणका रचाहुआ जिसके अलंकारोंके उदाहरणोंमें शिवाजीमहाराज छत्रपति सितारेगढवारेकी शूरताका अतिउत्तम वर्णन किया है इसग्रन्थका महत्व बाँचनेसेंही मालूम होगा भाया किं० रु० १ डा० म० १ आ०

श्रीतत्त्वज्ञानामृत प्राकृत [illegible] महाराष्ट्रभाषा.

[illegible], [illegible], हिन्दी, और [illegible] और [illegible] लिये [illegible] सुन्दर [illegible] सब [illegible] है. [illegible] किया है [illegible] ॥

गोपीगीत तिनभाषामें

श्रीमद्भागवतका [illegible] भाषा [illegible] और [illegible] भई महाराष्ट्र और गुजराती भाषा [illegible] टीका [illegible] तैयार किया है. की. आ. [illegible] ॥

रास तथा [illegible] निर्णय गुजराती टीकासमेत, कि. [illegible] पै.

[illegible] निर्णय गुजराती टीकासमेत कि [illegible] पै

[illegible] नाटक [illegible] कि. [illegible]

[illegible], [illegible] गुजराती कि. [illegible]

इत्यादि अनेक ग्रंथ हमारी पुस्तकालयद्वारा प्रकाशित और [illegible] प्रकाशित भी मिलेंगे.

ठिकाना—[illegible] रस्ता [illegible] "[illegible] पुस्तकालय" मुंबई

गोवर्धनदास लक्ष्मीदास

[illegible]

धन्यवादपत्र.



॥ श्रीगोवर्धनधरो विजयतेतराम् ॥

॥ श्रीजीआगे सुधि करनहें ॥

श्रीकृष्ण   श्रीविठ्ठलो जयति

स्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराज गोस्वामि महाराज **श्रीगोवर्धनलालजीणाम्** स्वकीयेषु परमवैष्णवेषु ठक्कर**गोवर्धनदास लक्ष्मीदास** सपरिवारेष्वाशिषः शमत्र तत्रास्तु सदा———सेव्य स्मर्तव्यश्च, अपरं च तुमारो विज्ञप्तिपत्र पहुंच्यो समाचार तुमारी भक्ति और अपने ग्रन्थनके प्रचारमें प्रयत्न पंचनदी **गट्टूलालजीके** मुखसु सुनके चित्त प्रसन्न होय है वैष्णवनको यह स्वधर्मही है विद्याद्वारा सम्प्रदायोत्तेजन ग्रन्थप्रचार इत्यादि कायनमें ओर ईहांके विषे भक्ति स्नेह प्रतिक्षण वर्धमान राखोगे कुशल पत्र लिखोगे मिति प्रथमआषाढ शुद्ध २ संवत् १९५० के

॥ आज्ञापत्रमिदम् ॥

गोस्वामि श्रीबालकृष्णलालजी, टीकेत श्रीकांकरोलीवारे गोस्वामि श्रीदेवकीनंदनाचार्यजी, टीकेत श्रीकामवनवारे गोस्वामि श्रीजीवनलालजी, टीकेत श्रीकाशीजीवारे गोस्वामि श्री जीवनलालजी, पोरबंदरवारे गोस्वामि श्रीविठ्ठलेशजी, पोरबंदरवारे गोस्वामिश्री घनश्यामलालजी, मुंबई वारे

इनके आशीसो यह सम्मति और आज्ञापत्र दीयोहे जो यदुवंशी भाटियाज्ञातीय श्रेष्ठ ठक्कर लक्ष्मीदासात्मज **गोवर्धनदासभाई** इने जो वर्तमानकालकों अनुसरके इराकृत हेवे प्राचीन ग्रन्थनको जीर्णोद्धार होयवेकेलीये अति परिश्रमसो पुरातन पुस्तक उपलब्धकर शुद्धकरवायके छपवाय प्रसिद्धकरवेको स्तुतिपात्र काम माथे उठायोहे वामेके इमे आजपर्यन्त मुद्रित कियेभये ग्रन्थ हमने अवलोकन कियेहे। सो अत्युत्तम सम्प्रदवस्तवक योग्यहें औरहु आग्रय मिलेसु उत्तमोत्तम ग्रन्थ जो नष्ट होवेजायहे उनको पुनरुज्जीवन इनके हस्तसो होयवेको संभवहे। यावातसों हम अत्यन्त प्रसन्न होय या उत्तमकार्यकों प्रशंसनीय और वर्णनीय जानि समस्त वैष्णव और इतर विद्वान लोगनिकों यह अनुमत करेहे जो या गृहस्थके सदुद्योगकों इनके छपवायेभये पुस्तक खरीद अवश्य आश्रय दनो उचित है। कारण कुलीन

पिताके गर्भश्रीमन्त पुत्रकों अ पावस्थामें विश्वासघाती लोगने स्वहितार्थ जाल्म फसाय लक्षावधि रुपैयानकी दोल्त डुबोय दीनी। तोहु इने शान्तगतिसू स्वधर्म दृढता राख सकटकों ईश्वरीतन्त्र मानके संतोषयुक्त आर्यधर्मकी रक्षाको सर्वोत्कृष्टोद्योग हाथम ली योहे। ताते इनकी धर्मम प्रवृत्ति पवित्रबुद्धि और धर्मकार्यमें दक्षता देख बहोत प्रसन तापूर्वक या ग्रहस्थकों धन्यवाद दे यह सम्मतियुक्त आज्ञापत्र दीयोहे किमधिक मिति शम्। संवत् १९४६—४८—जैष्ट, भाद्रपद आश्विन शु० सुवद तथा भावनगर

॥ सम्मतियुक्त आज्ञापत्र ॥

गोस्वामि श्रीगिरिधरात्मज श्रीबालकृष्णलालजी, टीकेत श्रीकाक रोलीवारे गोस्वामि श्रीगोविंदात्मज श्रीदेवकीनंदनाचार्यजी, टीकेत श्रीकामवनवारे गोस्वामि श्रीगिरिधरात्मज श्रीजीवनलालजी, टीकेत श्रीकाशीजीवारे गोस्वामि श्रीवल्लभात्मज श्रीजीवनेशाचार्यजी, श्रीपोरबंदरवारे गोस्वामि श्रीद्वारकानाथजीसुत श्रीविठ्ठलेशजी, श्रीपोरबंदरवारे गोस्वामि श्रीचिमनलालात्मज श्रीघनश्यामलाल, मुंबईवारे.

श्रीमद्वल्लभाचार्यसंप्रदायके समस्तज्ञातके वैष्णवनको हमारी एसी आज्ञा है जो आजकाल अपने संप्रदायके बोहोत प्राचीनग्रंथ लेखक दोष सों अशुद्ध भये कोईके जानवेम देखवेमें के वांचवेम भी आवे नहीं हैं तातें अपूर्व संस्कृत ग्रंथ नवों नष्ट होवे देखके बडे परिश्रमसों उपलब्धकर शास्त्रीनपे शुद्ध करवाय उत्तम का गदपे सुशोभित टाइपके अक्षरनसू सबमें श्रेष्ठ छापखानेम छपवाय प्रसिद्ध करवेको महा दुष्टकाम वैष्णवश्रेष्ठ लक्ष्मीदासके चिरंजीव **गोवर्धनदासभाई** प्राचीन ग्रंथप्रकाशकने धर्माभिमानसों माथे उठायो है वाम अवश्य नित्य पाठ करवेके, "आज्ञा धके, ओर निर्णयके मिल्के २३७ ग्रंथ एकही पुस्तकम प्रसिद्ध करे हैं" यह काय बोहोतही स्तुतिपात्र है कारन जो अशुद्धलिखेभये ग्रंथ बोहोतसे दामनसों फुटकर लेवेसु कल्पवृक्षनेसे एकही ग्रंथके संग्रहसो सबही गरज पुरी पडसके ना ग्रंथको नाम उने **"बृहत्स्तोत्रसरित्सागरको द्वितीयभाग"** एसो राख्यो है वो हमने तपास लगाके व्यवस्था बहोतही अच्छी करवेमें आइहे मेहेनत देखते इने राखीभई योग्य पर रु० ३ तीन पडु बडती नहीं है सुवडत बहार मगायवेवारका टपालखर्च न्यारो टीकहा है तातें जिन ग्रहस्थनकों लिखत बांचत न आवतो होय उनहुकू दूसरेनेपास बचवायके सुनवेकेलिये यह श्रीकृष्णमयग्रंथ अपने घर हृदय पवित्रकरवेतांई ओर देहके साधनके लिये अवश्य संग्रह राखनो एसे एकत्र स्तवसंग्रहको ग्रंथ आजदिन ताइम कोईने भी छपाय प्रसिद्ध कियो नहीं है तातें ऐसे उत्तम परिश्रमको फल प्रभु

या ग्रंथप्रकाशकको अवश्य देओ या ग्रंथको अवश्य सग्रह करवेको हम साचे प्रेम भावपूर्वक समस्त वैष्णवनको मलामन करें हैं आसु प्रसिद्धकरवेवारेकू उत्तेजन मिल अपर धर्मके नष्ट होते ग्रंथनको जीर्णोद्धार होय ओर अन्य हू अनेक ग्रंथ प्रसिद्ध करवेकी उमेद बढे या एहस्थके आडीसों आजताइभ जो जो प्राचीन ग्रंथ प्रसिद्ध करवेमें आये हैं सो सब उत्तम होयवेसु अवश्य सग्रह करवे लायक है ओर यापीछेंहू में अपनो येही प्रयत्न हमेशां सुरहा राखेंगे ओर इनके हाथसु उत्तमोत्तम ग्रंथ प्रसिद्ध हायगे एसी पूर्ण आशा है एसे सदुद्योगकरके आनदित होय या एहस्थको धन्यवादयुक्त यह सम्मतियुक्त आज्ञापत्र हमने दियो है सवत् १९४८ ज्येष्ठ, भाद्र० पद, आश्विन मुकाम भावनगर ओर मुबइ

॥ श्रीद्वारकेशो जयति ॥

॥ हमारे आशीर्वाद ॥

स्वस्ति श्रीमद्गोस्वामि महाराज श्रीबालकृष्णलालजी टीकेत श्रीकांकरोली वारे शर्मणो स्वकीयेषु श्री २ ठा० **गोवर्धनदास लक्ष्मीदास** सपरिवारेषु शुभाशिष शमिह तत्र स्तात् परं च तुमारो पत्र पोहोच्यो तुमने जो **चोरासीवैष्णवनकी वार्ता** की पुस्तके बाबत लिखी सो बारमकी पु १२ (एकहसन) यहां वेल्युपेएबल भेजदीनो हम रुपायदेंगे हम वो पुस्तक देखचूकेहैं तासु चित्त मी प्रसन्न बोहोत भयो है हम वाकु देखके ही मंगायवेको विचार कररहे हते इतनेम तुमारो पत्र आयो सो बोहोत आछी भइ एसे जन तब कोइ नयोग्रंथ तुम छपवाओ तो यहां सूचन० देते रहोगे तुम हमारे हो यहांके विषे भक्ति श्रद्धा राखतहो तातें अधीक राखोगे कुशलपत्र लिखोगे किमधिकमिति कार्तिक वदी १ सवत् १९५२ के

॥ श्रीवृजराज सहाय ॥

मुम्बईमें

भाटिया लक्ष्मीदासात्मज गोवर्धनदास श्रेष्ठ भगवदीको धन्यवाद है

इनका ससारमें जन्म लेना और थोडाही द्रव्य पाना जो दूसरोंके ज्यादेसुज्यादे है ओर सफल है क्युकि जिनने तन मन धनसें पुरा २ श्रम उठाकर पुष्टि भक्तिमार्गके पुराचीन ग्रंथ जो जीर्णोद्धारके लिये उत्तमोत्तम सर्वोपरि धर्म, अर्थ, काम, और मोक्षके देनेवाला मिलना अति दुर्लभ्य है सो २३७ ग्रंथ इकट्ठा फर्द १ पुस्तकमे बहुत शुद्ध छपवाय विख्यात किये सो दैवी जीवोंपर बडाही उपकार हुआहै ओर फेरभी मार्गके बडे २ नामी ग्रंथ बहोतसे छपवानेका मनोरथ है सोभी आशा है कि श्रीवल्लभवरकी कृपासें शीघ्र पूरा होगा इस उद्योगमें श्रीवल्लभकुलके बालकोंने (कि जिनके नाम आपने लिखे है) पूरी २ सहायता दीवी व देनी कही सो तो उनका प्राकट्य ही दैवी जीवोंके उद्धारार्थ होकर इस मार्गके धणीभी वेही

६ तथा पंडितमुकटमणि श्री गट्टूलालजीके पुरी मदद दिवी व दसें ६ श्र देने था लिखा सोभी बहु नहा उन्के सिद्धान्तपूर्णकी जाने पुरेस यही जानें। यह कि मार्गकी हानि हानि देख कर दृढ रहके लिये श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभुजनका आदेश इनके हृदय में रहता है जिससे मार्गका सिद्धांत व रहस्य और सब शाखाया दिकका अनुभव रहनेसे अन्य मार्गीयनवादी दिग्गजोंको ये निरुत्तर करते हैं कोई सामना नहीं कर सकता श्रीपरमात्मा आपको एसीही बुद्धिसे सुखी रखे जिससे मार्गकी दृढता व लोकोद्धारके लिये उद्योग प्रचलित रहे मिति वदाख सुदि ५ संवत १९४९

नथमलजी (माजीदासान राज जेसलमेर)

अबुदामल ता १७ जून १८८४

प्रिय महाशय

आपकी प्रकाशित बृहत्स्तोत्रसरित्सागर पुस्तक के प्रथम और द्वितीयभाग आपसे मंगाकर मैंने आद्योपान्त सरसरी निगाहसे देखे दोनोभाग धार्मिक जनोंके लिए परोपयोगी है पुस्तकोंका आकार कागज अक्षर और छपाई देखनेसेही मन अत्यंत प्रफुल्लित होजाताहै। इनके पढनेसे मुझे बहुत लाभ हुवा है और जो आनन्द अलभ्य स्तोत्र जो इनमें मुद्रित हैं पढकर एक विद्वान मनुष्यको होना संभव है वह सर्वथा अकथनीय है श्रीपरमेश्वर आपके इस परम प्रशंसनीय उत्साहकी सर्वदा वृद्धी करे शुभम्।

आपका जयाभिलाषी,
पुरोहित गोपिनाथशर्मा एम ए वकील
श्रीमन्महाराजा साहेब बहादुर वालीमे जयपूर मु० आबू

कार्तिक शु० ६ शनिवार सं० १९५१
सुदर्शन छापखाना श्रीनाथद्वारा

गोवर्धनदास लक्ष्मीदास अनेक आशीर्वाद

आपके उत्साहको देखके मैं अत्यंत आनंदको प्राप्त हुवा आपसरीखे सज्जनोंहित हम ब्राह्मणोंका धर्म इस कलियुगमें रहसकाहै सबसे दुर्लभ विद्याका मिलना वह आपके उद्योगसे हमको सुलभ हुवाहै घट २ व्यापी अंतर्यामी परमेश्वर आपको धनवान्, पुत्रवान्, कीर्तिवान् और सब पृथ्वीके सुखोंसहित अपनी भक्ति दे येही उस इश्वरसे मेरी प्रार्थना है—पुस्तकें उपरलिखे पतेसे व्हाल्यूपेबल कर भेजोगे साथमें सूचीपत्रभी भेजोगे

१ बृहत्स्तोत्रसरित्सागर भा१प्र १ २ लघुसिद्धांतकौमुदी टिप्पणसहीत

केशवलालजोशी

राणापूर झाबुवा से
नं० ७४३

सद्विद्यासुधाकर पाठशाला पुस्तकालय ता ३०।८।९३

रा ग गोवरधनदास लक्ष्मीदास बवइ

अपुर्वेपास जो जो आपुने प्राचीन ग्रंथ छपवायाद उसका व अपर ग्रथका क्याट लाद् होयगा सो शीघ्र भेजीये क्यों जो यह शालाम हमने आनदरामायण मगवाया है और अपर सब ग्रथ मगवानेकी परवानगी दरबारसे मिली है आपु बडे प्रशसनीय हो लोकोपयोगी परमोत्कृष्ट काय आपुने किया ह जिससे तारीखसे (क्याटलाद्) भेजाये व और हमारे लिये आपुका छपवाहुवा ग्रंथ निम्नलिखित बृहत्स्तोत्रसरित्सागर दोभाग एक २ प्रत विठ्ठल पचरत्न प्रत १ जीस्से सब ग्रथ मगवावनवों सुलभ होय किंबहुना इति शुभम् ॥ मिती भाद्रपद वद ३ बुधवारे स १९५०

पत्ता-शास्त्रीव्यकटेश्वर बडोदेकर मु० झाबुवा राणापुर एजन्टी भोपाल देश मालवा ठि० सरकारी गडीमे (डवा खजानची साहबके मकानम

श्रीयुत सकलगुणनिधान परोपकारैकतान रसिक यदुवशीय गोवर्धनदास लक्ष्मीदास समीपेषु मुबई

महाशय आपने भेजेहुवे आनदरामायण, भ्रातवारणदर्पण, श्रीविठ्ठलपचरत्न ये तीनों ग्रन्थ आन पहुचे पत्रभी आपका आया पत्रम जो विशेषणादि हमको लिखा है मे उसलायकका तो सवथा नहीहू आप सज्जन होनेसे सज्जनोका काम नमता है हम इसीलिये केवल आपका कृपापात्र हैं आनन्दरामायणादि ग्रथोका मूल्य रु ९ जो लगताहै वह हम् भेजदेवगे आपका उद्योग देखके मुझको बडाही हर्ष हो गया मुझको क्या परंच सारा दुनियाको होगा आपको कोटिश धन्यवाद देताहू

जो जो पुस्तक हमको अपेक्षित थे उन सर्वोका नाम इसीपत्रक पिछलैतर्फ लिख भेजा है उसेसे जो जो तयार है वह अभी भेजियेगा बाकीके तयार होनेपर भेज दिजियेगा इस्मे लिखेसे अतिरिक्तभी हम् मगावेगे

अपना क्षेम कुशलपूर्वक पत्र शीघ्र लिखियेगा किमधिकजलजनेगितेषु शुभमस्तु तारीख २३ डिसेंबर १८८९ ठि. काटमाडु इन्द्रचोक नेपाल

आ मि उदितप्रसाद (वाबु)

Dighapatiya Rajbati, Benares city 13-6-91

महाशय !

आपकी प्रेरित "शिवराजभूषण" एवं "शिवाबावनी" पायक बडे आह्ला

दित हुये है। आशा करते है कि येतना ऐतिहासिक ग्रंथ (अखर) छापाहै इसका मूल्य लिखकरके पूर्ववत् मत्ती करैंगे, उत्तर आनेसे पुस्तकभेजनेके लिये पत्रलिखेंगे। भगवान आपलोगोंकी उन्नति करे।

सत्यचरण शास्त्री।

विद्याविवेकगुणगामभी राज्यमाने। वेदान्तन्यायविदुषि परमर्षिनिष्ठे। शिष्टे सदा पठणपाठनदेशमार्गे। कुशेशयमे मम समादिशतस्तु हर्मौ ॥ सद्गुणयत्र भूयादिति किच श्रीमता भवता यानि मीरक्षानि पुस्तकानि मन्निकटे वन्त ते। लिखामाल्म् ता० १४-४-९३

सिंधुदेशमायादित पंडित ताराचन्द्रशर्मा

॥ श्रीनाथो जयतितराम् ॥

स्वस्ति श्रीमुंबाईकृतनिवासस्थानश्रीयुतभगवत्सेवापरायणान करणपरमकारुणिक स्वधर्मप्रकाशक वैष्णवाग्रगण्य श्री श्री ५ श्रीगोवर्धनदासजी श्रीलक्ष्मीदासजी योग्य० 'वडनगरसे' मुखियाजी श्रीकृष्णदासजीके पुत्र वल्लभदासविठ्ठलदासको भगवत्स्मरण पोहोंचे अपरंच वर्तमानके आपने या समयमें धर्मउद्धारार्थ कमर बांधी है सो सब वैष्णव आपको बडेही आशीर्वाद देंगे और अब हम आपसे विनति पूर्वक लिखेहे के हमको जो जो स्वमार्गीय ग्रंथ छपेहे तिनकी सूची तथा सम्बार्थके पत्र जोजो आपके यांहा छपेहे ओर हू छपेंगे तो इनकी मासिकसे माहित हमको सूचना होतीरहे तो हम हू इन ग्रंथको देखनेकी इच्छा करेंहे और हू नीचे लिखे प्रमाणे पुस्तक भेजोगे येआपकाही पुण्यात्मक यश है किंबहुनोक्तेन संवत् १९५० था० ह० ५ बुधवार

२ गोपीगीत तीनभाषामे समश्लोकी। १ स्वप्न तथा आयुष्यनिर्णय गुजरटीका। १ व्रजभाषाभ्रमरगीत नंददासजीकृत। १ बृहत्स्तोत्रसरित्सागरको द्वितीयभाग। ३ वल्लभाख्यान आखो नवाख्यान गुजराती मूलभाग १ दोलोत्सवनिर्णय

आपके दाम व्हेल्यूपेबल करके भेजेंगे ठिकानो—श्रीमदनमोहन लालके मंदिरमें मुखियाजी पाय मुकाम 'वडनगर' जिला उज्जेन मालवा

राची २० जुलई १८८४

महाशय

आपकी भेजीहुई एक प्रति शिवाबावनी और एक प्रति छत्रसालदशकी मिली अनेक धन्यवाद देताहू अब एक प्रति शिवराजभूषणभी कृपा करके भेज दीजिये। ये प्राचीन ग्रंथप्रकाश करनेके कारण आपको अनेक धन्यवाद देताहू और

इनमे मिलानेके लायक दो चार अच्छे कवित्त भूषण कविश्न मेरेपास भी हैं सो मैं भेज दूंगा पसंद हो सो छापियेगा । आपका सत्य हितेच्छु

पंडित भोलानाथ
मिशनस्कूल रांची (बंगाल)

स्वस्ति श्री गांव मुंबई नगरे शुभस्थाने तत्र मध्ये विराजमान श्रीगंगाजलवत् निर्मल पवित्रपावन परोपकारी षट्कर्मसंयुक्त अनेक सौम्यवान् त्रिकालदर्शी य दिश२विख्यात श्रीसर्वोपमालायक स रा गोवर्धनदास लक्ष्मीदास परम वैष्णव योग्य लिखतग आमदपुरसें भाटिया लालचंद की जयश्रीकृष्ण जानोंग उपरंत समाचार जानोंग जो आजकाल मुंबईमें छापखाना बहोत हैं परतु हमा आपके छापखानेके सुचीपत्र देखकर मनमेंबहोत, आनंद भयो पुस्तक तो हम श्रीवल्लभाचार्यविरचित ग्रंथ, अनेक मगावेंगे,और, अरहीं हमारा तुमारा मिलाप होयगा अब कृपा करके पुस्तक इतनी भेजो

१ बृहत्स्तोत्रसरित्सागरको द्वितीय भाग जिस्में २३७ ग्रंथ हैं वो

१ उत्सवोंकी टीप १ यमुनाष्टक १ १ कृष्णाश्रय

जिला बहावलपुर मुकाम आमदपुर ल्या स्टेशन सादिकाबाद सिंध डेन पास भाटिया लालचंदकों पत्र लिखि मिती वैशाख वदि शनि संवत् १९५०

स्वस्ति श्री ६ मरिजकुलकमलप्रकाशकमार्तण्डव्य मुमुक्षुप्रकाशकचन्द्र शास्त्राध्यय नाध्यापनतत्पर विद्वद्द्वारागण्यदीनजनशरण्य महाशय श्रीगोवर्धनदास श्रीलक्ष्मी दासजीके चरणयभिधर्म दासानुदास भवकाणारविन्ददर्शनोत्सुक भिखारीराम ठाकुरप्रसादका साष्टांग प्रणाम पहुचे आपके कृपासे यहा कुशल है आपके सदैव कुशल चाहिये अपरंच आपके पास हमारा पत्र इस निमित्त आताहै की, आपकी यहा बृहत्स्तोत्रसरित्सागरस्य द्वितीयभाग "श्रीवल्लभाचार्यसंप्रदायग्रंथ एक और आपके छापे खानेका सूचीपत्र १ कृपा करके भेजियेगा ज्यादा शुभ मि० भाद्रव वदी१२संवत१९५० आपका शुभचिंतक भिखारीराम ठाकुरप्रसाद गाजीपूर महाले वल्लभदासजी वेहुचीपर भेजियेगा ॥

श्रीयुत सकलगुणनिधान यदुवंशी गोवर्धनदास लक्ष्मीदास योग्य हैद्राबादस्थ सेठ भ्रमरमलस्य जयश्रीकृष्णवाच्या आपने बृहत्स्तोत्रसरित्सागरस्य द्वितीय भाग बहुत सुंदरतापूर्वक छापाहै स्तुतियोग्य है जिसिमें श्रीमद्वल्लभाचार्यके संप्रदायके ग्रंथ अवशेष मिलता है सो आपने बहुत परिश्रम कियाहै आपको धन्यवाद है अब कृपाकरके दाम लिखना मिति आषाढ शु० ८ रविवार सं १९५१

महाशय मेहेरबान गोवर्धनदास लक्ष्मीदास

हमको पुस्तक भेजे सो पोहोंचे रू० ५।=, दीठे आरपुस्तक देखके बोहोत प्रसन्न

दित हुये है। आशा करते है कि येतना ऐतिहासिक ग्रंथ (बखर) छापाहै, सबका मूल्य लिखकरके पूर्ववत् सुखी करेंगे, उत्तर आनेसे पुस्तकभेजनेके लिये पत्रलिखेंगे। भगवान आपलोगोंकी उन्नति करे।

सत्यचरण शास्त्री।

विद्याविवेकगुणनाममी राज्यमाने। वेदानुयायिविदुषि परभक्तिनिष्ठे। शिष्टे सदा पठणपाठणलेखनादौ। कृतोद्यमे मम सदाशिषस्तु तस्मै ॥ शमुमयत्र भूयादिति किंच श्रीमता भवता यानि यीदृशानि पुस्तकानि भवतिकटे वर्तन्ते। लिखनेनालम्

ता० १४–४–९३

सिंधुहेदावादित पंडित ताराचन्द्रशर्मा

॥ श्रीनाथो जयतितराम् ॥

स्वस्ति श्रीमुंबाइकृतनिवासस्थानश्रीयुतभगवत्सेवापरायणांत करणपरमकारुणिक सधर्मप्रकाशक वैष्णवाग्रगण्य श्रा श्री ५ श्रीगोवर्धनदासजी श्रीलक्ष्मीदासजी योग्य० 'वडनगरसे'मुखियाजी श्रीकृष्णदासजीके पुत्र वल्लभदासविट्ठलदासको भगवत्स्मरण पोहोंचे अपरंच वर्तमानके आपने या समयमें धर्मउद्धारार्थ कमर बांधी है सो सब वैष्णव आपको बडेही आशीर्वाद देंगे ओर अब हम आपसे विनतिपूर्वक लिखेहु के हमको जो जो सम्प्रदायीय ग्रंथ छपेहै तिनकी सूची तथा शास्त्रार्थके पत्र जोजो आपके यांहा छपेहं ओर हू छपेंगे तो इनकी मासिकवं मासिक हमको सूचना होतीरहे तो हम हू इन ग्रंथको देखनेकी इच्छा करेंहें ओर हू नीचे लिखे प्रमाणे पुस्तक भेजोगे येआपकाही पुण्यात्मक यश है लिंबहुनोकेन संवत् १९५०श्रा०ह० ५ बुधवार

२ गोपीगीत तीनभाषामे समश्लोकी। १ स्वप्न तथा आयुष्यनिर्णय गुर्जरटीका। १ व्रजभाषाभ्रमरगीत नंददासजीकृत। १ बृहत्स्तोत्रसरित्सागरको द्वितीयभाग। ३ वल्लभाख्यान आसो सव्याख्यान गुजराती मूलमात्र १ दोलोत्सवनिर्णय

आपके दाम व्हेल्यूपेवल करके भेजेंगे ठिकानो—श्रीमदनमोहन लालके मंदिरमें मुख्याजी पास मुकाम 'वडनगर' जिल्हा उज्जेन मालवा

राची २० जुलई १८८४

महाशय

आपकी भेजीहुई एक प्रति शिवावावनी और एक प्रति छत्रसालदशककाव्यकी मिली अनेक धन्यवाद देताहूं अब एक प्रति शिवराजभूषणभी कृपा करके भेज दीजिये। ये प्राचीन ग्रंथप्रकाश करनेके कारण आपको अनेक धन्यवाद देताहूं और

Sironj Dt Bhopal

भगवतरूप जै श्रीकृष्ण पालागनदास के प्रथम आपके तर्फसो १ पुस्तक रू० स्तो० २ भाग कि० ३।≈ मगाय हजारो धन्यवाद पुस्तक हातमें लेते आपको देतेहैं अब विनति है के चोरासी वैष्णवकी वार्ताकी पुस्तक जकी कि० ५॥ है तुरत वीरपा कर नीचे पतेपर रवाने करोगे वी पी मा

चुनीलाल मुथरालाल गुजराती मु० सिरोंज जिला भोपाल

I am very glad to state that Mr Goverdhandass Laxmidass has for the last few years employed his time and energy in publishing rare and useful works in the Hindi, Marathi and Sanskrit language I hope he continues his useful labours long and obtains public support that he deserves

M G DESHMUKH,
B Sc, B A M D, Justice of the Peace,
Fellow of the University and Syndic in the
Faculty of Arts, Bombay

Bombay, 18th September 1893

GOVERDHANDASS LUXMIDASS Esq
Bombay India

SMITHSONIAN INSTITUTION
UNITED STATES NATIONAL MUSEUM

S P LANGLEY Secretary G BROWN GOODE Assistant Secretary, in charge of U S National Museum

Washington, March 20, 1896

Dear Sir,

I have much pleasure in acknowledging with thanks, the receipt of the valuable work "Annand Ramayan" which you have been so good as to send to the National Museum, through the courtesy of Mr Balentine

Very respectfully yours
CYRUS ADLER, Librarian

SHAIKH MEMON STREET,
Bombay, 16th June, 1897

This is to certify that I have known shett Goverdhan

भया फेर श्रीदमयंतीनंदनजीको निय दरशन करी बात आनंद भयो श्रीठाकुरजी आपकी आयु वृद्धी करे हमेशा इसीरीत पुस्तक छपाया करो और हम आपकै चौरासी वैष्णवकी वार्ता गुजराती कापडवर जिन भा १ है सो पुस्तक और पदित महाराजकी वर्षोत्सवदीपिका गत १ गुडी करके भेजी इसोसिवाय पुस्तक दुसरा होव सो दिवको भला पैसा उपायका पुस्तकप्राय यताय दीजिये यह विनंति

द० आपका सेवक

कृष्णदास हीरजी क यथायोग्य बाचेंगे ता ५ एप्रील १८९८

साधवी मवाई शुभ शुभे माह श्रीगोवर्धनदासजी लक्ष्मीदासजी ओरण श्रीगामनगाम पु रामनारायण जोशीको भगवत्पुराण पं ।जो वागाद १ आपको काल रोज आयो सार्म पुस्तक १० श्री नाम भेजी था पुंगेढे पुस्तक हम दल परनी मंगाके दरशन करे विन भात आरदम हुवा धन्य आपको है सो आप हमलोगोंके ओउक उपर येगी कृपा कीनी आज्ञानीनक दरशन आपने कराये हम आपको बधाई वाहो-साद दीजिये आप जसी शोभा आप लिखतेथे जिसी मुजब पुस्तक तीयार हुवे है और हमने आपको पत्र तू दायो साने पुस्तकदी जलदी कीया तब आपका परिश्रम हुवा सो माफ करोग हमनो आपको यादर आये तापीछ जलदी आदे गीघापी पेठतो लीया नहीं था हमारा कसुर माफ करागे ओर कृपा राखो येसी सदा नवल राखोगा,

ओर आपन श्रीमुकुंदरायजीकी वाताको काम चालु कीया था जानी पुस्तक ५ को नाम हमरो दाखल करदीजा दाये चार दिनमें आपका द० भगदेयगे पुस्तक तीयार हूवस २० पुस्तक मंगायगा आप कोईभी पुस्तक पुष्टीमारगकी छपाओ ताकी खबर हमको दीया दीजो कृपापत्र दीजो संवत १९५२ का असाड शु १५ ओर सब भोन सुंदर हे बधाई काहातक लिखीये

स्वस्ति श्री गाँव मुंबईनगरे शुभस्थाने तत्रमध्ये विराजमान सकलगुणगणालंकृतेषु सर्वविद्वज्जनवृंदशिरोमणी सर्वोपमालायक परमवैष्णवेषु शिरोमणी दिशादिशाविख्यातेषु श्रेष्ठबुद्धिवान गोवर्धनदास लक्ष्मीदास वैष्णवयोग्य लिखत श्री अमरपूरलना से गुलाबमलपोपलि की जैश्रीकृष्ण वाचोगे अपरंच समाचार वाचो पुस्तक १ भाग २ जिसमें वसंतधमारहे सो पुस्तक १ हमको भेजदेना जरूर आपकानोश पुस्तक छोंगा आन ।०) जो होय सो भेजना फक्त मूल टिप २ सं १९५५ की भेजनी तुमके पुस्तक २ भेजने जरूर मु आमदपुर लवा ऐशन सादिकाबाद जि० बहावलपुर पास पोपलिगुलाबमलशीतलमल कोमिले

मिति फाग वदी ६ शनी संवत् १९५४

dass Luxmidass for the past fifteen years as a respectable and well-conducted Bhattia gentleman The success of his various publications of old and unknown Sanskrit Books is in a great measure due to his indefatigable and continued researches Mr Goverdhandass has thereby placed into a deep debt of obligations, the Hindu public in general and the Vaishnava sect in particular

I wish Mr Goverdhandass every success in future in his Career as a Publisher of antique Books and sincerely trust to see his labours early appreciated by the leaders of his sect so conspicuously known for their munificience in the cause of encouragement and spread of the doctrines of the holy '*Pushti Marga*"

HARISCHANDRA N TOOLAJI
Late Clerk
Police Commissioner's
Bombay

EXTRACT FROM THE ANNUAL REPORT ON NATIVE PUBLICATIONS FOR THE YEAR 1895

"RELIGION —*Brihatstotra Saritsagarasya Dvitiya bhagah* or a large collection of hymns, is a *handy conglomeration of 207 works* by the founder and succeeding spiritual heads of the *Vallabha sect of Vaishnavism* on the daily duties of the sect, precepts or directions of the religious law religious decisions, &c

---

विज्ञापन

ऊपर प्रकाशित धन्यवादपत्रोंकी भाषा यथामत रखीगई है, वास्ते पाठक महाशय कोई बातकी शंका न करें मैं पत्र प्रेरकोंके उपकार आजन्म तक नहीं भुलूंगा

आपका अनुचर
गोवर्धनदास लक्ष्मीदास